हिन्दुस्तानी-सीरीज़

# हिन्दुस्तानी
# गद्य-पद्य-संग्रह

# Selections
from
# HINDUSTANI
Prose & Poetry

EDITED & COMPILED BY
Sudarshan

Hindi Granth Ratnakar Karyalaya
Bombay 4.

# शुरूमें

यह कहनेकी अब ज़रूरत नहीं रही कि अगर हिन्दुस्तान उन्नतिके मैदानमें आगे बढ़ना और ऊपर चढ़ना चाहता है, तो उसे एक लोक-भाषा बनानी होगी।—ऐसी भाषा, जो सबके साँझेकी हो, जिसे मुँहमें लेकर हम कटकसे अटक और काश्मीरसे कुमारी तक आ-जा सकें, और जिसे बोलकर हम हिन्दुस्तानकी हर मंडीसे अपनी ज़रूरतका सौदा ख़रीद सकें। आज तक हम यह काम अँगरेज़ीसे लेते रहे हैं, अब हमें यह इज़्ज़तका आसन अपने देशकी ही किसी भाषाको देना होगा। हमारे नेताओंने सोच-विचारके बाद यह फ़ैसला कर दिया है कि हिन्दुस्तानकी लोक-भाषा हिन्दुस्तानी होनी चाहिए जो हिन्दुस्तानके बीचके हिस्सोंमें बोली जाती है, जिसे हिन्दुस्तानके ज़्यादासे ज़्यादा लोग समझ सकते हैं, और कमसे कम मेहनतसे सीख सकते हैं।

'हिन्दुस्तानी' नाम पुराना है, यह हर कोई मानता और जानता है। मगर हिन्दुस्तानी भाषाके बारेमें दो राएँ हैं। कुछ लोग कहते हैं, यह भाषा पुरानी है। कुछ लोग कहते हैं, यह चीज़ है ही कांग्रेस-युगकी पैदावार। मगर ध्यानसे देखा जाए, तो दोनों दल दुरुस्त और दोनों समूह सच्चे हैं। यह भाषा पुरानी भी है, नई भी है। पुरानी इसलिए, कि पुराने हिन्दुस्तानके लोग जो भाषा बोलते और लिखते थे वह कुछ इसी तरहकी होती थी; नई इसलिए, कि बीचके युगमें लोगोंने इससे परे हटना शुरू कर दिया था। हिन्दू पंडितोंने हिन्दुस्तानीमें संस्कृतके मोटे मोटे कठिन शब्द भर दिए और उसे 'आर्य-भाषा'

कहने लगे, मुसलमान मौलवियोंने उसकी पीठपर अरबी और फ़ारसीके मुश्किल लफ़्ज़ लाद दिए और उसे 'उर्दू-ए-मुअल्ला'के नामसे पुकारने लगे। यहाँ तक कि अगर उन्हें अपनी ज़रूरतका कोई शब्द अरबी और फ़ारसीमें न मिला, तो उन्होंने तुर्कीके द्वार तो खटखटा लिए, मगर अपनी पड़ोसिन हिन्दीकी तरफ़ आँख उठाकर भी न देखा। इसका फल यह हुआ कि अच्छी भली चलती चलाती हिन्दुस्तानीके दो टुकड़े हो गए, उन दोनोंके बीचमें जुदाईकी खाई खुद गई और इस खाईमें खट्टे दिलोंका दरिया बहने लगा।

अब इस खाईको हटाने और दरियाको सुखानेका एक ही रास्ता है कि मुसलमान भाई लिखते-बोलते समय अरबी-फ़ारसीके मोटे लफ्ज़ोंसे परहेज़ करें, हिन्दू लोग संस्कृतके कठिन शब्दोंसे बचें, और इस तरह हमारे लिए फिर एक ऐसी ज़बान तैयार हो जाए जिसे आम लोग आसानीसे बोल सकें, और जिसे समझनेके लिए घंटों अकुलाने-घबरानेकी ज़रूरत न पड़े।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि जब हिन्दुस्तानीका अदब या साहित्य तैयार है ही नहीं, तो फिर हम पढ़ें क्या? पहले साहित्य बनाओ, फिर देखा जाएगा। मगर यह उनकी भूल है। सहज हिन्दी और आसान उर्दूकी जितनी किताबें हैं, सब हिन्दुस्तानीकी किताबें हैं। ऐसी आसान किताबें कम नहीं हैं, बहुत ज़्यादा हैं। मगर इनसे भी ज़्यादा और काफ़ी ज़्यादा किताबें ऐसी हैं जिनमें अगर कहीं कहीं ज़रा ज़रा-सा हेर-फेर कर दिया जाए, और मुश्किल लफ्ज़ निकालकर आसान शब्द रख दिए जाएँ, तो ज़बान पानीकी तरह साफ़ हो जाए और सब कोई समझने लगें। और फिर इसमें किसीका कोई हर्ज़ नहीं, उलटा लाभ है। पढ़नेवालोंकी संख्या बढ़ेगी, और उनके विचारोंका प्रचार होगा। ऐसी किताबोंको हिन्दीके प्रकाशनालय और उर्दूके दारुल-अशाअतसे हिन्दुस्तानी किताब-घरमें लाते कितनी देर लगती है? अगर हम यत्नकी लाठी हाथमें लें, और हिम्मतकी कमर कस लें, तो मुश्किलोंका यह पहाड़ चार दिनोंमें ज़मीनके साथ लग जाए, और कठिनाइयोंका यह क़िला दो दिनमें फ़तह हो जाए।

इस किताबमें जो लेख और निबंध दिए गए हैं उनमेंसे श्रीबालकृष्ण भट्ट, आचार्य महावीरप्राद द्विवेदी, पं० जवाहरलाल नेहरू, मुंशी प्रेमचंद, डा० ज़ाकिर हुसैन, ब्रजमोहन वर्मा और सुदर्शनके लेख ऐसे हैं जिनमें ज़रा भी परिवर्तन नहीं किया गया है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, ख़्वाजा हसन निज़ामी और मौलवी मुहम्मद हुसैन

आज़ादके लेखोंमें जो तबदीली की गई है वह आटेमें नमकके बराबर है; इससे ज़्यादा नहीं। बाकी लेखोंमें लेखनी ज़रा ज़्यादा चली है, मगर ऐसी नहीं कि लेखोंकी हत्या हो जाए, या उनकी शान घट जाए। मैंने सिर्फ़ इतना किया है कि जो शब्द कठिन देखा उसे बदल दिया; चाहे वह शब्द अरबीका हो, चाहे फ़ारसीका, चाहे संस्कृतका। कविताएँ वैसीकी वैसी रहने दी गई हैं। उनमें कहीं कोई परिवर्तन नहीं किया गया। हाँ, इतना ज़रूर कर दिया है कि अगर कोइ बहुत ज़्यादा मुश्किल लाइन देखी, तो उसे बिलकुल काट दिया। मगर ऐसे अवसर बहुत ही कम आए हैं, और इसका पूरा पूरा ख़याल रखा गया है कि मज़मूनका तार या सिलसिला न टूटने पाए, न कविताकी खूबसूरती घायल हो।

इसके साथ ही मैंने हर लेख और कविताके बाद कठिन शब्दोंके अर्थ भी दे दिए हैं और कर्नाटक, आंध्र, मद्रास आदि प्रान्तोंके विद्यार्थियोंके लिए अँगरेज़ी शब्द भी रख दिए हैं ताकि उनके लिए पुस्तक ज़्यादासे ज़्यादा उपयोगी बन जाए और पढ़नेवालोंको कमसे कम तकलीफ़ हो। इस तरह यह एक ऐसी किताब तैयार हो गई है जिसे 'हिन्दुस्तानी किताब' कहा जा सकता है।

जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह अपने ढँगकी पहली और निराली पुस्तक है। कमसे कम मैंने ऐसी पुस्तक आज तक नहीं देखी। इसलिए, इसमें कमियाँ और त्रुटियाँ भी होंगीं। उनके लिए मैं माफ़ी नहीं माँगता। हाँ, जिन लेखकोंके लेखोंमें मैंने कहीं कहीं परिवर्तन करनेका साहस किया है, उनसे माफ़ी माँगना मेरा धर्म है। क्योंकि, हो सकता है, मुझसे कहीं कुछ अन्याय हो गया हो। यद्यपि मेरा इरादा अन्याय करनेका नहीं है, और न मैंने अपनी समझमें उनके साथ अन्याय किया ही है।

माहीम—बम्बई
२०-८-३९

सुदर्शन

# प्रकाशककी तरफ़से

जबसे कांग्रेस-सरकारोंने 'हिन्दुस्तानी' के प्रचारका बीड़ा उठाया है तबसे इस तरहकी किताबोंकी ज़रूरत ज़्यादा महसूस होने लगी है जो हिन्दुस्तानी न जाननेवाले विद्यार्थियोंके लिए हिन्दुस्तानी सीखनेमें मदद दे सकें। और इसी सिलसिलेमें अभी हाल ही हमने 'सहज हिन्दुस्तानी' ( पहली पुस्तक ) नामकी इसी तरहकी एक पुस्तक प्रकाशित की जिसे बम्बई-सरकारने पसन्द करके 'मंजूर' भी कर दिया है।

इसी बीचमें मद्रास प्रान्तके, जहाँ कि बहुत बरसोंसे हिन्दी या हिन्दुस्तानीके सिखानेका काम हो रहा है, कुछ हिन्दी प्रचारक मित्रोंने लिखा कि उस तरफ़की यूनीवर्सिटियोंने भी अपने कोर्सोंमें हिन्दुस्तानीको स्थान दे रक्खा है; और वहाँ फिलहाल लेखों और कविताओंके एक ऐसे 'सिलेक्शन' की ज़रूरत है जो लगभग मैट्रिककी योग्यताके विद्यार्थियोंके काम आ सके। और इस तरहका कोई 'सिलेक्शन' अभी तक हमारे देखनेमें नहीं आया था, इसलिए हमने इस संग्रहको प्रकाशित करनेका निश्चय किया।

स्वर्गीय मुंशी प्रेमचन्दजीके बाद श्रीसुदर्शनजी ही हिन्दी-उर्दू-साहित्यकी दुनियामें समान-रूपसे मशहूर हैं। उन्हें दोनों ही ज़बानोंपर एक-सा अधिकार है और वे इस तरहकी भाषा लिखते हैं जो दोनों ज़बानोंके पढ़नेवालोंका मन मोह लेती है। तब भला इस कार्यके लिए उनसे अच्छा सम्पादक और कौन मिलता? हमारी समझमें जिसे 'हिन्दुस्थानी' कहते हैं उसके वही सबसे योग्य लेखक हैं और इसीलिए हमने उन्हें ही इस कार्यके लिए चुना।

उन्होंने हमारी प्रार्थनाको मंजूर कर लिया और उसका नतीजा यह संग्रह आपके सामने मौजूद है। पाठक देखेंगे कि यह काम कितनी मेहनत और दिलचस्पीसे किया गया है। इसके लिए उन्होंने कई लेख और कविताएँ खास तौरसे लिखी हैं और वे भाषा और विषयके लिहाजसे विद्यार्थियोंके लिए बहुत ही कामकी हैं।

उम्मीद है कि हिन्दुस्तानीका प्रचार करनेवाली संस्थाएँ और सरकारी शिक्षा-विभाग अपने पाठय-क्रमोंमें इस पुस्तकको स्थान देकर सम्पादक और प्रकाशक दोनोंका उत्साह बढ़ाएँगे।

—प्रकाशक

# सूची

## गद्य

# गद्य

# आँसू

लेखक—स्व० पं० **बालकृष्ण भट्ट**

वि० सं० १९०१–१९५५

भट्टजी प्रयागके रहनेवाले थे। संस्कृतके और हिन्दीके विद्वान् तो थे ही, साथ ही उर्दू, फारसी और अँग्रेजीकी भी आपने शिक्षा पाई थी। आप 'कायस्थ पाठशाला कालेज', इलाहाबादमें बहुत बरसोंतक अध्यापक रहे और लगभग ३२ वर्षतक 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिकपत्रका सम्पादन करते रहे। नवीनता, गंभीरता, ओज, खोज आपकी शैलीके गुण हैं। 'हिन्दी प्रदीप'में निकले हुए सैकड़ो लेखोंके सिवाय 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान', 'रेलका विकट खेल' आदि आपकी मशहूर किताबें हैं। काशी नागरी-प्रचारिणी सभाने जो हिन्दी-शब्द-सागर नामक बड़ा भारी शब्द-कोश प्रकाशित किया है, उसके सम्पादन-विभागमें भी आपने कुछ वर्षतक काम किया था। आप हिन्दी-उर्दू मिली-जुली भाषामें भी लिखते थे और सच तो यह है कि ख़ूब लिखते थे। 'आँसू' इसी तरहका एक निबन्ध है।

आदमीके शरीरमें आँसू भी गड़े हुए ख़ज़ाने हैं। जैसे समय आनेपर जमा की हुई पूँजी ही काम देती है, उसी तरह हर्ष, शोक, भय, प्रेम इत्यादिको प्रकट करनेमें जब सब इन्द्रियाँ हार जाती हैं, तब आँसू ही उन भावोंको प्रकट करनेके लिए आगे बढ़ते हैं।

चिरकालके वियोगके बाद जब किसी दिली दोस्तसे मिलना होता है तो उस समय हर्षसे अंग अंग ढीला पड़ जाता है, गला रुक जाता है, जीभ इतनी शिथिल पड़ जाती है कि उसे ख़ुशी प्रकट करनेके लिए एक एक शब्द बोझ-सा मालूम होता है। पहले इसके कि वह शब्दोंसे अपना असीम आनन्द ज़ाहिर करे, सहसा आँसूकी नदी आँखमें उमड़ आती है। सच्चे प्रेमकी कसौटी भी इसीसे हो सकती है। अपने भगवानके भजनमें जिसने आँसू न बहाए, देवताका दर्शन करके जिसकी आँखमें आँसू न भर आए, वह कहाँका भक्त और कैसा प्रेमी? नरम दिलवाले अपने दिलके सुख-दुखको छिपानेकी हज़ार हज़ार चेष्टा करते हैं, पर आँसू इस सारी चेष्टाको व्यर्थ कर देता है। मोती-सी आँसूकी बूँदें जिस समय सहसा आँखसे झरने लगती हैं, उस समय उन्हें रोक लेना बड़े बड़े शूरवीरोंकी भी शक्तिसे बाहर हो जाता है।

अगर भगवान शोकमें रोना ज़रूरी न बनाता तो बड़े बड़े भारी दुखोंके वेगको कौन सँभाल सकता? इसी बातको भवभूतिने यों कहा है कि जब बरसातमें तालाब भर जाता है तब बाँध तोड़कर उसका पानी बाहर निकाल देना ही जिस तरह उसके बचावका उपाय है, उसी तरह शोकसे व्याकुल आदमीका आँसू बहाना ही हृदयको टुकड़े टुकड़े होनेसे बचा लेनेका उपाय है। बल्कि ऐसे समय रोना ही राहत है।

जो शूरवीर युद्धकी-चर्चा ही से जोशमें आ जाता है और जो लड़ाईके मैदानमें गोली और तीरकी वर्षाको फूलकी वर्षा मानता है, और जो वीरताकी उमंगमें लड़ने-मरनेको तैयार हो जाता है,—

चलते समय विलाप करते हुए अपने कुनबेवालोंके आँसूकी एक एक बूँदकी क्या क़ीमत है, यह वही जान सकता है। वह आगे पाँव रख फिर हटा लेता है। वीर और करुण ये दो विरोधी रस अपनी अपनी ओरसे उमड़ उमड़ कर देर तक उसे हैरान-परेशान किए रहते हैं। आँखमें आँसू उन्हीं सीधे पुरुषोंके आते हैं जिनके सच्चे सरल चित्तमें छल और कपटने स्थान नहीं पाया है। निष्ठुर, निर्दयी, मक्कारकी आँखें, जिसके कठोर कलेजेने कभी पिघलना जाना ही नहीं, किसीके दुखपर क्यों रोएँगीं? प्रकृतिने मनका आँखके साथ कुछ ऐसा सीधा सम्बन्ध बना दिया है कि आँखें मनको चट पहचान लेती हैं और उसी समय अपनेको प्रकट कर देती हैं।

तो निश्चय हुआ कि जो बेकलेजे हैं उनकी बैल-सी बड़ी बड़ी आँखें सिर्फ़ देखनेको ही हैं, चित्तके भावोंका उनपर कुछ असर होता ही नहीं।

आँसू आँसूमें भी भेद है। कितनोंका स्वभाव होता है कि बात कहते कहते रो देते हैं। अक्षर उनके मुँहसे पीछे निकलेगा, आँसुओंकी झड़ी पहले ही शुरू हो जाएगी। स्त्रियोंके जो बहुत आँसू निकलते हैं,—मानो रोना उनकी पलकोंपर रक्खा रहता है, इसका कारण यही है कि वे नामसे ही अबला और अधीरा हैं। दुखके वेगमें आँसू रोकनेवाला केवल धीरज है, और वह स्त्रियोंके पास है नहीं। तब इनके आँसुओंका क्या ठिकाना? धीरजवालोंको आँसू कभी आते ही नहीं। कड़ीसे कड़ी मुसीबतमें दो-चार बूँदें मानो बड़ी बात है। बहुत मौक़ोंपर आँसूने गज़ब कर दिया है। सिकन्दरका वचन था, कि 'मेरी माँकी आँखके एक आँसूका मोल मैं अपने राजसे भी बढ़कर मानता हूँ।' रेणुकाके एक आँसूने ही परशुरामसे इक्कीस बार क्षत्रियोंका क़त्ल कराया था।

कितने लोग ऐसे भी हैं जिन्हें आँसू नहीं आते। इसलिए जहाँपर बड़ी ज़रूरत आँसू गिरानेकी हो, वहाँ प्याजका गट्टा पास रखना बड़ा आसान उपाय है। प्याज़ ज़रा-सा आँखमें छू जानेसे आँसू गिरने लगते हैं।

बहुधा आँसूका गिरना भलाई और तारीफ़में दाखिल है। हमारे लिए आँसू बड़ी बला है। नज़लेका ज़ोर है, दिन-रात आँखोंसे आँसू टपकते हैं। ज्यों ज्यों आँसू गिरते हैं, त्यों त्यों बीनाई कम होती जाती है। सैकड़ों तदबीरें कर चुके, आँसूका टपकना बन्द न हुआ। क्या जाने, बंगालकी खाड़ीवाला सुमुद्र हमारे ही कपारमें भर रहा हो! आँखसे तो आँसू चला ही करते हैं, आज हमने लेखमें आँसूपर ही कलम चला दी। आशा है, पढ़नेवाले इसे बुरा न मानकर हमें क्षमा करेंगे।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**वियोग**—बिछुड़न, जुदाई, अलग होना, Separation.
**जीभ**—ज़बान, जिह्वा, रसना, Tongue.
**असीम**—जिसकी सीमा न हो, बेहद, बहुत ज़्यादा, Enormous, Unlimited.
**कसौटी**—परख, Test.
**चेष्टा**—यत्न, कोशिश, Effort.
**वेग**—प्रवाह, बहाव, बहना, Flow.
**राहत**—खुशी, आनन्द, प्रसन्नता, Happiness, Pleasure.
**कुनबा**—घर, क़बीला, वंश, Family.
**प्रकृति**—क़ुदरत, फितरत, Nature.
**पलक**—आँखका परदा, पपोटा, Eyelid.
**बीनाई**—देखनेकी शक्ति, नज़र, Eyesight.

# मेलेका ऊँट

लेखक—स्व० **बाबू बालमुकुन्द गुप्त**

वि० सं० १९२०—१९६४

आप गुरियानी ज़िला रोहतक ( पंजाब ) के रहनेवाले थे। पहले पहल आप उर्दूमें लिखते थे और 'कोहनूर' और 'अख़बारे चुनार'के सम्पादक थे। उस ज़मानेमें इन अख़बारोंकी धूम मची हुई थी। इसके बाद आप हिन्दीमें लिखने लगे, और ऐसे चमके कि सबपर छा गए। जिन दिनों आप 'भारतमित्र'का सम्पादन करते थे, उन दिनों लोग भारत-मित्रकी राह देखते रहते थे। 'गुप्त-निबंधावली,' 'शिवशंभु शर्माके चिट्ठे,' और 'चिट्ठे और ख़त' आपकी मशहूर किताबें हैं जिन्हें लोग आज भी पढ़ते हैं तो वाह वाह करते हैं। 'मेलेका ऊँट' आपकी पुस्तक 'शिवशंभु शर्माके चिट्ठे' से लिया गया है।

सम्पादक भइया,

जीते रहो, दूध बताशे पीते रहो! भाँग भेजी, सो अच्छी थी। फिर वैसी ही भेजना।

पिछले सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्रमें टटोलते हुए, 'मोहन मेले'के लेखपर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टिपर अफ़सोस हुआ। भाई, आपकी दृष्टि गिद्धकी-सी होनी चाहिए क्योंकि आप सम्पादक हैं; किन्तु, आपकी दृष्टि गिद्धकी-सी होनेपर भी उस भूखे गिद्धकी-सी निकली जिसने ऊँचे आकाशमें चढ़े चढ़े भूमिपर एक गेहूँका दाना पड़ा तो देखा, पर उसके नीचे जो जाल बिछ रहा था वह उसे न सूझा। यहाँतक कि उस गेहूँके दानेको चुगनेसे पहले जालेमें फँस गया!

मोहन मेलेमें आपका ध्यान दो-एक पैसेकी एक पूरीकी तरफ़ गया! न जाने आप घरसे कुछ खाकर गए थे या यों ही। शहरकी एक पैसेकी पूरीके मेलेमें दो पैसे हों, तो आश्चर्य न करना चाहिए, चार पैसे भी हो सकते थे। यह क्या देखनेकी बात थी? तुमने व्यर्थ बहुत बातें देखीं, कामकी एक भी तो देखते!

दाईं ओर जाकर तुम ग्यारह सौ सतरोंका एक पोस्टकार्ड देख आए, पर बाईं तरफ़ बैठा हुआ ऊँट भी तुम्हें दिखाई न दिया! बहुत लोग उस ऊँटको देखते और हँसते थे। कुछ लोग कहते थे कि कलकत्तेमें ऊँट नहीं होते, इसीसे मोहन मेलेवालोंने इस अजीब जानवरका दर्शन कराया है।

बहुत-सी शौकीन बीबियाँ और कितने ही फूल-बाबू ऊँटका दर्शन करके दाँत निकालते चले गए। तब कुछ मारवाड़ी बाबू भी आए। और झुक झुक कर उस काठके घेरेमें बैठे हुए ऊँटकी तरफ़ देखने लगे।

एकने कहा—ऊँट है!

दूसरा बोला—ऊँट कहाँसे आया!

ऊँटने भी यह देख दोनों ओठोंको फड़काते हुए थूथनी फटकारी। भंगकी तरंगमें मैंने सोचा कि ऊँट अवश्य ही मारवाड़ी बाबुओंसे कुछ कहता है। जीमें सोचा, चलो देखें वह क्या कहता है? क्या उसकी भाषा मेरी समझमें न आवेगी? मारवाड़ियोंकी भाषा समझ लेता हूँ तो मारवाड़के ऊँटकी बोली क्यों समझमें न आवेगी? इतनेमें तरंग कुछ अधिक हुई। ऊँटकी बोली साफ़ साफ़ समझमें आने लगी। ऊँटने उन मारवाड़ी बाबुओंकी ओर थूथनी करके कहा—

" बेटा, तुम बच्चे हो, तुम क्या जानोगे ! यदि मेरी उमरका कोई होता तो वह जानता। तुम्हारे बापके बाप जानते थे कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ ? तुमने कलकत्तेके महलोंमें जन्म लिया, तुम पोतड़ोंके अमीर हो ! मेलेमें बहुत चीज़ें हैं, उनको देखो। और यदि तुम्हें कुछ फ़ुरसत हो तो लो सुनो, सुनाता हूँ। आज दिन तुम विलायती फ़िटन, टमटम और जोड़ियोंपर चढ़कर निकलते हो जिनकी कतार तुम मेलेके द्वारपर मीलोंतक छोड़ आए हो। पर, तुम उन्हींपर चढ़कर मारवाड़से कलकत्ते नहीं पहुँचे थे। यह सब तुम्हारे साथकी जन्मी हुई हैं। तुम्हारे बाप पचास सालके भी न होंगे, इससे वह भी मुझे भली भाँति नहीं पहचानते। हाँ, उनके भी बाप हों तो मुझे पहचानेंगे। मैंने ही उनको पीठपर लादकर कलकत्तेतक पहुँचाया था।

" आजसे पचास साल पहले रेल कहाँ थी ? मैंने मारवाड़से मिरज़ापुर तक, और मिरज़ापुरसे रानीगंज तक कितने ही फेरे किए हैं। महीनों तुम्हारे पिताके पिता, तथा उनके भी पिताओंका घर-बार मेरी ही पीठपर रहता था। मारवाड़में मैं सदा तुम्हारे द्वारपर हाज़िर रहता था, पर यहाँ वह मौक़ा कहाँ ? इसीसे मेलेमें तुम्हें देखकर आँखें ठण्डी करने आया हूँ। तुम्हारी भक्ति घट जानेपर भी मेरा वात्सल्य नहीं घटा है। घटे कैसे ? मेरा तुम्हारा जीवन एक ही रस्सीमें बँधा हुआ जो है। मैं ही हल चलाकर तुम्हारे खेतोंमें अनाज उपजाता था और मैं ही चारा आदि पीठपर लादकर तुम्हारे घर पहुँचाता था। यहाँ कलकत्तेमें जलकी कलें है, गंगाजी हैं, जल पिलानेको ग्वाले कहार हैं पर तुम्हारी जन्म-भूमिमें मेरी ही पीठपर लदकर कोसोंसे जल आता था और तुम्हारी प्यास बुझाता था।

"मेरी इस घायल पीठको घृणासे न देखो। इसपर तुम्हारे बड़े अन्न, रस्सियाँ, यहाँतक कि उपले तक लाद लाद कर दूर दूर तक ले जाते थे। जाते हुए मेरे साथ पैदल जाते और लौटते हुए मेरी पीठपर चढ़े हुए हिचकोले खाते वह स्वर्गीय सुख लूटते थे कि तुम रबरके पहियोंवाली, चमड़ेकी कोमल गाद्दियोंदार फिटिनमें बैठकर भी वैसा आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। मेरी बलबलाहट उनके कानोंको इतनी सुरीली लगती थी कि अपने बगीचोंमें अपने गवैयोंके स्वर भी तुम्हें उतने अच्छे न लगते होंगे। मेरे गलेके घण्टोंका शब्द उनको सब बाजोंसे प्यारा लगता था। जंगलमें मुझे चरते देखकर वह उतने ही प्रसन्न होते थे जितने तुम अपने सजे बागीचोंमें भंग पीकर, पेट भरकर और ताश खेलकर होते हो।"

भंगकी निन्दा सुनकर मैं चौक पड़ा। मैंने ऊँटसे कहा—बस, बलबलाना बन्द करो! यह बावला शहर नहीं जो तुम्हें परमेश्वर समझे। तुम पुराने हो तो क्या? तुम्हारी कोई कल सीधी नहीं है। जो पेड़ोंकी छाल और पत्रोंसे शरीर ढाँकते थे उनके बनाए कपड़ोंसे सारा संसार बाबू बना फिरता है। जिनके पिता सिरपर गठरी ढोते थे वही पहले दरजेके अमीर हैं। जिनके पिता स्टेशनसे गठरी आप ढोकर लाते थे, उनको सिरपर पगड़ी सम्हालना भारी है। जिनके पिताका पूरा नाम लेकर कोई न पुकारता था, उनके नामके पीछे बड़ी बड़ी उपाधियाँ लगी हैं। संसारका जब यही रंग है तो ऊँटपर चढ़ने वाले सदा ऊँटपर ही चढ़ें, यह कुछ बात नहीं। किसीकी पुरानी बात यों खोलकर कहनेसे आजकलके कानूनसे हतकइज़्ज़ती हो जाती है। तुम्हें ख़बर नहीं कि अब मारवाड़ियोंने 'एसोसियेशन' बना ली है।

अधिक बलबलाओगे तो वह रेज़ोल्यूशन पास करके तुम्हें मारवाड़से निकलवा देंगे । इसलिए, तुम उनका कुछ गुण-गान करो जिससे वे तुम्हारे पुराने हक़को समझें । और जिस प्रकार लार्ड कर्ज़नने किसी ज़मानेके ' ब्लैक होल ' को उसपर लाट बनवाकर और उसे संग-मरमरसे मढ़वाकर शानदार बना दिया है, उसी प्रकार मारवाड़ी तुम्हारे लिए मख़मली काठी, हीरे-पन्नोंकी नकेल और सोनेकी घंटियाँ बनवाकर तुम्हें बड़ा करेंगे और अपने बड़ोंकी सवारीका सम्मान करेंगे।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**तरंग**—मौज, लहर, नशा, Mood.

**पोतड़ोंके अमीर**—ख़ानदानी अमीर, Born with silver spoon in their mouths.

**हाज़िर**—उपस्थित, मौजूद, Present.

**वात्सल्य**—छोटोंके प्रति प्यार, प्रेम, मुहब्बत, Affection.

**बड़े**—जेठे, पूर्वपुरुष, Ancestor.

**हिचकोले**—झोके, Rockings.

**फूल-बाबू**—फूल जैसे कोमल, नाज़ुक, कमज़ोर लोग, Tender.

**उपाधि-धारी**—जिन्हें ख़िताब-मिला हो, जैसे रायसाहब, ख़ाँसाहब, Title-holder.

**कानून**—राज-नियम, रिवाज, Law.

**हतकइज़्ज़ती**—मान-हानि, Defamation.

**शानदार**—शोभापूर्ण, सुन्दर, बढ़िया, Magnificient Grand.

**हक़**—अधिकार, Right.

**तुम्हारी कोई कल सीधी नहीं है**—तुम्हारा कोई अंग सीधा नहीं है । ' कल सीधी नहीं है, ' यह एक मुहाविरा है । भाव है कि तुम हर तरह टेढ़े हो ।

---

# बलरामपुरका खेदा

लेखक—स्व० पं० **महावीरप्रसाद द्विवेदी**

वि० सं० १९२१—१९९५

द्विवेदीजीका जन्म रायबरेली ज़िलेके दौलतपुर गाँवमें हुआ। पहले आप रेलवेमें नौकर थे, बादमें नौकरी छोड़कर 'सरस्वती'का सम्पादन करने लगे और बीस साल तक करते रहे। खड़ी बोलीकी कविताका प्रसार आपने ही किया है। पहले व्रजभाषामें ही कविता होती थी। आप जितने अच्छे लेखक थे, उससे कई गुना अच्छे समालोचक थे। अच्छोंकी तारीफ़ करते थे, बुरोंके विरुद्ध लिखते थे। सम्पादन-कालमें आपने पचासों नए लेखकोंको उँगलियाँ पकड़कर उन्हें सीधे रास्तेपर चला दिया। 'शिक्षा,' 'स्वाधीनता' 'बेकन विचार-रत्नावली' 'महाभारत' 'रघुवंश' 'किरातार्जुनीय' और 'प्रबंध-पुष्पांजली' आपकी प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। यह लेख 'प्रबंध-पुष्पांजली' से लिया गया है।

जंगली हाथियोंको पकड़नेके लिए जो चढ़ाई की जाती है उसे खेदा कहते हैं। बलरामपुरमें हर पाँचवें साल खेदा होता है। बलरामपुर अवधमें एक रियासत है। हिमालयकी तराईका बहुत-सा हिस्सा इस रियासतमें है। यहाँ हाथी बहुत रहते हैं। उन्हींको पकड़नेके लिए खेदा होता है। हर साल खेदा इसलिए नहीं होता कि ऐसा न हो, बहुत हाथियोंके पकड़ लिएं जानेसे उनका वंश ही नष्ट हो जाए। इसीसे हर पाँचवें साल ही हाथियोंका शिकार होता है। इस शिकारी चढ़ाईमें हाथी पकड़कर कैद कर लिए जाते हैं, पर मारे नहीं जाते। हाँ, पकड़ते समय अगर उनकी मौत हो जाए, तो दूसरी बात है।

पिछली बार बलरामपुरका खेदा २५ दिसम्बर १९०४ से १५ फरवरी १९०५ तक हुआ। इसके पहले जो खेदा हुआ था उसमें यू० पी० के पहले लाट सर अण्टोनी मैकडानल शामिल थे। इस खेदेकी शोभा छोटे लाट सर जेम्स लाटूशने बढ़ाई। बलरामपुरमें अनेक हाथी हैं। इनमेंसे जो खेदेके कामके थे, वे सब हरिद्वारके पास चिल्ला नामक जगहको भेज दिए गए। वहीं खेदेवालोंका पड़ाव पड़ा। महाराजा बलरामपुर २१ दिसम्बरको बलरामपुरसे रवाना हुए और २३ को हरिद्वार स्टेशनपर पहुँचे। वहाँसे वे अपने पड़ावपर गए। छोटे लाट भी २४ तारीख़को आगए। उनसे महाराजने पूछा कि क्या आप बड़े दिन अर्थात् २५ दिसम्बरको खेदेपर चलना पसन्द करेंगे? आपने उत्तर दिया—हाँ।

समयपर सब शिकारी हाथी और आवश्यक आदमी खेदेके लिए रवाना कर दिए गए। उनसे कहा गया कि ज्यों ही जंगली हाथियोंकी ख़बर मिले, महाराजको सूचना दी जाए। यह सूचना दिनके एक बजे आई। फ़ौरन बिगुल बजाया गया। सब आदमी तैयार हो गए। जितने हाथी थे सब अपने अपने शिकारी सामानके साथ तैयार किए गए। ये सब फ़ौरन ही उस तरफ़ रवाना हुए जहाँसे दो जंगली हाथियोंके देखे जानेकी खबर आई थी। महाराजा और उनके साथी और मेहमान घोड़ोंपर गए। सात मील चलनेके बाद सबको घोड़े छोड़कर हाथियोंपर सवार होना पड़ा। शामतक हाथियोंकी तलाश रही। पर एक भी हाथी नज़र नहीं आया। दूर दूरसे हाथियोंके आने और शोर-गुल मचानेसे होशियार होकर सब हाथी न जाने कहाँ भाग गए? इससे नाउम्मेद होकर वहाँसे सबको

पड़ावपर लौट आना पड़ा। उस दिन महाराजा साहबने लाट साहबको खानेपर बुलाया। २६ दिसम्बरको खेदा नहीं हुआ।

२७ दिसम्बरको फिर हाथियोंका पता लगा। खेदेके कप्तान नन्हें ख़ाँ हाथियों और बन्दूक़चियोंको लेकर सबेरे ही चल दिए। महाराजा १० बजे रवाना हुए, और कोई एक बजे वहाँ पहुँचे। जब कोई जंगली हाथी देख पड़ता है और घातमें आ जाता है, तो सधे हुए हाथी उसकी गरदन पर मोटे मोटे रस्से फेंक कर फन्दा लगाते हैं। ऐसे जितने हाथी थे सब अपनी अपनी जगहपर खड़े किए गए। अनेक लोग तमाशा देखने आए थे। उनका भी सुरक्षित जगहमें खड़े होनेका प्रबन्ध हुआ। यह सब कप्तान नन्हें ख़ाँने किया। महाराजा और लाट साहबकी दाहिनी और बाईं तरफ़ सब शिकारी हाथी खड़े किए गए। नागेन्द्र गज और गजराजबहादुर नामके दो विशाल हाथी महाराजा और सर जेम्स लाटूशकी रखवालीके लिए नियत हुए। सब लोग चुपचाप अपने अपने हाथियोंपर बैठे। बैठे बैठे बहुत देर हो गई। लाट साहबके सिवा और भी कई अँगरेज़ महाराजाके साथ थे। देरीसे सब लोग घबरा उठे। किसीसे बिना बात किए रहा न गया। धीरे धीरे कानाफूसी होने लगी। यहाँ तक कि एक-आधने सोडावाटरकी बोतलें तक फड़ाक फड़ाक खोलकर उनके भीतरकी चीज़को अपने गलेके भीतर पहुँचाया।

इस खेदेमें अनेक शिकारी और सवारीके हाथी थे। इन हाथियोंकी पीठपर केवल एक गद्दा रहता है। इससे बैठनेवालोंको ज़रा तकलीफ़ होती है। पुरुषोंको तो इतनी नहीं होती पर स्त्रियोंको अधिक होती है। खेदेमें कई कोमल-कलेवरा मेमें भी थीं। जितना बोझ इनके

बदनका न था, उससे अधिक बोझ उनके गाउन वग़ैरहका था ! इस बोझके कारण, और हाथीके ऊपर बैठनेके लिए होदा न होनेके भी कारण उन बेचारियोंको कुछ अधिक कष्ट हुआ।

सामने जंगल था। जितने शिकारी हाथी थे सब उसी तरफ़ ध्यानसे देख रहे थे। उन हाथियोंपर जो सवार थे वे भी सब अपने अपने कामके लिए तय्यार थे। जहाँ कोई जंगली हाथी देख पड़ता है, तहाँ शिकारी हाथी उसके पीछे दौड़ता है। परन्तु कभी कभी वह उसके बराबर नहीं दौड़ सकता; पीछे रह जाता है। इस हालतमें मुँगरीवाला आदमी उसके पैरोंमें या पूँछके पास मुँगरीसे मारता है। मुँगरीमें छोटी छोटी कीलें रहती हैं। इससे उसकी चोट लगनेसे हाथीको तकलीफ़ होती है और वह जल्दी जल्दी दौड़ने लगता है। ये मुँगरीवाले भी अपनी अपनी मुँगरियोंको लेकर जंगलहीकी तरफ़ बड़े ध्यानसे देख रहे थे। जो लोग जंगली हाथीपर शिकारी हाथीकी मददसे फन्दा डालते हैं, वे फन्दैत कहलाते हैं। वे बड़े बड़े रस्से लिए हुए मुँगरीवालोंके आगे शिकारी हाथीपर बैठते हैं। वे भी अपना अपना रस्सा सँभालकर हाथी दौड़ानेको तैयार थे। इतनेमें एक बन्दूक़की आवाज़ आई। मालूम हुआ कि कोई हाथी देख पड़ा। बन्दूकची लोग पहले जंगलमें घुसते हैं। वे बन्दूकें दाग़कर हाथीको एक तरफ़ निकालते हैं। निकालते ही उनपर शिकारी हाथी बड़े ज़ोरसे धावा करते हैं।

पहले पहल कन्हैयाबख़्श नामके शिकारी हाथीने एक जंगली हाथीको देखा। देखते ही उसने उसपर धावा किया। फिर क्या था, एक मिनटमें सब हाथी वहाँसे ग़ायब हो गए। सिर्फ़ सवारीके हाथी

रह गए। कोई तीन मीलतक जंगल पार करनेपर मैदान मिला। वहीं शिकारी हाथियोंने जंगली हाथीको घेरा। पहले वह घेरेसे निकल भागा। पर वह फिर घेरा गया। कन्हैयाबख़्श, नागेन्द्रगज और राजमंगल नामके शिकारी हाथी उसके दाहने, बाएँ और सामने हुए। तब कई महावतोंने अपने हाथियोंसे उतरकर, जंगली हाथीके पिछले पैरोंको बाँध दिया। यह करके शिकारी हाथियोंके ऊपरसे जंगली हाथीके गलेमें फन्दे लगाए गए। फन्दे डाले जानेपर उनमें कुटनी लगाई गई। कुटनी एक तरहकी गाँठका नाम है।

इस तरह वह हाथी पकड़ा गया। कुछ पालतू हाथी उसके आगे, कुछ पीछे और कुछ इधर-उधर हुए। जंगली हाथीकी गरदनके रस्से पालतू हाथियोंकी गरदनमें बाँध दिए गए। इस तरह वह क़ैदी हाथी पड़ावकी तरफ़ रवाना हुआ। अगर रास्तेमें वह कहीं अड़ जाता था तो शिकारी हाथी उसे अपने अपने दाँतोंसे मारते थे। पर इस नए हाथीपर अधिक मार-पीटकी ज़रूरत नहीं हुई। जिस समय इस जंगली हाथीके पैरोंमें रस्सा बाँधा जा रहा था, उस समय लाट साहब भी वहाँ पहुँच गए थे। इससे उनकी अनुमतिसे इस हाथीका नाम 'लाटूश बहादुर' रखा गया। इस खेदेसे पहले जो खेदा हुआ था, उसमें एक हाथीका नाम 'मेकडानल बहादुर' रक्खा गया था, क्यों कि उस खेदेमें सर अण्टोनी मेकडानल शरीक थे।

३० दिसम्बरको फिर खेदेकी तैयारियाँ हुईं। शिकारी हाथी और बन्दूक़ची लोग सबेरे ही जंगलकी तरफ़ रवाना हुए। कोई १० बजे ख़बर आई कि जंगली हाथियोंका पता लगा है। इसलिए लाट साहब और महाराजा घोड़ोंपर सवार होकर डेढ़ बजे वहाँ जा पहुँचे।

कुछ देर बाद खेदा करनेके लिए बन्दूक़वाले जंगलमें धँसे। उनके पीछे शिकारी हाथियोंके पीछे सवारीके हाथी चले। बीचमें एक नाला पड़ा। खेदेके कप्तान नन्हें खाँने सब लोगोंको नालेके उस पार जंगलमें खड़ा किया। फन्दैती हाथी अपनी अपनी जगहपर खड़े हुए। गजराज बहादुर और नागेन्द्रगज महाराजा और लाट साहबके पास रक्षकके तौरपर रहे। तब तक बन्दूकवालोंने खेदा करके जंगली हाथियोंको जंगलसे बाहर निकाला। बन्दूक़की आवाज़ सुनाई पड़नेके कोई आध घंटे बाद एक जंगली हाथी दिखाई दिया। उसपर नागेन्द्र गजने धावा किया। महाराजाकी हथिनी भगवत प्यारी भी उसके पीछे दौड़ी।

जंगली हाथी भागा। कभी वह नरकुलके जंगलमें घुस जाता, कभी उससे भी घने पेड़ों और काँटेदार झाड़ियोंके जंगलमें। इस तरह वह बहुत देरतक इधर उधर भागता और शिकारी हाथियोंको तंग करता रहा। पाँच बजे शामको वह सब तरफ़से निकाला जाकर मैदानमें बाहर आया। वहाँ दो-तीन शिकारी हाथी उसके पास पहुँचे और उसपर उन्होंने फन्दे डाल दिए। तीन फन्दे फेंके गए। तीनों सही हो गए।

पर हाथी बहुत बिगड़ा हुआ था। फन्दोंके रस्सोंको दो हाथी पकड़े हुए थे, उनको घसीटता हुआ वह जंगलकी तरफ़ भागा। इतनेमें और भी कई शिकारी हाथी उसके पास पहुँच गए और वह खूब घिर गया। कई बड़े बड़े हाथी उसके इधर उधर खड़े हुए। तब उसके पैरोंमें रस्सा डाला गया और गर्दनमें कई फन्दे और लगाए गए। इस तरह वह पकड़ा गया और पड़ावकी तरफ़ रवाना किया

गया। चार शिकारी हाथी उसके आगे जोड़े गए और तीन पीछे; एक दाहिने और एक बाएँ; ऐसे दो हाथी और उसके साथ हुए। रास्तेमें एक-आध जगह पानी पिलाकर वह पड़ावपर पहुँचाया गया। उसका नाम रक्खा गया चण्डीप्रसाद। उसके चण्ड भाव था भी अधिक। पकड़ते समय उसने बहुत तंग किया था। बादमें बाँध दिए जानेपर भी उसने अपना बन्धन तोड़कर निकल जानेकी बहुत कोशिश की थी। पर व्यर्थ।

इस खेदेमें एक महावतकी पसली टूट गई। जिस समय शिकारी हाथी जंगली हाथीपर खेदा किए हुए थे, उस समय कालीप्रसाद नामका हाथी अपने महावतको लेकर भागा और एक पेड़के नीचेसे निकला। पेड़की लटकती हुई एक डाल महावतकी छातीपर लगी। उसके आघातसे बेचारेकी एक पसली टूट गई।

इसके बाद और कई खेदे हुए। कितने ही बड़े बड़े हाथी पकड़े गए। छोटे छोटे पाठे भी कई मिले। एक पाठा जब पड़ावकी ओर लाया जा रहा था, तब कई दफ़े राहमें बेहोश हो होकर गिरा। पानी डालकर वह होशमें लाया गया। पर जान पड़ता था कि उसके पैरमें चोट आ गई थी, इससे वह चल न सकता था। मालूम नहीं, उसकी क्या गति हुई?

जैसा ऊपर लिखा गया है, जब जंगली हाथी पकड़कर पड़ावको भेजा जाता है तब खेदेके हाथी उसकी गर्दनके रस्सोंको पकड़कर आगे चलते हैं। जो रस्से पिछले पैरोंमें बँधे रहते हैं उनको भी कई हाथी पीछेसे थामे रहते हैं। उसके दाहिने-बाएँ भी कई हाथी चलते हैं। इस तरह वह नया क़ैदी जंगलसे पड़ावको लाया जाता है

अगर पड़ाव दूर होता है, तो रातको बीचमें कहीं ठहरना पड़ता है। पड़ावपर पहुँचनेपर वह एक बड़े पेड़से बाँध दिया जाता है और चारा उसकी सूँड़की पहुँचमें रख दिया जाता है।

अपनी स्वतन्त्रताके छिन जानेपर कभी कभी हाथीको बड़ा रंज होता है। कई दिनतक वह एक तिनका भी मुँहमें नहीं डालता। कोई कोई हाथी बहुत समझदार होता है। वह समझ जाता है कि छूटनेकी कोशिश करने या खाना न खानेसे अब कोई लाभ नहीं। इसलिए वह पहले ही दिनसे खाना-पीना शुरू कर देता है। लाटूशबहादुर नामका हाथी इसी पिछले विचारका था। जब उसे पहली दफ़े पानी पिलानेके लिए शिकारी हाथी रस्सी थामे हुए पानीके पास ले गए, तो उसने चुपचाप पानी पी लिया।

पर चण्डीप्रसाद किसी दूसरे ही स्कूलका हाथी था। उसे इस तरहकी नम्र नीति पसन्द नहीं आई। खानेपीनेमें उसने बहुत तंग किया और छूटनेकी कोशिशमें पैरोंके रस्सोंको खींच खींचकर व्यर्थ परिश्रम किया। पकड़ते समय भी उसने बड़ी वीरता दिखाई थी। नागेन्द्रगजको उसने अपने नुकीले दाँतोंसे घायल कर दिया था। चाहे जो कुछ हो, जो वीर हैं वे प्रबल शत्रुके सामने भी वीरता दिखाए बिना नहीं रहते। भेड़-बकरीकी तरह बिना हाथ-पैर हिलाए स्वतन्त्रता जैसी प्यारी चीजको वे हाथसे नहीं जाने देते।

जंगली हाथी आठ-नौ महीनेमें सध जाते हैं। गरदन और पैर रस्सोंसे खूब बँधे रहते हैं। इससे वहाँका चमड़ा कट जाता है और घाव हो जाते हैं। उनमें तेल और चरबी लगाई जाती है। पहले पहल इसी बहाने हाथीके बदनमें हाथ लगाया जाता है। इससे

हाथीको आराम मिलता है और धीरे धीरे वह उन लोगोंको पहचानने लगता है जो उसे चारा-पानी देते हैं। उसका जंगलीपन छूट जाता है। जब हाथी अच्छी तरह हिल जाता है तब वह सवारी या बोझ ढोनेका काम देता है। कोई कोई खेदेके काममें भी लाया जाता है।

जंगली हाथियोंके पकड़नेकी कई तरकीबें हैं। इस देशमें भी कई तरहसे हाथी पकड़े जाते हैं। पर जो तरकीब बलरामपुरमें काममें लाई जाती है, वही मदरास और आसाममें भी काममें लाई जाती है।

लंकामें बहुत हाथी होते हैं। पर, वहाँके हाथियोंके अकसर दाँत नहीं होते। वहाँ जंगली हाथियोंको पकड़नेके लिए गवर्नमेंटसे आज्ञा लेनी होती है और कुछ कर भी देना पड़ता है। वहाँ दूसरे ही ढँगसे काम लेते हैं।

वहाँ गरमीके मौसममें बड़े बड़े गाँवोंके जमींदार कोई दो हज़ार आदमी इकट्ठा करते हैं जो हाथियोंके झुंडको घेरते हैं।

पानी कम हो जानेके कारण गरमीके दिनोंमें हाथी अकसर किसी तालाब या नदीके पास रहते हैं, और दस-बीस मिलकर एक साथ घूमते फिरते हैं। ऐसी जगहोंसे कुछ दूरपर मज़बूत लकड़ियोंका एक घेरा या बाड़ा बनाया जाता है। जिस तरफ़से उसमें हाथियोंके घुसनेकी उम्मेद होती है, उस तरफ़ घेरेका मुँह खुला रखा जाता है।

कई दिनों तक खेदेवाले हाथियोंको घेरते हैं और धीरे धीरे लकड़ियोंके घेरेकी तरफ ले आते हैं। घेरा घने जंगलके बीचमें होता है। बन्दूकें दाग़कर और ढोलक बजाकर हाथी खूब डराये जाते हैं और घेरेके दरवाज़ेपर लाए जाते हैं। वहाँ और कोई जगह भागनेके लिए न मिलनेपर वे घेरेके भीतर चले जाते हैं। उनके भीतर जाते ही

दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता है और बहुत-से आदमी बड़े बड़े भाले लेकर घेरेके चारों तरफ़ खड़े हो जाते हैं जिससे जंगली हाथी उसे तोड़कर बाहर न निकल भागें।

दूसरे दिन पालतू हाथी भेजे जाते हैं। हर हाथीपर उसका महावत रहता है और एक मोटा रस्सा हाथीकी गरदनपर बँधा रहता है। उस रस्सेका एक किनारा ज़मीनकी तरफ़ लटका करता है। उसमें फन्दा लगा रहता है। यह फन्दा एक आदमी अपने हाथमें थामे रहता है और जंगली हाथीका ख़ौफ़ मालूम होते ही पालतू हाथीके पेटके नीचे छिप जाता है। पालतू हाथी घेरेमें घुसकर जंगली हाथियोंका पीछा करते हैं। घेरेमें उनके पीछे दौड़ते हैं। इसी समय जंगली हाथियोंके पिछले पैरोंमें फन्दा डाल दिया जाता है। फन्दा लग जानेपर वे बड़े बड़े पेड़ोंसे बाँध दिए जाते हैं। फन्दा लगाते समय जंगली हाथी बेतरह बिगड़ते हैं और बड़ी मुशकिलोंमें लोग फन्दा लगा पाते हैं। दो दिन बाद वे जंगलसे बाहर लाए जाते हैं और उन्हें चारा-पानी दिया जाता है। कोई छः महीनेमें वे सध जाते हैं और बोझ ढोने या सवारीका काम देने लगते हैं। लंकामें हाथियोंको सागौनके लट्ठे ढोने पड़ते हैं।

सुनते हैं, पालतू हाथियोंके ऊपर जो आदमी सवार रहता है उसपर जंगली हाथी वार नहीं करते।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**सूचना**—ख़बर, इत्तला, Information, News.
**फ़ौरन**—तत्काल, उसी समय, Immediately, At once.
**नाउम्मेद**—निराश, Disappointed.

**सुरक्षित**—जहाँ भय न हो, बेखतर, Safe, Secure.

**कोमल-कलेवरा**—नाजुक, कोमल देहवाली, Weak, Delicate, Charming.

**अनुमति**—राय, सलाह, आज्ञा, Consent.

**कोशिश**—यत्न, Effort.

**पाठा**—जवान, युवा, Young, Healthy.

**स्वतंत्रता**—आज़ादी, स्वाधीनता, Liberty, Freedom.

**नीति**—युक्ति, उपाय, तरकीब, तरीक़ा, Policy, Code of Morality.

**व्यर्थ**—बेफ़ायदा, जिससे लाभ न हो, जिससे किसी फलकी संभावना न हो— Useless, Fruitless.

**चारा**—जानवरोंके खानेकी सामग्री, घास-फूस, Fodder

**बेतरह**—बुरी तरह, बहुत ज़्यादा, Very badly.

**बदन**—देह, शरीर, जिस्म, Body.

**बंदूकची**—बंदूक चलानेवाला, A Musketeer.

**चरबी**—वसा, Fat, Grease.

**नरकुल**—किलक, Reed.
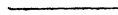
# महाराजा रणजीतसिंह

लेखक—**श्री सुदर्शन**

आप स्यालकोट ( पंजाब ) के रहनेवाले हैं। बचपनहीसे लिखने-पढ़नेका शौक़ है। पहले उर्दूमें लिखते थे, आजकल हिन्दीमें भी लिखते हैं। हिन्दुस्तानी भाषाके आप बड़े ज़बरदस्त समर्थक हैं, हिन्दी लिखते समय संस्कृत शब्दोंसे बचते हैं, उर्दू लिखते समय अरबी-फ़ारसी शब्दोंसे भागते हैं। शैली इतनी सुन्दर है, कि जो देखता है मुग्ध हो जाता है। 'सुदर्शन सुधा,' 'सुदर्शन सुमन,' 'तीर्थ-यात्रा,' 'चार कहानियाँ,' 'पनघट,' 'अंजना,' 'भाग्य-चक्र,' 'पुष्प-लता,' 'सुप्रभात' आदि कई पुस्तकें इस समय तक लिख चुके हैं।

इस समय आपकी उम्र पैंतालीस सालके लगभग है।

१

मैं चौंक पड़ा। मुझे अपने कानोंपर विश्वास न आया। मैंने कापी मेज़पर रख दी और अपनी कुरसीको थोड़ा-सा आगे सरकाकर पूछा—क्या कहा तुमने ? सौ साल ? तुम्हारी उम्र सौ साल है ?

तीनों कोटोंको एक साथ बाँधते हुए धोबीने मेरी ओर देखा, और उत्तर दिया—हाँ बाबू साहब, मेरी उम्र सौ साल है। पूरी सौ साल। न एक साल कम न एक साल ज्यादा। मेरी सूरत देखकर अक्सर लोग धोखा खा जाते हैं।

" मगर तुम इतने बड़े मालूम नहीं होते। मेरा विचार था, तुम सत्तर सालसे ज़्यादा न होगे। "

" नहीं बाबू साहब, पूरे सौ सालका हूँ। "

" बड़े भाग्यवान् हो। आज-कल तो लोग पचास सालसे पहले ही तैयारी कर लेते हैं।"

धोबीने इसका कोई उत्तर न दिया।

सहसा मेरे हृदयमें एक विचार उत्पन्न हुआ। मैंने पूछा—अच्छा भाई धोबी, यह तो कहो, तुमने सिक्खोंका राज्य तो देखा होगा?

" हाँ देखा है।"

" उस राज्यमें तुम सुखी थे या नहीं? मेरा मतलब यह है, उस राज्यमें लोगोंकी क्या दशा थी?"

धोबीने मेरी ओर प्यासे नेत्रोंसे देखा, जैसे किसीको भूली हुई बात याद आ जाय और ठण्डी साँस भरकर कहा—मैं उस समय बहुत छोटा था। सिक्खोंका राज्य कैसा था, यह नहीं कह सकता। हाँ सिक्खोंका महाराज कैसा था, यह कह सकता हूँ।

मेरे हृदयमें गुदगुदी-सी होने लगी, पूछा—तो तुमने महाराजका दर्शन किया है?

" हाँ सरकार, दर्शन किया है। क्या कहना, अजीब आदमी थे। उनकी वह शक्ल-सूरत याद आती है तो दिलमें भालेसे चुभ जाते हैं। बहुत दयालु थे। महाराज थे, मगर स्वभाव साधुओंका था। घमण्डका नाम भी न था। मैं आपको एक बात सुनाता हूँ। शायद आपको उसपर विश्वास न आए। आप कहेंगे, यह कहानी है। मगर यह कहानी नहीं, सच्ची घटना है। इसमें झूठ ज़रा भी नहीं। इसे सुनकर आप खुश होंगे। आपको अचरज होगा। आप उछल पड़ेंगे। मैं मामूली हिन्दी जानता हूँ, पर मैंने बहुत किताबें नहीं पढ़ीं। आप रात-दिन पढ़ते रहते हैं।

परन्तु मुझे विश्वास है, ऐसी घटना आपने भी कम पढ़ी होगी।

मैं मन लगाकर सुनने लगा। धोबीने कहा—

२

मैं धोबी हूँ। मेरा बाप भी धोबी था। हम उन दिनों लाहौरहीमें रहते थे। पर आजका लाहौर वह लाहौर नहीं। हम उस ज़मानेमें जहाँ कपड़े धोया करते थे, वह घाट अब खुश्क हो चुका है। रावी नदी दूर चली गई है, और उसके साथ ही वह दिन भी दूर चले गए हैं। भेद केवल यह है कि रावी थोड़ी दूर जाकर नज़र आ जाती है मगर वह ज़माना कहीं दिखाई नहीं देता। भगवान जाने, कहाँ चला गया है!

मेरी उम्र उन दिनों सात-आठ सालकी थी। चारों ओर अकालका शोर मच रहा था। ऐसा अकाल इससे पहले किसीने न देखा था। लगातार अढ़ाई साल वर्षा न हुई। किसान रोते थे। तालाब, नदी, नाले सब सूख गए। पानी सिवाय आँखोंके कहीं नज़र न आता था। मुझे वे दिन आज भी कलकी तरह याद हैं, जब हम लंगोट लगाए मुँह काले कर बाज़ारोंमें डंडे बजाते फिरते थे कि शायद इसी तरह वर्षा होने लगे। मगर वर्षा न हुई। लड़कियाँ गुड़ियाँ जलाती थीं, और उनके सिरपर खड़े होकर छाती कूटती थीं। पानी बरसानेकी यह विधि उस युगमें बड़ी कारगर समझी जाती थी, लेकिन उस समय इससे भी कुछ न बना। मुसलमान मसजिदोंमें नमाज़ पढ़ते, हिन्दू मन्दिरोंमें पूजा करते, सिक्ख गुरुद्वारोंमें ग्रन्थ साहबका पाठ करते। मगर वर्षा न होती थी। दुनिया भूखों मरने लगी। बाज़ारोंमें रौनक न थी; दुकानोंपर ग्राहक न थे, घरोंमें

अनाज न था। और सबसे बुरी दशा जाटोंकी थी। मेरा बाबा कहता था, उस समय उनके चेहरोंपर सुर्खी न थी, आँखोंमें चमक न थी, शरीरपर मांस न था। सबकी आँखें आकाशकी ओर लगी रहती थीं। मगर वहाँ दुर्भाग्यकी घटाएँ थीं, पानीकी घटाएँ न थीं। अनाज रुपयेका बीस सेर बिकने लगा।

मैंने आश्चर्यसे पूछा—बीस सेर?

"जी हाँ, बीस सेर! उस समय यह भी महँगा था। आज-कल रुपयेका चार सेर बिकने लगे, तो भी बाबू लोग अनुभव नहीं करते मगर उस समय यह दशा न थी। मेरे घरमें एक मैं था, एक मेरा बूढ़ा बाबा, एक विधवा माँ, दो बहनें। इन सबका ख़र्च चार-पाँच रुपये महिनेसे अधिक न था।"

मैंने बात काटकर पूछा—फिर?

"हाँ तो फिर क्या हुआ, अनाज बहुत महँगा हो गया। लोग रोने लगे। अन्तमें यहाँतक नौबत आ पहुँची कि हमारे घरमें खानेको कुछ न रहा। ज़ेवर-बरतन सब बेचकर खा गए। केवल तनके कपड़े रह गए। सोचने लगे, अब क्या होगा! मेरा बाबा,—भगवान उसे स्वर्गमें जगह दे, बड़ा हँसमुख आदमी था। हर समय फूलकी तरह खिला रहता था। प्रायः कहा करता था, जो संकट आए, हँसकर काटो। रोनेसे संकट कम नहीं होता, बढ़ता है। मैंने सुना है, मेरे बापके मरनेपर उसकी आँखसे आँसूका बूँद न गिरा था। मगर इस समय वह भी रोता था। कहता था, कैसी तबाही है, बाल-बच्चे सामने भूखों मरते हैं और मैं कुछ कर नहीं सकता! यहाँतक कि कई दिन हमने वृक्षोंके पत्ते उबालकर खाए।

एक दिनकी बात है। बाबा आँगनमें बैठा हुक्का पीता था, और आकाशकी तरफ़ देखता था। मैंने कहा—बाबा, अब नहीं रहा जाता। कहींसे रोटीका टुकड़ा ला दो। पत्ते नहीं खाए जाते।

बाबाने ठण्डी साँस भरी और कहा—अब प्रलयका दिन दूर नहीं।

मैं—प्रलय क्या होता है?

बाबा—जब सब लोग मर जाते हैं।

मैं—तो क्या अब सब लोग मर जाएँगे?

बाबा—और क्या बेटा! जब खानेको न मिलेगा, तब मरेंगे नहीं तो और क्या होगा?

मैं—बाबा! मैं तो न मरूँगा। मुझे कहींसे रोटी मँगवा दो। बहुत भूख लगी है।

बाबाकी आँखोंमें आँसू आ गए। भर्राई हुई आवाज़से बोला—ऐसा समय कभी न देखा था। तुम वृक्षोंके पत्तोंसे उकता गए हो। गाँवके लोग तो मेंढक और चूहेतक खा रहे हैं।

मैं—बाबा, ऐसी चीज़ें वे कैसे खा लेते हैं?

बाबा—पेट सब कुछ करा लेता है।

मैं—पर ये चीज़ें बड़ी बुरी हैं।

बाबा—इस समय कौन परवा करता है भई!

मैं—उनका जी कैसे मानता होगा?

बाबा—भगवान किसी तरह यह दिन निकाल दे।

मैं—बाबा, मेह क्यों नहीं बरसता?

बाबा—हमारी नीयतें बदल गई हैं। वर्ना ऐसा समय कभी देखा न था। आदमी आदमीके लहूका प्यासा हो रहा है। हर एककी

दृष्टिमें लाली है। मानो हर आँखमें खून है, पानी नहीं है। तुम अजान हो, जाओ, कहींसे माँग लाओ, शायद कोई दाता दया करके तुम्हें रोटीका टुकड़ा दे दे।

मैं—तो जाऊँ।

बाबा—भगवान अब मौत दे दे! ग़रीब थे, पर किसीके सामने हाथ तो न फैलाते थे।

३

मैं भूखसे मर रहा था, रोटी माँगनेको निकल पड़ा। मेरा विचार था, अकाल शायद ग़रीबोंके यहाँ ही है। मगर बाहर निकला, तो सभीको ग़रीब पाया। उदास सब थे, खुश कोई भी न था। मैं बहुत देर तक इधर उधर माँगता फिरा। मगर किसीने रोटी न दी। मैं निराश होकर घरको लौटा, पर पाँव मन मनके भारी हो रहे थे।

सहसा एक जगह लोगोंका समूह दिखाई दिया। मैं भी भागकर चला गया। देखा, सरकारी आदमी मुनादी कर रहा है, और लोग उसके इर्द गिर्द खड़े खुश हो रहे हैं। मैं हैरान रह गया। मैं समझ न सकता था कि उनके खुश होनेका कारण क्या है। थोड़ी देर बाद मालूम हुआ, महाराज रणजीतसिंहने शाही क़िलेमें अनाजकी कोठड़ियाँ खुलवा दी थीं कि जिस किसी ग़रीबको जरूरत हो, ले जाए। दाम न लिया जाएगा। लोग महाराजकी इस उदारतापर हैरान रह गए। कहते थे, ये आदमी नहीं देवता हैं। मुसलमान कहते थे, अब खुदाकी ख़लक़त भूखों न मरेगी। खुदा नहीं सुनता, महाराज तो सुनता है! ख़लक़तके लिए राजा ही ख़ुदा है। एक आदमी कह रहा था, महाराजने आदमी बाहर भेजे हैं, जितना अनाज

मिल सके खरीद लाओ। मेरी प्रजा मेरी सन्तान है, मैं उसे भूखों न मरने दूँगा।

दूसरा आदमी बोला—मगर महाराज पहले क्या सो रहे थे? यह विचार पहले क्यों न आया, अब क्यों आया है?

पहले आदमीने उत्तर दिया—महाराज सोते नहीं थे, जागते थे। हर समय पूछते रहते थे कि अब अनाजका क्या भाव है, अब लोगोंका क्या हाल है। कल तक यही पता था कि अनाज महँगा है। आज समाचार पहुँचा कि बाज़ारमें अनाजका दाना भी नहीं मिलता। महाराज घबरा गए कि अब क्या होगा? आख़िर उन्होंने आदमी बाहर भेज दिए कि जितना अनाज मिल सके ख़रीद लाओ। मैं लोगोंमें मुफ़्त बाँटूँगा। मेरे कोषमें रुपया रहे या न रहे, मगर लोग बच जाएँ।

एक हिन्दू बोला—इन्होंने तो कह दिया कि महाराज क्या पहले सोते थे? मालूम नहीं, महाराजोंको एककी चिन्ता नहीं होती, सबकी चिन्ता होती है।

दूसरा—भाई, मेरा यह मतलब थोड़ा ही था।

पहला—एक और बात भी है। महाराजने बाहरके क़िलेदारोंको भी यही आज्ञा भेजी है।

दूसरा—राजा हो, तो ऐसा हो।

तीसरा—कोई और होता तो कहता, वर्षा नहीं हुई तो इसमें मेरा क्या दोष है? मेरे राज-महलमें सब कुछ है।

दूसरा—इस समाचारसे मरते हुए लोगोंमें जान पड़ जाएगी।

तीसरा—आज शहरकी दशा देखना।

पहला—किसीकी आँखमें चमक न थी।

दूसरा—ऐसा अंधेर कभी न हुआ था।

तीसरा—पर अब परमेश्वरने सुन ली।

मैं वहाँसे चला तो ऐसा .खुश था जैसे कोई अनमोल चीज़ पड़ी मिल गई हो। कुछ देर संयम करके मैं धीरे धीरे चला, फिर दौड़ने लगा। डरता था, कि यह शुभ-समाचार घरमें मुझसे पहले न पहुँच जाए। मैं चाहता था, घरके लोग यह खबर मुझीसे सुनें। गोलीके सदृश भागा जाता था, मगर घरके पास पहुँचकर गति कम कर दी और धीरे धीरे घरमें दाखिल हुआ। मेरा बाबा उसी तरह सिर झुकाये बैठा था। मेरा हृदय .खुशीसे धड़कने लगा—वह अभी तक न जानता था।

मुझे खाली हाथ देखकर बाबाने ठण्डी साँस भरी और सिर झुका लिया। मैंने जाकर बाबाका हाथ पकड़ लिया, और उसे ज़ोरसे घसीटता हुआ बोला—उठो, चादर लेकर चलो, महाराजने मुनादी करा दी है। अनाज मुफ्त मिलेगा।

मेरी मा, मेरी बहनें, मेरा बाबा सब चौंक पड़े। उनको मेरे कहनेपर विश्वास न हुआ। सिर हिलाते थे, और कहते थे—बच्चा है। किसीने मज़ाक किया होगा। यह सच समझ बैठा है। भला महाराज सारे शहरको अनाज मुफ्त कैसे दे देंगे? बहुत कठिन है।

मगर मैंने कहा—मैंने मुनादी अपने कानोंसे सुनी है। यह हँसी नहीं है। लोग सुनते थे, और .खुश होते थे। तुम चादर लेकर मेरे साथ चलो।

मेरा बाबा चादर लेकर मेरे साथ चला। उसको अभी तक संदेह था कि यह हँसी है। मगर, बाज़ारमें आकर देखा, तो हज़ारों लोग उधर ही जा रहे थे। अब उसको मेरी बातपर विश्वास हुआ।

क़िलेमें पहुँचे, तो वहाँ आदमी ही आदमी थे। पर किसी अमीरको अन्दर जानेकी आज्ञा न थी। फ़ाटकपर सिपाही खड़े थे। वे जिसके कपड़े सफ़ेद देखते उसे रोक लेते। कहते, यह अनाज ग़रीबोंकी सहायताके लिए है, अमीरोंके घर तो अब भी भरे हुए हैं। यह गरीबोंका लंगर था, अमीरोंका भोज न था। मेरी इतनी उमर हो गई है। मैंने अमीरोंके लिए सब दर खुले देखे हैं। उनको कहीं रोक-टोक नहीं होती। पर वहाँ अमीर खड़े मुँह ताकते थे, और उनकी कोई परवा न करता था। हम ग़रीब थे, हमें किसीने नहीं रोका। हम अन्दर चले गए। वहाँ देखा कि सैकड़ों सरकारी आदमी तराज़ू लिए बैठे हैं, और तोल तोलकर २०-२० सेर अनाज सबको देते जाते हैं। मगर हर घरमें एक ही आदमीको देते थे, दूसरोंको लौटा देते थे। लोग बहुत थे, आगे बढ़ना आसान न था। मैं छोटा था, मेरा बाबा बूढ़ा था, और हमारे साथ कोई जवान आदमी न था। हमने कई आदमियोंसे मिन्नत की कि हमें भी अनाज दिलवा दो, मगर उस आपा-धापीके समय किसीकी कौन सुनता है। मेरे बाबाने दो-चार बार आगे बढ़नेका यत्न किया, मगर दोनों बार धक्के खाकर बाहर आ गया। तब मैं और मेरा बाबा दोनों एक तरफ़ खड़े हो गए, और अपनी बेबसीपर कुढ़ने लगे।

४

सन्ध्याके समय जब अँधेरा हो गया, तब शंखके बजनेकी आवाज़ सुनाई दी। इसके साथ ही अनाज देनेवालोंने अनाज देना बन्द कर दिया। हुक्म हुआ, बाक़ी लोग कल आकर ले जायँ। लेकिन अगर कोई दुबारा आ गया तो उसकी ख़ैर नहीं, महाराज खाल उतरवा

लेंगे। लोग निराश हो गए, पर क्या करते, धीरे धीरे सारा आँगन खाली हो गया। हम कैसे चले जाते? कई दिनसे भूखे मर रहे थे। दोनों रोने लगे। बाबा बोला—बेटा, हम कैसे अभागे हैं! नदीके किनारे आकर भी प्यासे लौट रहे हैं! जो भाग्यवान् थे वे झोलियाँ भरकर ले गए। हम खड़े देखते रहे। अब खाली हाथ लौट जाएँगे।

मैं—बाबा, उनसे कहो, हमें दे दें। हम बहुत भूखे हैं।

बाबा—कौन सुनेगा? चलो घर चलें। अनाज न मिलेगा, गालियाँ मिलेंगी।

मैं—तुम कहो तो सही।

बाबा—बेटा, तुम कैसी बातें करते हो। ये लोग अब न देंगे, कल फिर आना पड़ेगा।

मैं—तो आज क्या खाएँगे?

बाबा—ग़रीबोंके लिए ग़मके सिवा और क्या है? आजकी रात और सब्र करो।

मैं—बाबा, मैं तो न जाऊँगा। कहो, शायद दे दें।

बाबा—तुम पागल हो! क्या मैं भी तुम्हारे साथ पागल हो जाऊँ?

इतनेमें एक सरदार आकर हमारे पास खड़ा हो गया, और बोला—अब जाते क्यों नहीं? कल आ जाना, आज अनाज न मिलेगा।

बाबा—( ठण्डी साँस भरकर ) जाते हैं सरकार!

इस बेबसीसे उन सरदार साहबका दिल पसीज गया, ज़रा ठहरकर बोले—तुम कौन हो?

बाबा—धोबी हैं।

सरदार—कल न आ सकोगे?

बाबा—आनेको तो सिर आँखोंसे आएँगे। पर ग़रीब आदमी हैं। मैं बूढ़ा हूँ, यह अभी बच्चा है। भीड़में पता नहीं कल भी अवसर मिले, न मिले। आज मिल जाता तो रात पीसकर खा लेते।

सरदार—तुम्हारे यहाँ कोई जवान आदमी नहीं है?

बाबा—नहीं सरकार, इस बालकका बाप था, वह भी मर गया।

सरदार—तो कल आना कठिन है तुम्हारे लिए?

मैं—सरकार, आज ही दिला दें।

सरदार—( हँसकर ) आओ आज ही दिला दूँ।

मैं—बाबा कहता था, आज न देंगे।—क्यों बाबा?

सरदार साहब हँसने लगे, मगर मेरे बाबाने मुझे इशारा किया कि चुप रहो। मैं चुप हो गया। सरदार साहबने कहा—आओ तुम्हें दिला दूँ।

हम सरदार साहबके पीछे पीछे चले। उन्होंने अनाजके ढेरके पास पहुँचकर एक आदमीसे कहा—इस बुड्ढेको बीस सेर गेहूँ दे दो।

वह आदमी मेरे बाबासे बोला—चादर फैला दो।—और गेहूँ तोलने लगा।

मेरा बाबा बोला—सरकार, अब फिर कब मिलेगा?

सरदार—अगले सप्ताह।

बाबा—हम कई दिनसे भूखों मर रहे हैं।

सरदार—( हँसकर ) तो और क्या चाहते हो?

बाबा—सरकार, कहते हुए भी शरम आती है, क्या कहूँ?

सरदार—नहीं, कह दो। कोई बात नहीं।

बाबा—बीस सेर और दिला दें तो बड़ी कृपा हो। आपकी जानको दुआएँ देता रहूँगा।

सरदार—बड़े लोभी हो।

बाबा—सरदार साहब, पेट माँगता है तब जीभ खुलती है। नहीं हम ऐसे बेग़ैरत कभी न थे।

सरदार—अगर इसी तरह तमाम लोग करें तो कैसे पूरा पड़े?

बाबा—सरकार, राजाके महलमें मोतियोंकी क्या कमी है? नहीं हो तो न दें। फिर द्वारपर आ पड़ेंगे। महाराजने इस ख़ैरातसे लोगोंके दिल मोह लिए हैं। शहरमें बड़ा यश हो रहा है।—( मुझसे ) बेटा, नमस्कार कर। उन्होंने हमें बचा लिया। नहीं तो रात रोते कटती।

मैं—( आगे बढ़कर ) नमस्कार!

सरदार—( मुस्कराकर ) जीते रहो बेटा! तुम्हारा क्या नाम है?

मैं—जग्गो!

सरदार—अब अनाज मिल गया ना, जाओ रोटियाँ पकाकर खाओ।

मैं—सरकार, बीस सेर और दिला दें।

सरदार—अरे! तू तो बाबासे भी लोभी निकला।

मैं—नहीं सरकार, बीस सेर और दिला दें।

सरदार—( अनाज तोलनेवालेसे ) बीस सेर और तोल दे। बूढ़ा बाबा बार बार कैसे आएगा?

बीस सेर और मिल गया।

सरदार—बाबा, अब तो ख़ुश हो गए?

बाबा—वाह गुरु आपका यश दूना करे।

सरदार—महाराजकी जानको दुआ दो। यह सब उनकी कृपा

है, नहीं तो लोग भूखों मर जाते। और सच पूछो तो यह उनका धर्म था। न करते तो पापके भागी बनते, राजा प्रजाका पिता होता है।

बाबा—सच है सरकार। महाराज ऋषि हैं।

सरदार—ऋषि तो क्या होंगे। आदमी बनें तो यह भी बड़ी बात है।

अब तक सब तोलनेवाले आदमी जा चुके थे। क़िलेमें हमीं थे, और कोई न था। सरदार साहब बोले—अब उठाकर ले जाओ।

ग़रीब दावतमें जाकर खाता बहुत है, यह नहीं सोचता कि पचेगा या नहीं। बाबाने भी अनाज ले बहुत लिया अब उठाना मुश्किल था। क्या करे क्या न करे। उस समय सिक्खोंका वही रोब था जो आज अँगरेज़ोंका है। बाबा सहम कर बोला—सरदार साहब, गठरी भारी है। कोई सिरपर रख दे तो ले जाऊँ।

सरदार साहबने गठरी उठाकर मेरे बाबाके सिरपर रख दी।

बाबा दो कदम चलकर गिर गया।

सरदार साहब बोले—क्यों भाई, इतना अनाज क्यों बँधवा लिया जो उठाये नहीं उठता? बीस सेर लेते तो यह तकलीफ़ न होती। लोभ करते हो, अपनी देहकी ओर नहीं देखते। जाओ, अपने किसी आदमीको बुला लाओ। तुमसे न उठेगा।

मेरे बाबाने आह भरी, और कहा—सरकार मेरी सहायता कौन करेगा?

सरदार साहबने कुछ देर सोचा, फिर वह गठरी अपने सिरपर उठाकर चलने लगे। हम दंग रह गए। हमारे शरीरके एक एक

अंगसे उनके लिए दुआ निकल रही थी। हम सोचते थे, यह आदमी नहीं, देवता है।

५

यहाँ पहुँचकर धोबी रुक गया। कहानीने बहुत मनोरंजक रूप धारण कर लिया था। मैं इसका आगेका भाग सुननेको अधीर हो रहा था। मैंने जल्दीसे पूछा—क्यों भाई धोबी, फिर क्या हुआ?

धोबीने ऊपरकी तरफ इस तरह देखा, जैसे कोई खोई वस्तुको खोज रहा हो और फिर दीर्घ साँस लेकर बोला—जब हम घर पहुँचे और सरदार साहब अनाजकी गठरी हमारे आँगनमें रखकर लौटे तो मैं और मेरा बाबा दोनों उनके साथ बाज़ार तक चले आए। मेरा बाबा बार बार कहता था, इसका फल आपको वाह-गुरु देंगे। मैं इसका बदला नहीं दे सकता। एकाएक उधरसे कुछ फ़ौजी सिक्ख निकल आए। वे सरदार साहब जहाँ खड़े थे, वहाँ रोशनी थी। फ़ौजियोंने उनको पहचान लिया, और तलवारें निकालकर सलाम किया। यह देखकर मेरा बाबा डर गया। सोचा, यह कौन है? कोई बड़ा ओहदेदार होगा, वर्ना ये लोग इस प्रकार सलाम न करते!

जब सरदार साहब चले गए तब मेरा बाबा उन फ़ौजियोंके पास पहुँचा, और पूछा—यह कौन थे?

उनमेंसे एकने मेरे बाबाकी तरफ़ आश्चर्यसे देखा, और जवाब दिया—तुम नहीं जानते? यह हमारे महाराज थे।

बाबा चौंक पड़ा। उसकी आँखें खुली रह गईं। उसके मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकला।

यह महाराज थे! वही महाराज जिनकी आँखके इशारेपर फ़ौजोंमें

हलचल मच जाती थी। जो अपने युगके सबसे बड़े राजा थे। जिन के सामने अभ्युदय हाथ बाँधता था। आज वे एक धोबीके घर गेहूँकी गठरी छोड़ने आए हैं। यह सच्चे महाराज हैं, इनका राज्य दिलोंपर है।

उस रात हमें नींद न आई। सारा घर जागता था, और महाराजके लिए दुआ माँगता था। दूसरे दिन बड़े ज़ोरकी वर्षा हुई।

यह कहानी सुनाकर धोबी चुप हो गया। मेरे रोएँ खड़े हो गए। आँखोंमें पानी भर आया। आज वह समय कहाँ चला गया? आज ऐसे राजा लोग क्यों नहीं नज़र आते? आज उनको भ्रमणका शौक़ है, विषय-वासनाका चाव है, परन्तु अपनी प्रजाके हित-अहितका ध्यान नहीं।

मैंने धोबीकी तरफ़ देखा, उसकी भी आँखें सजल थीं; मैंने ठण्डी साँस भरी।

धोबीने कपड़े गिनकर कहा—बाबूसाहब, लिखिए, चौदह पायजामे, बीस कमीज़ें।

मैंने कापी उठा ली, और लिखने लगा।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**मन लगाकर**—कान लगाकर, ध्यान जमाकर, With full Attention.
**रावी**—लाहौरके पास एक नदी है; River Ravi.
**अकाल**—क़हत, ख़ुश्क-साली; Famine.
**कारगर**—सफल, कामयाब, Successful.
**समूह**—जमाव, भीड़; Crowd, Assembly.
**ख़लक़त**—प्रजा, लोग, जनता, People.
**मज़ाक**—हँसी, ठट्ठा, मख़ौल; Joke.
**दुआ**—आशीर्वाद, असीस; Blessings, Good wishes.
**अभ्युदय**—इक़बाल, बढ़ती, तरक्क़ी; Rise, Prosperity.

---

# घरसे निकलके देखो

लेखक—**सर शेख़ अबदुल क़ादिर**

शेख़ अबदुल क़ादिर उर्दूके माने हुए लेखक हैं। उर्दूके सर्वोत्तम मासिक-पत्र 'मख़ज़न'का आप ही सम्पादन करते थे। यह पत्र अपने दिनोंमें एक अजीब चीज़ था। शेख़ साहबने इस पत्रके वसीलेसे कई आदमियोंको अव्वल दरजेका लेखक बना दिया। अफ़सोस है, आपने बैरिस्टरीमें फँसकर इस पत्रको छोड़ दिया।

सफ़रमें ज़फ़र है, यह बात पहले भी सच थी, आज भी सच है। बल्कि पहले कम थी, अब ज़्यादा। किसी बड़े देशका नाम लो जो इसके लाभसे बेख़बर हो। दुनियाके व्यापारका विस्तार इसी उसूलपर खड़ा है।

जरमनी आजकल कला-कौशलके क्षेत्रमें अव्वल दरजेपर समझा जाता है। क्या इसका कारण जरमनोंका पक्षपात है? इसमें शक नहीं, कि वे अपने मालसे बढ़कर किसीके मालको नहीं समझते। दूसरे देशोंकी बनी हुई चीज़ें अगर जरमनीमें राह पानेकी कोशिश करें, तो वहाँकी गवर्नमेंट उन चीज़ोंपर भारी कर लगाती है, ताकि वे चीज़ें देशी चीज़ोंके सामने न ठहर सकें। मगर यह वहाँके व्यापारकी उन्नतिका एक कारण है, और शायद यह कहना भूल न होगी कि गौण कारण है। मुख्य कारण बाहरका व्यापार है। दुनियाका कौन-सा कोना है जहाँ जरमन माल नहीं पहुँचता? चीनमें इसकी खपत है, ईरानमें इसकी माँग है, अफ़्रीकाकी मंडियाँ यह घेरे हुए है, और हिन्दुस्तानके बाज़ारोंमें तो यह

अँगरेज़ी मालसे भी बढ़कर बिकता है। यहाँ तक कि इंगलिस्तान ख़ुद बड़ा व्यापारी देश होनेपर भी जरमन व्यापारकी लूट-खसूटसे बच नहीं सकता, और लंदनके बाज़ारोंमें लाखोंका माल जरमनीसे आया हुआ बिकता है। अमरीका भी इस क्षेत्रमें किसीसे कम नहीं। और इंगलिस्तान भी अव्वल दरजेका व्यापारी देश है। इसके सिवा यूरोपके लगभग सारे देश इस व्यापारी लूटमें, जो दुनियामें मच रही है, शामिल हैं।

एशियामें जापानहीने यह गुर सीखा है, और जापानी चीज़ें भी इधर उधर फैलती जाती हैं। अब हिन्दुस्तानकी बारी है। हाथके काममें अब भी हमारा देश किसीसे पीछे नहीं। अभी कलकी बात है, हिन्दुस्तानका माल यूरोपकी दूकानोंमें बिकता था। मगर अब मशीनका युग आ गया है और व्यापारकी इस लड़ाईमें जो मशीनका मुक़ाबिला हाथसे करना चाहे, उस क़ौमका वही हाल होगा जो युद्ध-क्षेत्रमें तोपका सामना तीर-कमानसे और बंदूक़का सामना तलवारके साथ करनेसे होता है। पर, समय आ गया है कि हिन्दुस्तान जागे, और उसके साथ हिन्दुस्तानवाले दुनियाकी व्यापारी जातियोंमें बराबरीका स्थान लें। इसका आरंभ तो पहले घरकी ख़बर लेनेसे ही होगा। अर्थात्, हम अपनी ज़रूरतकी चीज़ें अपने कारख़ानोंसे लें। मगर हमारा मक़सद यही होना चाहिए कि हमारा माल पहले ज़मानेकी तरह फिरसे संसार-भरमें बिकने लगे। बेशक मंज़िल दूर है, और राहमें कठिनाइयाँ भी बहुत हैं, मगर इसे आँखोंसे ओझल न होने देना चाहिए।

सवाल उठता है कि इस उन्नतिके उपाय क्या हैं? उपाय तो कई हैं, और सब अपनी अपनी जगह ज़रूरी हैं। मगर सबसे अच्छा और बड़ा उपाय मुझे यह मालूम होता है कि हम दूसरे देशोंमें फैल

जाएँ। व्यापारकी तालीमके लिए सफ़रकी ज़रूरत है। व्यापारियोंसे सम्बन्ध बढ़ानेके लिए सफ़रकी ज़रूरत है। मगर इनके सिवाय कई बातें ऐसी भी हैं, जिनका पता विदेशमें जाकर ही लगता है। दूसरे लोगोंके रस्म-रिवाज देखनेसे आदमी उदार होता है, और उसे कई तरहके सुधारोंकी बातें सूझती हैं, और हठ-धर्मी परे हट जाती है। मगर यह ज़रूरी है कि जो लोग सफ़र करें उनमें सफ़रसे लाभ उठानेकी लियाक़त हो, और उनमेंसे अधिक संख्या ऐसे लोगोंकी हो जो अपने सफ़रका ख़र्च सफ़रहीसे निकालें।

अब तक जो लोग सफ़रको जाते रहे हैं वह या तो विद्यार्थी थे या सैरके शौक़ीन। ऐसे लोगोंकी संख्या जो व्यापार बढ़ानेके लिए सफ़रको निकले हों, अभी बहुत कम है। यद्यपि यह कम संख्या भी इतनी कम नहीं।

मेरा मतलब सफ़रसे केवल यूरोपका सफ़र नहीं, बल्कि आम सफ़र है। सफ़र चीनका हो या जापानका, रूमका हो या ईरानका; सभ्यताके दावेदार यूरोपका हो, या सभ्यताके शिकार अफ़्रीकाका; सबसे तालीम मिल सकती है, अगर कोई मेहनत और योग्यताकी पूँजी लेकर निकले और धीरजका आँचल न छोड़े।

कलकत्ता और बम्बई और हिंदुस्तानके कई बड़े बड़े शहरोंमें सैकड़ों चीनी कारीगर ऐसे हैं जो जूते बना बनाकर रुपया कमा रहे हैं। क्या इसके मुक़ाबिलेमें चीनके किसी शहरमें भी हिन्दुस्तानी कारीगरोंकी इतनी संख्या मौजूद है?—नहीं। चाहिए तो यह था, कि हर अँगरेज़के जवाबमें जो हिन्दुस्तानमें तिजारत करके रुपया कमा रहा है, एक भारतीय सौदागर इंगलिस्तानमें रुपया कमा रहा हो। हर फ़्रांसीसी व्यापारीके जवाबमें एक हिन्दुस्तानीकी दूकान फ़्रांसमें हो।

ईरान व्यापारके लिए बड़ी भारी मंडी है। जब दूसरे लोग दूर दूरसे आकर वहाँसे रुपया कमा सकते हैं, तो हिन्दुस्तानवाले, जो पास रहते हैं, क्यों सोते रहें?

रूम हमसे बहुत दूर भी नहीं, और मुसलमानोंका उससे सम्बन्ध भी गाढ़ा है। वहाँ हर जातिके व्यापारी हैं। नहीं हैं, तो हिन्दुस्तानी नहीं हैं।

अफ़्रीकाके कुछ हिस्सोंमें हिन्दुस्तानी जाने लगे थे, और काम भी उनका चल निकला था, और वहाँका हवा-पानी भी अच्छा था, मगर वहाँके हाकिमोंको हमारे इन इने-गिने आदमियोंकी सफलता भी काँटेकी तरह खटकी और उन्होंने उनके रास्तेमें कई तरहकी कठिनाइयाँ खड़ी कर दीं। अच्छा, यह द्वार बन्द है, तो बन्द ही सही और कई द्वार अफ़्रीकामें अभी खुले हैं। वहाँ घुस जाओ। और जो द्वार बंद हो, उसको भी खटखटाते रहो। कभी तो खुलेगा ही।

दक्षिण अमरीकामें कुछ हिन्दुस्तानी अच्छे हालमें हैं, और वहाँ उनका विरोध भी कम है। वहाँ कुछ और हिन्दुस्तानी क्यों न चले जाएँ? संयुक्त राज्य अमरीका इस समय सारी दुनियाको अपनी तरफ़ खींच रहा है। जरमनीसे, रूससे, फ़ान्ससे, इंगलिस्तानसे लोग वहाँ जाते हैं, और वहाँके शहरी बन जाते हैं। मालूम नहीं, अगर बहुतसे हिन्दुस्तानी वहाँ जाकर बसना चाहें, तो वह हमारा कैसा स्वागत करे। मगर अभी तक तो उसका सलूक हमारे विद्यार्थियों और उपदेशकोंके साथ अच्छा है। एक शायरने कहा है—

*बख़्त आज़माने निकलो, जंगल बसाने निकलो,*
*कड़ियाँ उठाने निकलो, जानें लड़ाने निकलो,*
*घरसे निकलके देखो, हिन्दोस्तानवालो!*

*दौलत कमाने निकलो, हिकमत उड़ाने निकलो,*
*मज़हब सिखाने निकलो, हर हर बहाने निकलो,*
*घरसे निकलके देखो, हिन्दोस्तानवालो !*

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**ज़फ़र**—जीत, सफलता, कामयाबी, Success, Victory
**शामिल**—शरीक, सम्मिलित, हिस्सेदार, To take part.
**माल**—चीज़ें, वस्तुएँ, Goods, Product.
**बराबरी**—समता, एक जैसा होना, Equality.
**मंज़िल**—जहाँ पहुँचना हो, उद्देश्य, Destination.
**पूँजी**—सरमाया, धन, Capital
**सौदागर**—व्यापारी, दूकानदार, Merchant.
**शायर**—कवि, Poet.
**बख़्त**—भाग्य, क़िसमत, तक़दीर, Luck
**कड़ियाँ उठाना**—कठिनाइयोंको सहना, और उनका मुक़ाबिला करना, To face difficulties.
**हिकमत उड़ाना**—दानाई सीखना, To steal away wisdom
**मज़हब**—धर्म, सप्रदाय, पन्थ, Religion
**गुर**—सिद्धान्त, रहस्य, Formula.

# छूत-छात

लेखक—**महात्मा गाँधी**

सन् १८६९ ईसवीमें पोरबन्दर ( गुजरात ) में जन्म लिया। बड़े हुए, तो बैरिस्टरी पास करके अफ्रीकामें बैरिस्टरी करने लगे। मगर जल्दी ही यह काम छोड़ दिया, और राजनीतिक क्षेत्रमें उतर आए। आज यह हिन्दुस्तानके सबसे बड़े नेता हैं। आपकी ज़बान गुजराती है, मगर 'हिन्दी-हिन्दुस्तानी' को भारतवर्षकी लोक-भाषा कहते हैं, और इसीका प्रचार करते हैं।

एक और रुकावट, जो हमारे स्वराज्यके रास्तेमें खड़ी है, छूत-छात है। इसका दूर करना उसी क़दर ज़रूरी है जिस क़दर कि हिन्दू-मुस्लिम एकताका क़ायम होना। यह सवाल सिर्फ़ हिन्दुओंसे ही ताल्लुक़ रखता है और हिन्दू तब तक स्वराज्यका कोई दावा नहीं कर सकते और न उसे पा सकते हैं जब तक कि वे अपने दलित भाइयोंको आज़ादी न दे दें। उनको दबाकर वे अपनी किश्ती ख़ुद डुबो बैठे हैं।

इतिहासकार हमें बताते हैं कि आर्य-जातिके आक्रमणकारियोंने हिन्दुस्तानके मूल-निवासियोंसे अगर ज़्यादा बुरा नहीं तो कमसे कम बिल्कुल वैसा ही सलूक किया जैसा कि अँगरेज आज हमारे साथ कर रहे हैं। अगर यह बात सचमुच ऐसी ही है तो हमने जो एक अछूत जाति ही दुनियामें बना डाली है, उसका यह बदला अपनी मौजूदा ग़ुलामीके रूपमें हमें मिला है। यह एक ईश्वरीय कोप ही हमपर हुआ है, जिसके कि हम बिल्कुल योग्य हैं। जितनी ही जल्दी हम इस कलंकको अपने सिरसे मिटा देंगे उतना ही अच्छा

हम हिन्दुओंके लिए होगा। लेकिन हमारे धर्माचार्य कहते हैं कि छूत-छात तो ईश्वरकी बनाई हुई है। मेरा दावा है कि मैं भी हिन्दू मज़हबका कुछ ज्ञान रखता हूँ। मैं निश्चयके साथ कहता हूँ कि धर्माचार्य इस बातमें ग़लतीपर हैं। यह कहना कि ईश्वरने मनुष्य जातिके किसी हिस्सेको अछूत बनाकर पैदा किया है, मानो ईश्वरकी शानपर धब्बा लगाना है। महासभाके हिन्दू-मेम्बरोंका यह काम है कि वे जितनी जल्दी हो सके इस दीवारको गिरा दें। वाइकोमके सत्याग्रही हमें इसका रास्ता दिखा ही रहे हैं। उनमें धीरज, हिम्मत और श्रद्धा है। जिस किसी आन्दोलनमें ये गुण पाये जायँ उसे दुनियामें कोई रोक नहीं सकता।

फिर भी मैं अपने हिन्दू भाइयोंसे कह देना चाहता हूँ कि वे उस लहरसे अपनेको बचावें जो कि इन दलित जातियोंको अपने राजनीतिक मतलब गाँठनेमें औजार बनानेकी ओर दिखाई देती है। छूत-छातका दूर करना हिन्दुओंके लिए एक प्रायश्चित्त है। जिस शुद्धिकी ज़रूरत है वह अछूतोंकी नहीं बल्कि ऊँची कहलानेवाली जातियोंकी है। कोई ऐब दुनियामें ऐसा नहीं है जो ख़ास तौरपर अछूतोंहीके अन्दर हो। मैला-कुचैलापन और तन्दुरुस्तीके नियमोंके ख़िलाफ़ आदतें केवल उन्हींके अन्दर नहीं हैं। अपनेको ऊँचा समझनेवाले हम हिन्दुओंका अभिमान ही हमें अपने दोषोंकी तरफ़से अन्धा बना देता है और बेचारे दलित, पीड़ित भाइयोंके दोषोंको राईका पहाड़ बना कर दिखाता है जिन्हें कि हम दबाते चले आये हैं और अब भी जिनकी गर्दनपर सवार रहते हैं।

जुदा जुदा राष्ट्रोंकी तरह जुदा जुदा धर्म भी इस वक्त कसौटीपर

चढ़ाये जा रहे हैं। ईश्वरीय कृपा और प्रकाशका दान किसी एक क़ौम या जातिके लिए नहीं है। वह बिना भेद-भाव उन सब बन्दोंको प्राप्त है जो कि उसके दरबारमें हाज़िर रहते हैं। उस जाति और उस मज़हबका नाम निशान दुनियासे मिटे बिना न रहेगा जो बेइन्साफ़ी, झूठ और पशु-बलपर जीना चाहता है। ईश्वर प्रकाश है, अन्धकार नहीं। वह प्रेम है, घृणा नहीं। वह सच है, झूठ नहीं। एक ईश्वर ही बड़ा है। हम उसके पाँवकी धूल हैं। आओ, हम सब मिलकर नम्र बनें और ईश्वरके छोटेसे छोटे जीवके भी इस दुनियामें रहनेके अधिकारको स्वीकार करें। श्रीकृष्णने फटे-पुराने चिथड़े पहने हुए सुदामाका वह सत्कार किया जो कि किसीका नहीं किया था। गोस्वामी तुलसीदासजीका कथन है—

*' दया धर्मका मूल है पाप-मूल अभिमान '*

स्वराज्य हमें चाहे मिले या न मिले, पर इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुओंको खुद अपने दिलकी शुद्धि करनी होगी। तभी वे वैदिक धर्मको जीती-जागती सूरतमें देखनेकी आशा कर सकेंगे।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**क़ायम**—स्थिर, निश्चित, Established, Firm.
**दलित**—दले हुए, दबाए हुए, Depressed, Suppressed.
**इतिहासकार**—इतिहास लिखनेवाला, Historian.
**कलंक**—धब्बा, कालिख, दाग़, Blot, Disgrace.
**धर्माचार्य**—धर्मका नेता, गुरु, Religious Leader
**आन्दोलन**—हलचल, तहरीक, Movement.

# दुनिया भी एक पुस्तक है

## पं० जवाहरलाल नेहरूका एक पत्र अपनी बेटीके नाम

पूर्वज काश्मीरके रहनेवाले थे, मगर आपका जन्म इलाहाबादमें सन् १८८९ में हुआ। अमीर बापके बेटे हैं, बचपन राजकुमारोंकी तरह गुज़रा। मगर जवान होते ही धन-दौलतके आरामको लात मार कर राजनीतिक मैदानमें उतर आए और बार बार क़ैद हुए। आज हिन्दुस्तान इनकी आवाज़पर सब कुछ करनेको तैयार है।

बेटी,

जब तुम मेरे पास होती हो, तो तुम मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देनेकी कोशिश करता हूँ। लेकिन अब तुम मसूरीमें हो और मैं इलाहाबादमें। हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए, मैंने इरादा किया है कि कभी कभी तुम्हें इस दुनियाकी और उन छोटे-बड़े देशोंकी जो इस दुनियामें हैं छोटी छोटी कहानियाँ लिखा करूँ। तुमने हिन्दुस्तान और इंग्लैण्डका कुछ हाल इतिहासमें पढ़ा है। लेकिन इंग्लैंड सिर्फ़ एक छोटा-सा टापू है और हिन्दुस्तान एक बहुत बड़ा देश है, फिर भी दुनियाका एक छोटा-सा हिस्सा है। अगर तुम्हें इस दुनियाका कुछ हाल जाननेका शौक़ है तो तुम्हें सब देशोंका और उन सब जातियोंका जो इसमें बसी हुई हैं, ध्यान रखना पड़ेगा,—केवल उस छोटेसे देशका नहीं जिसमें तुम पैदा हुई हो।

मुझे मालूम है कि इन छोटे छोटे ख़तोंमें मैं बहुत थोड़ी-सी बातें ही बतला सकता हूँ। लेकिन मुझे आशा है कि इन थोड़ी-सी बातोंको

भी तुम शौक़से पढ़ोगी और समझोगी कि दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आ रहते हैं हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियोंका हाल मोटी मोटी किताबोंमें पढ़ोगी। उसमें तुम्हें जितना आनन्द मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यासमें भी न मिला होगा।

यह तो तुम जानती ही हो कि यह धरती लाखों करोड़ों बरसकी पुरानी है, और बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियोंके पहले सिर्फ जानवर थे, और जानवरोंके पहले एक ऐसा समय था जब इस धरतीपर कोई जानदार चीज़ न थी। आज जब यह दुनिया हर तरहके जानवरों और आदमियोंसे भरी हुई है, उस ज़मानेका ख्याल करना भी मुश्किल है जब यहाँ कुछ न था। मगर विद्वानोंने, जिन्होंने इस बातको खूब सोचा और पढ़ा है, लिखा है कि एक ऐसा समय था जब यह धरती बेहद गर्म थी और इसपर कोई जानदार चीज़ नहीं रह सकती थी। और अगर हम उनकी किताबें पढ़ें, और पहाड़ों, जानवरोंकी पुरानी हड्डियोंको गौरसे देखें तो हमें मालूम होगा कि ऐसा समय ज़रूर रहा होगा।

तुम इतिहास किताबोंमें ही पढ़ सकती हो। लेकिन पुराने ज़मानेमें तो आदमी पैदा ही न हुआ था, किताबें कौन लिखता? तब हमें उस ज़मानेकी बातें कैसे मालूम हों? यह तो हो नहीं सकता कि हम बैठे बैठे हरएक बात सोच निकालें। अगर होता तो यह बड़े मज़ेकी बात होती, क्योंकि हम जो चीज़ चाहते सोच लेते, और सुन्दर परियोंकी कहानी गढ़ लेते। लेकिन जो कहानी किसी बातको देखे बिना ही गढ़ ली जाय वह कैसे ठीक हो सकती है?

मगर खुशीकी बात है कि उस पुराने ज़मानेकी लिखी हुई किताबें न

होनेपर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिनसे हमें उतनी ही बातें मालूम होती हैं जितनी किसी किताबसे होतीं। ये पहाड़ और समुद्र और सितारे और नदियाँ और जंगल और जानवरोंकी पुरानी हड्डियाँ और इसी तरहकी और भी कितनी ही चीज़ें वह किताबें हैं जिनसे दुनियाका पुराना हाल मालूम हो सकता है। मगर हाल जाननेका असली तरीक़ा यह नहीं है कि हम केवल दूसरोंकी लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसारकी पुस्तकको पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ोंको पढ़कर तुम थोड़े ही दिनोंमें उनके हाल जानना सीख जाओगी।

सोचो, कितनी मज़ेकी बात है! एक छोटा-सा रोड़ा जिसे तुम सड़कपर या पहाड़के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसारकी पुस्तकका छोटा-सा पन्ना हो, शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाय। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो।

कोई ज़बान,—उर्दू, हिन्दी या अँग्रेजी, सीखनेके लिए तुम्हें उसके अक्षर सीखने होते हैं। इसी तरह पहले तुम्हें प्रकृतिके अक्षर पढ़ने पड़ेंगे, तभी तुम उसकी कहानी उसके पत्थरों और चट्टानोंकी किताबसे पढ़ सकोगी। शायद अब भी तुम उसे थोड़ा थोड़ा पढ़ना जानती हो। जब तुम कोई छोटा-सा गोल चमकीला रोड़ा देखती हो, तो क्या वह तुम्हें कुछ नहीं बतलाता? वह कैसे गोल, चिकना और चमकीला हो गया और उसके खुरदरे किनारे या कोने क्या हुए?

अगर तुम किसी बड़ी चट्टानको तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डालो तो हर एक टुकड़ा खुरदरा और नोकीला होगा। यह गोल चिकने रोड़ेकी तरह बिलकुल नहीं होगा। फिर यह रोड़ा कैसे इतना चमकीला, चिकना और गोल हो गया? अगर तुम्हारी आँखें देखें और कान

सुनें तो तुम उसीके मुँहसे उसकी कहानी सुन सकती हो। वह तुमसे कहेगा कि एक समय, जिसे शायद बहुत दिन बीते हों, वह भी एक चट्टानका टुकड़ा था। ठीक उसी टुकड़ेकी तरह उसमें किनारे और कोने थे जिसे तुम बड़ी चट्टानसे तोड़ती हो। शायद वह किसी पहाड़के नीचे पड़ा रहा। तब पानी आया और उसे बहाकर छोटी घाटी तक ले गया। वहाँसे एक पहाड़ी नालेने ढकेल कर उसे एक छोटेसे दरियामें पहुँचा दिया। इस छोटे दरियासे वह बड़े दरियामें पहुँचा। इस बीचमें वह दरियाके पेंदेमें लुढ़कता रहा, उसके किनारे घिस गये और वह चिकना और चमकदार हो गया।

इस तरह वह कंकड़ बना जो तुम्हारे सामने है। इसी वजहसे दरिया उसे छोड़ गया और तुम उसे पा गईं। अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो वह छोटा होते होते अन्तमें बालूका एक ज़र्रा हो जाता और समुद्रके किनारे अपने भाइयोंसे जा मिलता जहाँ समुद्रका एक किनारा बन जाता जिसपर छोटे छोटे बच्चे खेलते और बालूके घरौंदे बनाते।

अगर एक छोटा-सा रोड़ा तुम्हें इतनी-सी बातें बता सकता है, तो पहाड़ों और दूसरी चीज़ोंसे, जो हमारे चारों तरफ़ हैं हमें और कितनी बातें मालूम हो सकती हैं!

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**टापू**—जज़ीरा, पानीसे घिरी हुई ज़मीन, Island.
**ख़त**—पत्र, चिट्ठी, Letter.
**धरती**—ज़मीन, भूमि, Earth.
**जानदार**—ज़िन्दा, जीती-जागती, Living.
**शर्त**—बदान, Condition.
**चट्टान**—शिलाखंड, Rock.
**खुरदरा**—सख़्त, जिसकी सतह साफ़ न हो, Rough.
**पैंदा**—तह, Bottom.

# मज़हबी दीवाने

लेखक—**स्व० मुन्शी प्रेमचंद**

वि. सं. १९३०—१९९४

असली नाम धनपतराय बी० ए०, उपनाम प्रेमचंद। काशीके वासी हिन्दीके सबसे बड़े क़हानी-लेखक। भाषा बड़ी रसीली और रोचक लिखते थे। उर्दूमें भी इनका बड़ा नाम है। 'सप्तसरोज,' 'नवनिधि,' 'प्रेम पचीसी,' 'मान-सरोवर,' 'सेवासदन,' 'प्रेमाश्रम,' 'रंगभूमि,' कायाकल्प, 'गोदान' इनकी मशहूर किताबें हैं। आपके पुत्र आजकल आपकी स्मृतिमें बनारससे 'हंस' नामक मासिक पत्र निकाल रहे हैं।

दुनियामें कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो किसीके नौकर न होते हुए सबके नौकर होते हैं। जिन्हें कुछ अपना ख़ास काम न होनेपर भी सिर उठानेकी फ़ुरसत नहीं होती। जामिद इसी तरहके मनुष्योंमें था। बिलकुल बेपरवाह; न किसीसे दोस्ती, न किसीसे दुश्मनी। जो ज़रा हँसकर बोला, उसका बे-दामका ग़ुलाम हो गया। बेकामका काम करनेमें उसे मज़ा आता था। गाँवमें कोई बीमार पड़े, वह रोगीकी सेवा-शुश्रूषाके लिए हाज़िर है। कहिए, तो आधी रातको हकीमके घर चला जाय, किसी जड़ी-बूटीकी तलाशमें मंज़िलोंकी ख़ाक छान आवे। मुमकिन न था कि वह किसी ग़रीबपर अत्याचार होते देखे और चुप रह जाय। फिर चाहे कोई उसे मार ही डाले, वह हिमायत करनेसे बाज़ न आता था। ऐसे सैकड़ों ही मौके उसके सामने आ चुके थे। कांस्टेबिलोंसे आये दिन उसकी छेड़छाड़ होती ही रहती थी।

इसीलिए लोग उसे बौड़म समझते थे। और बात भी यही थी। जो आदमी किसीका बोझ भारी देखकर, उससे छीनकर अपने सिर पर ले ले, किसीका छप्पर उठाने या आग बुझानेके लिए कोसों दौड़ा चला जाय, उसे समझदार कौन कहेगा? मतलब यह, कि उससे दूसरोंको चाहे कितना ही फायदा पहुँचे, अपना कोई उपकार न होता था; यहाँ तक कि वह रोटियोंके लिए भी दूसरोंका मुहताज़ था।

२

आखिर जब लोगोंने बहुत धिक्कारा कि क्यों अपना जीवन नष्ट कर रहे हो, तुम दूसरोंके लिए मरते हो, कोई तुम्हारा भी पूछनेवाला है? अगर एक दिन बीमार पड़ जाओ, तो कोई चुल्लू-भर पानी न दे; जब तक दूसरोंकी सेवा करते हो, लोग ख़ैरात समझकर खानेको देते हैं; जिस दिन आ पड़ेगी, कोई सीधे-मुँह बात भी न करेगा। तब जामिदकी आँखें खुलीं। बरतन-भाँड़ा कुछ था ही नहीं, एक दिन उठा, और एक तरफ़की राह ली।

दो दिनके बाद एक शहरमें जा पहुँचा। शहर बहुत बड़ा था। महल आसमानसे बातें करनेवाले। सड़कें चौड़ी और साफ़। मसजिदों और मन्दिरोंकी संख्या अगर मकानोंसे अधिक न थी, तो कम भी नहीं। देहातमें न तो कोई मसजिद थी, न कोई मन्दिर। मुसलमान लोग एक चबूतरेपर नमाज़ पढ़ लेते थे। हिन्दू एक वृक्षके नीचे पानी चढ़ा दिया करते थे।

नगरमें धर्मकी यह शोभा देखकर जामिदको बड़ा आनन्द हुआ। उसकी दृष्टिमें मज़हबका जितना सम्मान था उतना और किसी सांसारिक वस्तुका नहीं। वह सोचने लगा, ये लोग कितने ईमानके

पक्के, कितने सत्यवादी हैं! इनमें कितनी दया, कितनी समझ, कितनी सहानुभूति होगी! तभी तो खुदाने इन्हें इतना माना है! वह हर आने-जानेवालेको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखता और उसके सामने विनयसे सिर झुकाता था। यहाँके सभी प्राणी उसे देवता-जैसे मालूम होते थे।

घूमते घूमते साँझ हो गई। वह थककर एक मंदिरके चबूतरेपर जा बैठा। मंदिर बहुत बड़ा था, ऊपर सुनहला कलश चमक रहा था। जगमोहनपर संगमरमरके चौके जड़े हुए थे, मगर आँगनमें जगह जगह गोबर और कूड़ा पड़ा था। जामिदको गंदगीसे चिढ़ थी। मंदिरकी यह दशा देखकर उससे न रहा गया। इधर उधर निगाह दौड़ाई कि कहीं झाड़ू मिल जाय तो साफ़ कर दूँ; पर झाड़ू कहीं नज़र न आई। विवश होकर उसने अपने दामनसे चबूतरेको साफ़ करना शुरू कर दिया।

ज़रा देरमें भक्तोंका जमाव होने लगा। उन्होंने जामिदको चबूतरा साफ़ करते देखा, तो आपसमें बातें करने लगे—

"है तो मुसलमान!"

"मेहतर होगा।"

"नहीं, मेहतर अपने दामनसे सफ़ाई नहीं करता। कोई पागल मालूम होता है।"

"उधरका भेदिया न हो?"

"नहीं, चेहरेसे तो बड़ा ग़रीब मालूम होता है।"

"अजी, गोबरके लालचसे सफ़ाई कर रहा है। कोई भठियारा होगा।—(जामिदसे) गोबर न ले जाना बे, समझा! कहाँ रहता है?"

"परदेसी मुसाफ़िर हूँ साहब, मुझे गोबर लेकर क्या करना है ? ठाकुरजीका मन्दिर देखा, तो आकर बैठ गया। कूड़ा पड़ा हुआ था। मैंने सोचा, धर्मात्मा लोग आते होंगे; सफ़ाई करने लगा।"

"तुम तो मुसलमान हो न ?"

"ठाकुरजी तो सबके ठाकुरजी हैं,—क्या हिन्दू, क्या मुसलमान।"

"तुम ठाकुरजीको मानते हो ?"

"ठाकुरजीको कौन न मानेगा, साहब ? जिसने पैदा किया, उसे न मानूँगा, तो किसे मानूँगा ?"

भक्तोंमें सलाह होने लगी—

"देहाती है।"

"फाँस लेना चाहिए, जाने न पावे !"

३

जामिद फाँस लिया गया। उसका आदर-सत्कार होने लगा। एक हवादार मकान रहनेको मिला। दोनों वक्त उत्तम पदार्थ खानेको मिलने लगे। दो-चार आदमी हरदम उसे घेरे रहते। जामिदको भजन खूब याद थे। गला भी अच्छा था। वह रोज़ मन्दिरमें जाकर कीर्तन करता। भक्तिके साथ सुरीली आवाज़ भी हो, तो फिर क्या पूछना ? लोगोंपर उसके कीर्तनका बड़ा असर पड़ता। कितने ही लोग संगीतके लोभसे ही मन्दिरमें आने लगे। सबको विश्वास हो गया कि भगवानने यह शिकार चुनकर भेजा है।

एक दिन मन्दिरमें बहुत-से आदमी जमा हुए। आँगनमें फर्श बिछाया गया। जामिदका सिर मुड़ा दिया गया। नये कपड़े पहनाये गये। हवन हुआ। जामिदके हाथोंसे मिठाई बँटवाई गई। वह अपने

आश्रय-दाताओंकी उदारता और धर्म-निष्ठाका और भी क़ायल हो गया।—वे लोग कितने सज्जन हैं, मुझ-जैसे फटे हाल परदेसीकी इतनी ख़ातिर! इसीको तो सच्चा धर्म कहते हैं! जामिदको जीवनमें कभी इतना सम्मान न मिला था। यहाँ वही युवक, जिसे लोग बौड़म कहते थे, भक्तोंका सिरमौर बना हुआ था। सैकड़ों ही आदमी केवल उसके दर्शनोंको आते थे। उसकी प्रकांड विद्वत्ताकी कितनी ही कथाएँ प्रचलित हो गईं! पत्रोंमें यह समाचार निकला कि एक बड़े आलिम मौलवी साहबकी शुद्धि हुई है। सीधा-सादा जामिद इस सम्मानका रहस्य कुछ न समझता था। ऐसे धर्म-परायण प्राणियोंके लिए वह क्या कुछ न करता? वह नित्य पूजा करता, भजन गाता। उसके लिए यह कोई नई बात न थी। अपने गाँवमें भी वह बराबर सत्यनारायणकी कथामें बैठा करता था। भजन-कीर्तन किया करता था। अन्तर यही था कि देहातमें उसकी क़दर न थी। यहाँ सब उसके भक्त थे।

एक दिन जामिद कई भक्तोंके साथ बैठा हुआ कोई पुराण पढ़ रहा था, तो क्या देखता है कि सामने सड़कपर एक बलिष्ठ युवक माथेपर तिलक लगाये, जनेऊ पहने, एक बूढ़े दुर्बल मनुष्यको मार रहा है। बुड्ढा रोता है, गिड़गिड़ाता है, और पैरों पड़-पड़के कहता है कि महाराज, मेरा कुसूर माफ़ करो; किन्तु तिलकधारी युवकको उसपर ज़रा भी दया नहीं आती। जामिदका रक्त खौल उठा। ऐसा दृश्य देखकर वह शान्त न बैठ सकता था। तुरन्त कूद कर बाहर निकला, और युवकके सामने आकर बोला—इस बुड्ढेको क्यों मारते हो भाई? तुम्हें इसपर ज़रा भी दया नहीं आती?

युवक—मैं मारते मारते इसकी हड्डियाँ तोड़ दूँगा ।

जामिद—आख़िर इसने क्या क़ुसूर किया है? कुछ मालूम तो हो।

युवक—इसकी मुर्ग़ी हमारे घरमें घुस गई थी, और सारा घर गंदा कर आई!

जामिद—तो क्या इसने मुर्ग़ीको सिखा दिया था कि तुम्हारा घर गंदा कर आवे?

बुड्ढा—भाई, मैं तो उसे बराबर खाँचेमें ढाँके रहता हूँ। आज भूल हो गई। कहता हूँ, महाराज, क़ूसूर माफ़ करो; मगर नहीं मानते। हुज़ूर, मारते मारते अधमरा कर दिया।

युवक—अभी नहीं मारा है, अब मारूँगा,—खोदकर गाड़ दूँगा।

जामिद—खोदकर गाड दोगे भाई साहब, तो तुम भी यों न खड़े रहोगे, समझ गये? अगर फिर हाथ उठाया, तो अच्छा न होगा।

जवानको अपनी ताक़तका नशा था। उसने फिर बुड्ढेको चाँटा लगाया; पर चाँटा पड़नेके पहले ही जामिदने उसकी गर्दन पकड़ ली। दोनोंमें लड़ाई होने लगी। जामिद पाठा जवान था। युवकको पटकनी दी तो चारों खाने चित गिर गया। उसका गिरना था कि भक्तोंका झुण्ड, जो अबतक मंदिरमें बैठा तमाशा देख रहा था, लपक पड़ा और जामिदपर चारों तरफ़से चोटें पड़ने लगीं। जामिदकी समझमें न आता था कि लोग मुझे क्यों मार रहे हैं? कोई कुछ नहीं पूछता। तिलकधारी जवानको कोई कुछ नहीं कहता। बस, जो आता है, मुझीपर हाथ साफ़ करता है। आख़िर वह बेदम होकर गिर पड़ा। तब लोगोंमें बातें होने लगीं।

"दग़ा दे गया!"

"धत् तेरी ज़ातकी! इन म्लेच्छोंसे भलाईकी आशा न रखनी चाहिए। कौआ कौआहीके साथ मिलेगा। कमीना जब करेगा, कमीनापन। इसे कोई पूछता न था, मन्दिरमें झाड़ू लगा रहा था। देहपर कपड़ेका तार भी न था। हमने इसका इतना सम्मान किया, पशुसे आदमी बना दिया, फिर भी अपना न हुआ!"

"इनके धर्मका तो मूल ही यही है!"

जामिद रात-भर सड़कके किनारे पड़ा दर्दसे कराहता रहा। उसे मार खानेका दुःख न था। ऐसी तकलीफ़ें वह कितनी ही बार उठा चुका था। उसे दुःख और आश्चर्य केवल इस बातका था कि इन लोगोंने क्यों एक दिन मेरा इतना सम्मान किया, और क्यों आज बिना कारण ही मेरी दुर्गति की? इनकी वह सज्जनता आज कहाँ गई? मैं तो वही हूँ। मैंने कोई कुसूर भी नहीं किया। मैंने तो वही किया जो ऐसी दशामें सभीको करना चाहिए। फिर इन लोगोंने मुझपर क्यों इतना अत्याचार किया? देवता क्यों राक्षस बन गये?

वह रात-भर इसी उलझनमें पड़ा रहा। सबेरे उठकर उसने एक तरफ़की राह ली।

## ४

जामिद अभी थोड़ी ही दूर गया था कि वही बुड्ढा उसे मिला। उसे देखते ही वह बोला—कसम ख़ुदाकी, तुमने कल मेरी जान बचा दी। सुना, ज़ालिमोंने तुम्हें बुरी तरह पीटा। मैं तो मौक़ा पाते ही निकल भागा। अबतक कहाँ थे? यहाँ लोग रातहीसे तुमसे मिलनेके लिए अधीर हो रहे हैं। क़ाज़ी साहब रातहीको तुम्हारी तलाशमें निकले थे; मगर तुम न मिले। कल हम दोनों अकेले पड़

गए थे। दुश्मनोंने हमें पीट लिया। नमाज़का वक्त था, यहाँ सब लोग मसजिदमें थे; अगर ज़रा भी ख़बर हो जाती, तो एक हज़ार आदमी पहुँच जाते। तब आटे-दालका भाव मालूम होता! क़सम ख़ुदाकी, आजसे मैंने तीन मुर्गियाँ पाली हैं। देखूँ, पण्डितजी महाराज अब क्या करते हैं! कसम खुदाकी, क़ाज़ी साहबने कहा है; अगर वह लौंडा ज़रा भी बोले, तो तुम आकर मुझसे कहना। या तो बचा घर छोड़कर भागेंगे, या हड्डी-पसली तोड़कर रख दी जायगी।

जामिदको लिए हुए वह बुड्ढा क़ाज़ी जोरावरहुसैनके दरवाज़ेपर पहुँचा। क़ाज़ी साहब वज़ू कर रहे थे। जामिदको देखते ही दौड़कर गले लगा लिया, और बोले—भाई, तुम्हें आँखें ढूँढ़ रही थीं। तुमने अकेले इतने लोगोंके दाँत खट्टे कर दिये! क्यों न हो, मोमिनका खून है! काफ़िरोंकी हकीक़त क्या! सुना, सबके सब तुम्हारी शुद्धि करने जा रहे थे; मगर तुमने उनके सारे मनसूबे पलट दिये। इस्लामको ऐसे ही ख़ादिमोंकी ज़रूरत है। तुम्हीं जैसे दीनदारोंसे इस्लामका नाम रोशन है। ग़लती यही हुई कि तुमने एक महीने-भर तक सब्र नहीं किया। शादी हो जाने देते, तब मज़ा आता। एक नाज़नीन साथ लाते, और दौलत मुफ्त। वल्लाह! तुमने उजलत कर दी।

दिन-भर भक्तोंका ताँता लगा रहा। जामिदको एक नज़र देखनेका सबको शौक़ था। सभी उसकी हिम्मत, ज़ोर और मज़हबी जोशकी तारीफ़ करते थे।

## ५

पहर रात बीत चुकी थी। मुसाफ़िरोंका आना-जाना कम हो चला था। जामिदने क़ाज़ी साहबसे .क़ुरान पढ़ना शुरू किया था।

उन्होंने उसके लिए अपने बगलका कमरा ख़ाली कर दिया था। वह क़ाज़ी साहबसे सबक़ लेकर आया, और सोने जा रहा था कि सहसा उसे दरवाज़ेपर एक ताँगेके रुकनेकी आवाज़ सुनाई दी। क़ाज़ी साहबके चेले अक्सर आया करते थे। जामिदने सोचा, कोई मुरीद आया होगा। नीचे आया, तो देखा, एक स्त्री ताँगेसे उतर कर बरामदेमें खड़ी है, और ताँगेवाला उसका असबाब उतार रहा है।

महिलाने मकानको इधर उधर देख कर कहा—नहीं जी, मुझे अच्छी तरह ख़याल है, उनका मकान यह नहीं है। शायद तुम भूल गये हो।

ताँगेवाला—हुजूर तो मानती ही नहीं। कह दिया कि बाबू साहबने मकान बदल लिया है। ऊपर चलिए।

स्त्रीने कुछ झिझकते हुए कहा—बुलाते क्यों नहीं? आवाज़ दो!

ताँगेवाला—ओ साहब, आवाज़ क्या दूँ! जब जानता हूँ साहबका यही मकान है, तो नाहक चिल्लानेसे क्या फ़ायदा? बेचारे आराम कर रहे होंगे। आराममें ख़लल पड़ेगा। आप ऊपर चलिए।

औरत ऊपर चली। पीछे पीछे ताँगेवाला असबाब लिये हुए चला। जामिद चुप-चाप नीचे खड़ा रहा। यह बात उसकी समझमें न आई।

ताँगेवालेकी आवाज़ सुनते ही क़ाज़ी साहब छतपर निकल आए, और एक औरतको आते देख कमरेकी खिड़कियाँ चारों तरफ़से बन्द कर लीं। फिर खूँटीपर लटकती हुई तलवार उतार ली, और दरवाज़ेपर आकर खड़े हो गये।

औरत क़ाज़ी साहबको देखकर झिझकी। वह तुरन्त पीछेकी

तरफ़ मुड़ना चाहती थी कि क़ाज़ी साहबने लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया, और अपने कमरेमें घसीट लाये। इसी बीचमें जामिद और ताँगेवाला, ये दोनों भी ऊपर आ गये थे। जामिद यह दृश्य देखकर हैरान हो गया था। रहस्य और भी रहस्यमय हो गया था। यह विद्याका सागर, यह न्यायका भांडार, यह नीति, धर्म और दयाका आगार, इस समय एक अनजान औरतके ऊपर यह घोर अत्याचार कर रहा है! ताँगेवालेके साथ वह भी क़ाज़ी साहबके कमरेमें चला गया। क़ाज़ी साहब स्त्रीके दोनों हाथ पकड़े हुए थे। ताँगेवालेने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

महिलाने ताँगेवालेकी ओर ख़ून-भरी आँखोंसे देखकर कहा—तू मुझे यहाँ क्यों लाया?

काज़ी साहबने तलवार चमकाकर कहा—पहले आरामसे बैठ जाओ, सब कुछ मालूम हो जायगा।

औरत—तुम तो मुझे कोई मौलवी मालूम होते हो। क्या तुम्हें ख़ुदाने यही सिखाया है कि पराई बहू-बेटियोंको ज़बरदस्ती घरमें बन्द करके उनकी इज़्ज़त बिगाड़ो?

क़ाज़ी—हाँ, ख़ुदाका यही हुक्म है कि काफ़िरोंको जिस तरह हो सके, इस्लामके रास्तेपर लाया जाय। अगर ख़ुशीसे न आवें, तो ज़ोरसे।

औरत—इसी तरह अगर कोई तुम्हारी बहू-बेटीको पकड़कर उसकी इज़्ज़त बिगाड़े तो?

क़ाज़ी—हो ही रहा है। जैसा तुम हमारे साथ करोगे, वैसा ही हम तुम्हारे साथ करेंगे। फिर हम तो इज़्ज़त ख़राब नहीं करते,

सिर्फ़ अपने मज़हबमें शामिल करते हैं। इससे इज़्ज़त बढ़ती है, घटती नहीं। हिन्दू क़ौमने तो हमें मिटा देनेका बीड़ा उठाया है। वह इस देशसे हमारा निशान मिटा देना चाहती है। धोखेसे, लोभसे, जब्रसे मुसलमानोंको बेदीन बनाया जा रहा है, तो क्या मुसलमान बैठे मुँह ताकेंगे ?

औरत—हिन्दू कभी ऐसा अत्याचार नहीं कर सकता। हो सकता है, तुम लोगोंकी शरारतोंसे तंग आकर नीचे दर्जेके लोग इस तरह बदला लेने लगे हों; मगर अब भी कोई सच्चा हिन्दू इसे पसन्द नहीं करता।

क़ाज़ी साहबने कुछ सोचकर कहा—बेशक, पहले इस तरहकी शरारतें मुसलमान शोहदे ही किया करते थे। मगर शरीफ़ लोग इन हरकतोंको बुरा समझते थे, और जहाँ तक होता था, रोकनेकी कोशिश करते थे। तालीम और तहज़ीबकी तरक्क़ीके साथ कुछ दिनोंमें यह गुण्डापन ज़रूर गायब हो जाता; मगर अब तो सारी हिन्दू क़ौम हमें निगलनेके लिए तैयार बैठी हुई है। फिर हमारे लिए और रास्ता ही कौन-सा है ? हम कमज़ोर हैं, इसलिए हमें मज़बूर होकर अपनेको क़ायम रखनेके लिए दग़ासे काम लेना पड़ता है; मगर तुम इतना घबराती क्यों हो ? तुम्हें यहाँ किसी बातकी तकलीफ़ न होगी। इस्लाम औरतोंके हक़का जितना लिहाज़ करता है, उतना और कोई मज़हब नहीं करता। और मुसलमान मर्द तो अपनी औरतपर जान देता है। मेरे यह नौजवान दोस्त ( जामिद ) तुम्हारे सामने खड़े हैं, इन्हींके साथ तुम्हारा निकाह कर दिया जायगा। बस, आरामसे ज़िन्दगीके दिन बसर करना।

औरत—मैं तुम्हें बुरा समझती हूँ। तुम कुत्ते हो। इसके सिवा तुम्हारे लिए कोई नाम नहीं। भला इसीमें है कि मुझे जाने दो। नहीं तो मैं अभी शोर मचा दूँगी, और तुम्हारा सारा मौलवीपन निकल जायगा।

क़ाज़ी—अगर तुमने ज़बान खोली, तो तुम्हें जानसे हाथ धोना पड़ेगा। बस, इतना समझ लो।

औरत—इज़्ज़तके सामने जानकी कोई हक़ीक़त नहीं। तुम मेरी जान ले सकते हो; मगर इज़्ज़त नहीं ले सकते।

क़ाज़ी—क्यों ज़िद करती हो?

औरतने दरवाज़ेके पास जाकर कहा—मैं कहती हूँ, दरवाज़ा खोल दो।

जामिद अब तक चुपचाप खड़ा था। ज्यों ही स्त्री दरवाज़ेकी तरफ चली, और क़ाज़ी साहबने उसका हाथ पकड़कर खींचा, जामिदने तुरन्त दरवाज़ा खोल दिया और काजी साहबसे कहा—इन्हें छोड़ दीजिए।

क़ाज़ी—क्या बकता है?

जामिद—कुछ नहीं। भला इसीमें है कि इन्हें छोड़ दीजिए।

लेकिन जब क़ाज़ी साहबने उस महिलाका हाथ न छोड़ा, और ताँगेवाला भी उसे पकड़नेके लिए बढ़ा, तो जामिदने एक धक्का देकर क़ाज़ी साहबको ढकेल दिया और उस स्त्रीका हाथ पकड़े हुए कमरेसे बाहर निकल गया। ताँगेवाला पीछे लपका, मगर जामिदने उसे इतने ज़ोरसे धक्का दिया कि वह औंधे-मुँह जा गिरा। एक क्षणमें जामिद और स्त्री, दोनों सड़कपर थे।

जामिद—आपका घर किस मुहल्लेमें है ?

औरत—अहियागंजमें ।

जामिद—चलिए, मैं आपको पहुँचा आऊँ ।

औरत—इससे बड़ी और क्या मेहरबानी होगी । मैं आपकी इस नेकीको कभी न भूलूँगी । आपने आज मेरी आबरू बचा ली, नहीं तो मैं कहींकी न रहती । मुझे अब मालूम हुआ कि अच्छे और बुरे सब जगह होते हैं । मेरे पतिका नाम पंडित राजकुमार है ।

उसी वक्त एक ताँगा सड़कपर आता दिखाई दिया । जामिदने स्त्रीको उसपर बिठा दिया, और खुद बैठना ही चाहता था कि ऊपरसे क़ाज़ी साहबने जामिदपर लट्ठ चलाया और डंडा ताँगेमें आ बैठा और ताँगा चल दिया ।

अहियागंजमें पंडित राजकुमारका पता लगानेमें कोई कठिनाई न पड़ी । जामिदने ज्यों ही आवाज़ दी, वह घबराए हुए बाहर निकल आए, और स्त्रीको देखकर बोले—तुम कहाँ रह गई थीं इन्दिरा ? मैंने तो तुम्हें स्टेशनपर कहीं न देखा । मुझे पहुँचनेमें ज़रा देर हो गई थी । तुम्हें इतनी देर कहाँ लगी ?

इंदिराने घरके अंदर क़दम रखते हुए कहा—बड़ी लंबी कहानी है । ज़रा दम लेने दो, तो बता दूँगी । बस, इतना ही समझ लो कि आज अगर इस मुसलमानने मेरी मदद न की होती, तो इज़्ज़त चली गई थी ।

पंडितजी पूरी कथा सुननेके लिए और भी व्याकुल हो उठे । इन्दिराके साथ ही वह भी घरमें चले गये; पर एक ही मिनटके बाद बाहर आकर जामिदसे बोले—भाई साहब, शायद आप बनावट

समझें; पर मुझे आपके रूपमें इस समय अपने भगवानके दर्शन हो रहे हैं। मेरी ज़बानमें इतनी ताक़त नहीं कि आपका धन्यवाद कर सकूँ। आइए, बैठ जाइए।

जामिद—जी नहीं, अब मुझे इजाज़त दीजिए।

पंडित—मैं आपकी इस नेकीका क्या बदला दे सकता हूँ?

जामिद—इसका बदला यही है कि इस शरारतका बदला किसी ग़रीब मुसलमानसे न लीजिएगा, मेरी आपसे यही दरख़्वास्त है।

यह कह कर जामिद चल खड़ा हुआ, और उस अँधेरी रातके सन्नाटेमें शहरके बाहर निकल गया। उस शहरकी गंदी वायुमें साँस लेते हुए उसका दम घुटता था। वह जल्दसे जल्द शहरसे भाग कर अपने गाँवमें पहुँचना चाहता था, जहाँ मज़हबका नाम सहानुभूति, प्रेम और मित्रता था। शहरके धर्म और धार्मिक लोगोंसे उसे घृणा हो गई थी।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**छानना**—खोज करना, ढूँढ़ना, To search.
**बौड़म**—बेवक़ूफ़, Stupid, Idiot.
**दामन**—कपड़ेका पल्ला, आँचल, कपड़ा.
**ख़ैरात**—दान, Charity, Alms.
**ख़ादिम**—नौकर, सेवक, Servant.
**सबक़**—शिक्षा, Lesson.
**जब्र**—ताक़त, ज़ोर, Force.
**अत्याचार**—ज़ुल्म, सितम, पाप, Atrocity.
**विद्या**—ज्ञान, विवेक, Education, Training.
**सभ्यता**—संस्कृति, Culture, Civilization.

**हक़**—अधिकार, स्वत्व, Rights.
**सहानुभूति**—हमदर्दी Symathy.
**भठियारा**—innkeeper.
**वज़ू करना**—नमाज़ पढ़नेके पहले शुद्धिके लिए हाथ-पैर धोना.
**मोमिन**—मुसलमान, आस्तिक ।
**नाज़नीन**—सुन्दरी, Damsel.
**उजलत**—जल्दी, Quickly.
**मुरीद**—शिष्य, चेला, Disciple.
**बर्तन-भाँड़ा**—House-hold cooking vessels.
**पाठा**—पट्ठा, Youngster.
**बचा**—बच्चा, Fellow, Youngone. ( used in contempt )
**दीनदार**—अपने धर्मपर विश्वास करनेवाला, धार्मिक, Religious.
**लिहाज़**—मुलाहज़ा, मुरव्वत, शीलसंकोच, Regard.
**आबरू**—इज्ज़त, प्रतिष्ठा, मान, Honour.

# सच और झूठकी लड़ाई

लेखक—**मौलवी मुहम्मद हुसैन आज़ाद**

दिल्लीके रहनेवाले थे लाहौरमें प्रोफ़ेसर थे। 'आबे हयात,' 'दरबार अकबरी,' 'नैरंगे-ख़याल,' आदि कई पुस्तकें लिखी हैं। भाषा इतनी चुस्त और खिली हुई लिखते थे कि आज भी जो पढ़ता है, खुश हो जाता है। अपनी शैलीके बादशाह थे। अनुकरण सैंकड़ोंने किया, सफल एक भी नहीं हुआ। १०.१.० ई० में पागल होकर मरे।

पुराने ज़मानेके लोगोंने लिखा है, कि फ़ारसके भले आदमी अपने बच्चोंको तीन बातोंकी नसीहत देनेकी बड़ी कोशिश करते थे: घोड़ेकी सवारी, तीर चलाना, और सच बोलना। घोड़ेकी सवारी और तीर चलाना तो बेशक सहजमें आ जाता होगा, मगर क्या ही अच्छा होता, अगर हमें मालूम हो जाता कि वे लोग सच बोलना किस तरह सिखाते थे? और वह कौन-सी ढाल थी कि जब झूठका दैत्य आकर उनके दिलोंपर जादूका शीशा मारता था, तो वह इस चोटसे उसकी ओटमें बच जाते थे।

इसमें शक नहीं, दुनिया बुरी जगह है। चार दिनके जीवनमें बहुत-सी बातें होती हैं, जो इस मिट्टीके पुतले (आदमी) इस आगके बेटे (झूठ) के सामने झुका देती हैं। आदमीसे कभी कभी ऐसा .जुर्म हो जाता है कि अगर मान ले, तो मरना पड़ता है। हारकर मुकर जाता है। कभी छल-कपटसे बेवकूफ़ोंको फँसाता है, तब जाकर पेट भरता है। और फिर कितने मज़े दुनियाके हैं, धोखा जिनकी चाट लगा देता है। यही चाट बढ़ते बढ़ते क़ुसूर और गुनाह

बन जाती है जिनसे मुकरना ही पड़ता है। मतलब यह कि बहुत कम लोग ऐसे होंगे जिनमें यह ताक़त और हिम्मत हो कि सचके रास्तेमें सदा क़ायम रहें।

यह भी याद रहे कि आदमीके सच बोलनेके लिए सुननेवालोंकी भी ज़रूरत है, क्योंकि ख़ुशामदसे बड़ा झूठ क्या होगा जिसकी दूकानमें आज मोती बरस रहे हैं ? और कौन ऐसा है जो इसका बन्दी नहीं ? डरपोक डरकी ख़ुशामद करता है। नौकर उम्मीदका भूखा मालिकको ख़ुश करके पेट भरता है। दोस्त दोस्तीका प्यासा है, वह भी ख़ुशामदहीसे उसके दिलमें घर करता है। कई ऐसे भी हैं जो न डरपोक हैं, न नौकर। उन्हें यह रोग है कि बातों बातोंमें दूसरोंको ख़ुश कर दें।

बुद्धिमानोंने झूठसे बचनेके कई तरीक़े निकाले हैं, और जिस तरह बच्चोंको कड़वी दवा मिठाईमें मिलाकर खिलाते हैं, उसी तरहके रंगोंमें ऐसे उपदेश किए हैं, कि लोग झूठको हँसी-खेलमें ही छोड़ दें।

सच-रानी आसमानके राजाकी बेटी थी जो रानी बुद्धिमतीकी कोखसे पैदा हुई थी। जब सच-रानी बड़ी हुई, तो मा-बापने शिक्षाके हवाले किया कि इसे सिखा पढ़ा दो। पढ़-लिख चुकी, तो नेकी और पवित्रताके गहने पहनकर बापके दरबारमें आई। दरबारियोंने तारीफ़ की, और इज़्ज़तका मुकुट उसके सिरपर रखा और कहा, जाओ दुनियामें रोशनी फैलाओ। वहींपर एक दैत्य झूठ भी खड़ा था जिसका बाप अन्धकार था, और तृष्णा माँ थी। इसे वैसे तो दरबारमें आनेका हुक्म न था, मगर जब कभी हँसी-खेलके मसख़रे आते थे, तो उनकी संगतमें वह भी आ जाया करता

था। दैवयोगसे उस दिन वह भी आया हुआ था। सच-रानीकी तारीफ़से उसके तन-बदनमें आग लग गई। इसलिए वहाँसे चुपचाप निकला, और सच-रानीके काममें रुकावट डालनेको उसके साथ साथ हो लिया। आसमानके देवताओंको इनकी दुश्मनोंकी बात पहलेहीसे मालूम थी; सबकी आँखें इधर लग गईं कि देखें अब क्या होता है?

सचके बल और ज़ोरको कौन नहीं जानता? सच-रानीको भी अपने बल-बूतेपर भरोसा था। इसलिए अकेली आई और किसीको साथ न लाई। हाँ, आगे आगे विजय और विक्रम प्रकाशका झंडा उठाए आते थे, पीछे पीछे सोच-समझ चले आते थे। मगर साफ़ मालूम होता था, कि यह साथ नहीं है अधीन हैं। सच-रानी धीरे धीरे आती थी, मगर जमकर आती थी। उसका जो पाँव उठता था, दस पाँव आगे पड़ता दिखाई देता था।

झूठ रूप बदलनेमें बड़ा होशियार था। वह सच-रानीकी हर बातकी नक़ल करता था, और नए नए स्वाँग भरता था, फिर भी घबराया घबराया मालूम होता था। दुनियाकी भूख-प्यास हज़ारों पलटनें उसके साथ लाईं थीं, और चूँकि झूठ उनकी मददका मुहताज था, इसी लोभका मारा, नौकरोंकी तरह उनके हुक्म उठाता था। उसकी सारी कोशिशें बेफ़ायदा थीं, और सारे काम उलट-पुलट; क्योंकि धीरज उसकी तरफ़ न था। अपने छल-कपटसे जीत तो जाता था, मगर थम न सकता था।

कभी कभी दोनोंका सामना भी हो जाता था। उस समय झूठ अपनी धूम-धाम बढ़ानेके लिए सिरपर बादलका धुआँधार पग्गड़ लपेट लेता था। शेख़ीको हुक्म देता, कि आगे जाकर शोर मचाओ। साथ

ही फ़रेबको इशारा करता कि घातमें बैठ जाओ । दाएँ हाथमें धमकीकी तलवार, बाएँ हाथमें बेशरमीकी ढाल ले लेता । मोह और लोभ इधर उधर दौड़ते फिरते थे । मतलब यह कि जब लड़ता, इनके भरोसेपर लड़ता, मगर चाहता यही था कि दूर दूरसे लड़ाई हो। मैदानमें आते ही हवामें तीर चलाना शुरू कर देता, मगर बे-ठिकाने; और आप कहीं ठहरता न था। बार बार जगह बदलता था। रानीके हाथमें बापकी कड़क,—बिजलीकी तलवार न थी, मगर चेहरेपर रोआब था । जब यह जीत जाती थी, तो झूठ अपना तीर-कमान फेंक, बेशरमीकी ढाल मुँहपर लेकर दुनियादारीकी भीड़में जा छुपता था ।

सच-रानी कभी कभी घायल हो जाती थी । मगर साँचको आँच नहीं, घाव जल्द भर आते थे । पर जब झूठ घायल होता था, तो उसके घाव इतने सड़ते थे कि चारों तरफ़ बू फैल जाती थी । —मगर इधर ज़रा अच्छा हुआ, उधर फिर मैदानमें आ कूदा !

झूठने थोड़े ही वक़्तमें यह समझ लिया कि दानाई और बड़ाई इसीमें है कि एक जगह न ठहरूँ । इसलिए उसने धोखेको हुक्म दिया कि हमारे चलने-फिरनेके लिए एक सड़क तैयार करो, मगर ऐसे हेर-फेर और एच-पेच देकर कि सचके मार्गके साथ न टकरा जाय । सो जब उस शैतानपर कोई धावा करता था, तो जिधर चाहता था उधर भाग जाता था, और जिधरसे चाहता था, आ कूदता था । इन रास्तोंसे उसने सारी दुनियापर धावे करने शुरू कर दिए, और राज दूर दूर तक फैलाकर अपना 'झूठ बादशाह' नाम रख लिया । जहाँ फ़तह पाता, वहीं मौज-बहारको अपना नायब बनाता, और आप खिसक जाता । मौज़-बहार सच-रानीसे बुरी तरह लड़ते थे ।

—मगर झूठके पाँव कहाँ ? हारते थे, और हार मान लेते थे। पर सच-रानीके मुँह फेरते ही फिर शोर मचाने लगते थे।

सच-रानी जब आसमानसे उतरी, तो समझती थी कि दुनियावाले मेरे आनेसे खुश होंगे, और मेरी हर एक बात मानेंगे। मगर यहाँ आकर देखा, कि यह उसकी भूल थी। इसमें शक नहीं कि उसका राज फैलता था, मगर बहुत धीरे धीरे और इसपर भी मुश्किल यह थी कि आज जिस मुल्कको जीत लेती थी, कल उसपर दुश्मन फिर धावा करके छीन लेता था। यह देखकर सच-रानीको अफ़सोस हुआ, और उसने अपने आसमानी बापको लिख भेजा कि मुझे अपने पास बुला लीजिए; दुनियावाले झूठके मातहत होकर जिन दुःखोंमें खुश हैं, उन्हींमें रहा करें,—अपने किएकी आप सज़ा पाएँगे। मगर आसमानके राजाने अपनी बेटीकी यह अरज़ी नामंजूर कर दी, पर यह भी दिल न माना कि सच-रानी दुनियामें यों मुसीबतें उठाए। इसलिए उसने आसमानके देवताओंकी एक सभा बुलाई, और उसमें यह दो सवाल पेश किए—

१. क्या कारण है कि सच-रानीको दुनिया पसन्द नहीं करती?

२. क्या किया जाए कि उसे दुनियामें सफलता हो, और उसे तकलीफ़ भी न हो।

वहाँ यह बात खुली कि सच-रानीका स्वभाव सख़्त है और उसके सिरमें अपनी महानताका धुआँ इतना भरा हुआ है कि वह लोगोंकी आँखोंको कड़वा लगता है। कभी कभी उसके कारण लोगोंको नुक़सान होता है। कभी ऐसे झगड़े उठ खड़े होते हैं जिन्हें सँभालना मुश्किल हो जाता है। और यह ज़माना ऐसा है कि सोच-विचारके

बिना काम नहीं चलता। इसलिए सच-रानीको चाहिए, कि अपने स्वभावको सुधारे। जब तक यह न होगा, लोग उसके मातहत न होंगे।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**मुकरना**—कहकर बदल जाना, ज़बानसे फिर जाना, To retract.

**चाट**—चटपटी चीज़ खानेकी चाह, चसका, लत, आदत, Craving, Bad Habit, Addiction.

**खुशामद**—झूठी प्रशंसा, चापलूसी, Flattery, Adulation.

**आभूषण**—गहने, ज़ेवर, Ornaments, Decorations.

**मसखरे**—भाँड़, हँसानेवाले, विदूषक, Joker, Comedian.

**दैवयोग**—इत्तिफ़ाक, संयोग, Chance.

**पराक्रम**—बल, ताक़त, शक्ति, Strength, Power.

**बल-बूता**—ताक़त, हिम्मत, Vigour.

**नकल**—अनुकरण, Imitation, Copy.

**पग्गड़**—बड़ी-सी पगड़ी, सिरपर लपेटनेका कपड़ा, Turban.

**शेख़ी**—घमंड, अभिमान, Pride.

**फरेब**—धोखा, छल, कपट, Illusion.

**शैतान**—बुरा आदमी, पापी, गुनाहका देवता, Satan.

**धावा**—हमला, आक्रमण, Attack.

**नायब**—छोटा, अधीन, Assistant.

**अरज़ी**—प्रार्थना-पत्र, दरख्वास्त, Application.

# किताबें

लेखक—श्री **सुदर्शन** *

किताबें कहती हैं, ऐ आदमी! हमें ध्यानसे पढ़। उस पढ़े हुए पर सोच-विचार कर और फिर जो कुछ तेरे हाथ लगे उसे मनकी गिरहमें बाँध ले। तेरा जीवन सुधरेगा और तेरे रास्तेमें कोई रुकावट खड़ी न हो सकेगी। अगर खड़ी होगी तो तेरा पढ़ा-लिखा और जमा-जत्था उसे आसानीसे परे हटा देगा।

किताबें दुनियाके सोच-विचारका फल हैं और आगे बढ़ने और ऊपर उठनेके इशारे हैं। किताबें कामयाबीका रास्ता दिखानेवाले दीए हैं। किताबें ज़िन्दगीमें बहार लानेवाली हवाएँ ह। किताबें पुराने युग और नए ज़मानेकी मुँह-बोलती तसवीरें हैं। किताबें हाथ न आनेवाले वक़्तोंकी कहानियाँ हैं।

किताबें उन आदमियोंके दिमाग़ हैं जो अगर दुनियामें आ जाएँ तो दुनिया उनपरसे हीरे और मोती निछावर करके फेंक दे। किताबें उन आदमियोंके क़लमकी खेतियाँ हैं जिनके हाथका लिखा हुआ एक एक शब्द आज मोतियोंके तौल बिकता है और जिस ख़ुश-नसीबको मिल जाता है, वह उसे तावीज़ बनाकर गलेमें डाल लेता है।

किताबें उन आदमियोंके विचार हैं जो अपने विचारोंकी ख़ातिर जिए, विचारोंकी ख़ातिर मरे, और विचारोंकी ख़ातिर अमर हो गए।

---

* परिचय पहले दिया जा चुका है।

ज़रा ख़्याल करो। अगर आज किसी अख़बारमें यह ख़बर छप जाए कि शेक्सपियर अपनी क़ब्रसे ज़िन्दा होकर बाहर निकल आया है, तो लन्दनकी गलियों और सड़कोंका क्या हाल होगा? और अमरीका, जरमनी, फ़्रांस, इटली और रूसके बड़े बड़े लोग किस तरह शेक्सपियरके दर्शन करनेके लिए एक दूसरेको धक्के देते हुए नज़र आएँगे! या अगर आज दुनियाको विश्वास हो जाए कि फ़लाँ जगह कालिदास फिरसे पैदा हो गया है, और वह आज भी वही है जो उस समय था, और वैसा ही लिख सकता है जैसा उस समय लिखता था, तो कल कितनी मोटरें उस गाँवको पूरे ज़ोरोंसे जाती हुई दिखाई दें, और उस गाँवके लोग अपने भाग्यको कितना सराहते नज़र आएँ!

मगर ये विचारके वीर और दिमाग़के धनी अपनी अपनी किताबोंमें हमारे लिए आज भी ज़िन्दा हैं, और अपने जगत और जीवनकी सबसे अच्छी चीज़ें अपने शब्दोंमें हमें सुनानेको हर समय तैयार हैं। साइंसने हमारी ज़िन्दगीपर जो जो एहसान-उपकार किए है, उनमें शायद सबसे बड़ा उपकार यह है कि उसने लेखकोंको अमर बना दिया है और उनकी किताबोंकी क़ीमत इतनी घटा दी है कि बीस रुपए तनख़्वाह पानेवाला भी अगर चाहे तो, शेक्सपियर, इब्सन, गेटे, एडीसन, वालटेयर, कालिदास, बिहारीलाल, तुलसीदास, नज़ीर और ग़ालिबकी सारी किताबें ख़रीद ले, और जब चाहे उनकी ज़बानसे सदा-बहार बातें सुन सुन कर ख़ुश हो।

इन लोगोंने ख़्याल और कमालकी वह सभाएँ सजाई हैं जो कभी ख़त्म न होंगीं, और कविता और कल्पनाके वह बाग़ लगाए हैं,

जिनको कभी पतझड़का मौसम उजाड़नेकी हिम्मत न करेगा। हम हँसते हैं और रोते हैं, और हमारी हँसी और रोना हमारे साथ ही समाप्त हो जाता है; मगर, जाने ये महापुरुष किस अमर मिट्टीसे बने थे कि जो हँसी हँसे, वह आज भी गूँज रही है, और जो आँसू बहाए वह आज भी गीले हैं। हज़ारों साल गुज़र गए हैं और हज़ारों साल गुज़र जाएँगे मगर इनके कमाल आज भी लहलहा रहे हैं फिर और भी लहलहाते रहेंगे। जो इस सदा-सब्ज़ बाग़की सैर करता है उसकी तबियत हरी हो जाती है, और वह वहाँसे दिलका दर्द और आँखोंकी आभा लेकर लौटता है।

क़ायदा है, कि जब आदमीके पास कोई चीज़ होती है तो वह उसकी क़द्र-क़ीमत नहीं जानता। मगर जब वह नहीं रहती, तो उसकी आँखें खुलती हैं। आज हर शहरमें किताबोंकी कई कई दूकानें है। हम जब चाहते हैं, और जो किताब चाहते हैं, बाज़ारसे मँगवा लेते हैं और जो देखना हो वह किताब देखकर आलमारीमें रख देते हैं। लेकिन अगर कलको आगका कोई ऐसा शोला उठे जो दुनियाकी सारी किताबोंको जला कर भस्म कर दे, और ऐसी हवा चले जो लोगोंको उनका सारा पढ़ा-लिखा भुला दे, तो फिर दुनियाको मालूम हो कि हमारे पास क्या भंडार था जो हमने गवाँ दिया, और क्या रोशनी थी जो हमने खो दी? और हमारे चारों तरफ़ कैसी ग़रीबी और हमारे दिमाग़ोंमें कैसा अँधेरा है, और हमारे हाथ पाँव कैसे बँधे हुए हैं।

इसीसे समझ लो, कि इस समय जो कुछ दुनिया है, और अमन अमान और सभ्यताकी जिस चोटीपर पहुँच चुकी है, उसमें किताबोंका कितना हाथ है? इसीलिए मशहूर साहित्य-सेवी गिब्बनने कहा है—

मुझे किताबें पढ़नेसे इतना आनन्द मिलता है कि मैं उसके मुक़ाबिलेमें हिन्दुस्तानके ख़ज़ानोंको भी तुच्छ या हेच समझता हूँ। कार्लायल कहता है, अगर मेरे सामने हिन्दुस्तानका राज और शेक्सपियरकी किताबें रख दी जाएँ, और मुझसे कहा जाए कि इनमेंसे कोई एक चीज़ ले लो और एक चीज़ दे दो, तो मैं शेक्सपियर ले लूँगा, हिन्दुस्तान दे दूँगा।

किताबें सिर्फ़ मन-बहलावकी चीज़ें नहीं हैं। ये हमको देखनेकी आँखें और सुननेके कान देनेवाली यूनीवर्सिटियाँ भी हैं। ज़रा अपना उन हब्शियोंके साथ मुक़ाबिला करो जिनकी दुनिया कलम-दावातसे ख़ाली और जिनकी ज़िन्दगी किताबोंसे परे है; और फिर यह बात समझना कठिन न रहेगा कि किताबोंने हमको क्यासे क्या बना दिया है और कहाँसे उठाकर कहाँ पहुँचा दिया है? किताबें हमको बताती हैं कि दुनिया पहले किस अँधेरेमें सोती थी और किस ज़मीनपर रेंगती थी? किस तरह उसने होशकी करवट बदली और किस तरह रोशनीके जीवन और जीवनकी रोशनीकी तरफ़ बढ़ी? किस तरह आदमी प्रकृतिके शहज़ोर दैत्यके साथ लड़ा? और किस तरह सदियोंकी लड़ाईके बाद सफल हुआ? किताबें हमको बताती हैं कि देश कैसे ऊँचे उठते हैं और कैसे मौतके गढ़ेमें गिरकर नष्ट हो जाते हैं? जातियाँ किस तरह बनती हैं और किस तरह बिगड़ जाती हैं? नेता किस तरह लोगोंको अपने पीछे चलाते हैं और फिर किस तरह आप उन्हींके हाथोंसे मारे जाते हैं? किताबें हमको बताती हैं कि आस्मानपर चमकनेवाले तारे क्या हैं और हमसे कितनी दूर हैं? सूरजकी रोशनी काहेसे बनी है और क्या

काम कर सकती है? ज़मीनके अन्दर क्या क्या छिपा है और हम उसे किस तरह पा सकते हैं?

किताबोंके देशकी सैर करना और उन फ़िलास्फ़रोंसे मिलना जिन्होंने दुनियाको पढ़ा और समझा और इसके लिए अपने जीवन मिटा दिए, उन कवियोंके पास बैठना जो भाषा और भावके बादशाह थे, उन नाटककारोंकी बातें सुनना जो ख्यालकी आँखोंसे मनके रंग-मंचपर भावोंके तमाशे देखते थे और उन्हें कागज़-पर लिखते थे, कोई आसान बात नहीं है। मगर यह बात मुश्किल भी नहीं है। ज़रूरत सिर्फ़ इसकी है कि हम अच्छी अच्छी किताबें खरीदें और पढ़ें, और सोच-विचार करें।

अच्छी अच्छी किताबोंका कुतबख़ाना एक ऐसी जगह है जहाँ ज्ञान और शान्ति, प्यार और प्रकाश, नेकी और नसीहतके भंडार भरे पड़े हैं,—मगर उसके लिए जो अक़्लकी सुनहरी चाबीसे उसके ख़ामोश दरवाज़े खोल सके। पुस्तकालय एक ऐसा परिस्तान है जिसमें दुनियाकी बलाएँ और आफ़तें न आती हैं, न आ सकती हैं। यह एक ऐसा क़िला है जिसमें न तूफ़ान उठते हैं, न बिजलियाँ कड़कती हैं, न दुश्मन हमला करते हैं। यह एक ऐसा स्वर्ग है जिसमें तीसों दिन चाँद चमकता है और बारहों महीने वसन्त खेलता है। हम ज़मीनपर ऐसा स्वर्ग बड़ी आसानीसे बना सकते हैं, उसमें आनन्द और अमनका जीवन बिता सकते हैं, और उसमें जाकर दुनिया-भरके बड़े बड़े बुजुर्गों और महापुरुषोंकी बातें सुन सकते हैं।

स्वर्गका स्वरूप हरएक धर्म और हरएक मज़हबमें अलग है। लेकिन मेरा स्वर्ग वह जगह है जहाँ पढ़नेको किताबें हों, उन्हें

समझनेको दिमाग़ हो और खाने-पीनेकी परवाह न हो। चाहे वह जंगलमें हो, चाहे आबादीमें। और वह स्वर्ग जहाँ दुनिया-भरकी बरकतें और खुशियाँ हों, मगर किताबें न हों, मेरे लिए स्वर्ग नहीं है। मैं ऐसे स्वर्गसे बाहर आ जाऊँगा और अपनी किताबोंका स्वर्ग बना लूँगा।

मगर इस स्वर्गमें किताबें ऐसी होनी चाहिए जो सचमुच किताबें हों। वक़्त बरबाद करनेवाली, और मनको उकसाने और चलनको गिरानेवाली चीज़ें न हों। हमारे पुरखोंके समय किताबें महँगी थीं। एक एक किताब लिखवाने और नकल करवानेमं सैकड़ो रुपए खर्च हो जाते थे। इसलिए, उन्हें किताब ख़रीदनेकी कठिनाई थी। इस समय किताबें गिनतीमें इतनी ज़्यादा और क़ीमतमें इतनी सस्ती हैं कि सौ रुपया ख़र्च करें तो सौसे ज़्यादा किताबें ख़रीद लें। इसलिए हमें किताबें ख़रीदनेकी कठिनाई नहीं, कठिनाई पाक-पवित्र किताबें चुननेकी है। ऐसे आदमियोंकी कमी नहीं जो हीरा-किताबें ख़रीदने निकलते हैं, मगर कंकड़-किताबें उठा लाते हैं। और नतीजा यह होता है कि उनकी ख़ुशियोंपर पत्थर पड़ जाते हैं और उनके स्वर्गमें सोग छा जाता है। इसलिए किताबोंका चुनाव करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए, क्योंकि बुरी किताब पढ़नेसे यह कहीं अच्छा है कि आदमी बिलकुल ही कुछ न पढ़े, जिस तरह नुकसान पहुँचानेवाले खानेसे यह अच्छा है कि आदमी भूखा प्यासा रह ले।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**गिरह**—गाँठ, अंटी।

**जमा-जत्था**—जमा किया हुआ, बचाया हुआ, पूँजी, Money.

**इशारे**—संकेत, Sign

**बहार**—वसन्त, Spring season.
**खेती**—फ़सल, Harvest.
**तावीज**—कवच, Talisman.
**कमाल**—परिपूर्णता, निपुणता, कुशलता, Wonder.
**क़ायदा**—नियम, रिवाज, उसूल, Law.
**शोला**—आगकी लपट, लौ, Flame, Live-coal.
**शहज़ोर**—बलवान्, शक्तिशाली, Powerful.
**बुज़ुर्ग**—पूर्वज, बाप-दादा, Fore-fathers, Ancestors.
**बरकत**—आशीर्वाद, असीस, मेहरबानी, Blessing.
**सोग**—शोक, Sorrow.
**एहसान**—उपकार, मेहरबानी, Favour.
**पतझड़**—हेमन्त, Autumn.
**क़द्र**—Appreciation.
**आभा**—तेज, Lustre.
**साहित्य-सेवी**—Man of Literature.
**परिस्तान**—Fairyland.
**अमन-अमान**—शांति, Peace.
**गूँजना**—To echo, To resound.

# मच्छर

लेखक—ख़्वाजा हसन निज़ामी

दिल्लीके रहनेवाले, दुबली-पतली देह, साठ सालकी उमर, मगर बड़े मेहनती हैं। आजकल भी सारा सारा दिन काम करते हैं। लिखनेकी शैली इनकी अपनी है। साधारण-सा मज़मून भी लेते हैं तो उसमें जान डाल देते हैं। ज़बान बड़ी सरल लिखते हैं और उसमें हिन्दीके शब्द इस तरह जड़ देते हैं जैसे अँगूठीमें नगीने। सौके लगभग किताबें लिख चुके हैं और बराबर लिख रहे हैं।

यह भिनभिनाता हुआ नन्हा-सा पंछी आपको बहुत सताता है। रातकी नींद ख़राब कर देता है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी,—सब इससे नाराज़ हैं। हर रोज़ इससे लड़नेके लिए तैयारियाँ होती हैं, जंगके नक़शे बनाए जाते हैं, मगर मच्छरोंके जरनैलके सामने किसीकी नहीं चलती। हारपर हार होती चली जाती है।

इतने बड़े डील-डौलका आदमी ज़रासे भुनगेपर क़ाबू नहीं पा सकता! तरह तरहके मसाले बनाता है कि इनकी बूसे मच्छर भाग जाएँ, मगर मच्छर अपने हमलोंसे बाज़ नहीं आते। आते हैं और शोर मचाते हुए आते हैं। बेचारा आदमी हैरान रह जाता है।

अमीर-ग़रीब, बड़ा-छोटा, औरत-मर्द कोई इसके हमलेसे महफ़ूज़ नहीं। यहाँतक कि आदमीके पास रहनेवाले जानवर भी इसके ज़ुल्मसे नहीं बचते। मच्छर जानता है कि दुश्मनके दोस्त भी दुश्मन होते हैं। इन जानवरोंने मेरे दुश्मनसे हार मान ली है, तो मैं इनको भी मज़ा चखाऊँगा। आदमियोंने मच्छरोंके ख़िलाफ़ 'एजीटेशन' करनेकी

पूरी पूरी कोशिश की है। हर आदमी मच्छरपर कोई न कोई दोष लगाता है मगर मच्छर ज़रा भी परवाह नहीं करता।

प्लेग फैली तो आदमीने कहा—इसका कारण मच्छर और पिस्सू हैं। इन्हें मार डालो, तो यह भयानक बीमारी दूर हो जायगी। मैलेरिया फैला, तो इसका कारण भी मच्छरको बताया गया और इस सिरेसे उस सिरेतक काले और गोरे आदमी शोर मचाने लगे कि मच्छरोंको मिटा दो, मच्छरोंको कुचल डालो, मच्छरोंको मार दो। और फिर ऐसी तदबीरें निकालीं जिनसे मच्छरोंका वंश ही मिट जाए।

मच्छर भी यह बातें देखता है और सुनता है और रातको डाक्टर साहबकी मेज़पर रखे हुए अँगरेज़ी अखबार 'पायोनियर' को पढ़ता है और उसमें छपे हुए अपनी बुराईके हर्फोंपर बैठकर उस खूनकी नन्हीं नन्हीं बूँदे डाल जाता है जो आदमीकी या ख़ुद डाक्टर साहबकी देहसे चूसकर लाया था। गोया अपनी भाषामें हम लोगोंको शोख़ीसे कहता है कि भाई, तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

आदमी कहता है—मच्छर बड़ा बुरा जीव है, गंदगीसे पैदा होता है, और गंदी नालियोंमें रहता है। और डरपोक इतना है कि हमपर उस समय हमला करता है जब हम सो जाते हैं। बेख़बरीमें हमला करना बहादुरी नहीं, अव्वल दरजेकी कमीनगी है। शक्ल तो देखो: काला भुतना, लम्बे लम्बे पाँव, बे-डौल चेहरा। ऐसी देह और आदमी जैसे गोरे चिट्टे ख़ूबसूरत प्यारे जीवसे दुश्मनी! बेअक्ली और मूर्खता इसीको कहते हैं।

मच्छरकी सुनो, तो वह आदमीको खरी खरी सुनाता है, और कहता है, 'जनाब, हिम्मत है तो सामना कीजिए। ज़ात-पाँत न देखिए,

मैं छोटा सही, बदसूरत सही, काला और कमीना सही। मगर यह तो देखिए, आपका सामना किस दिलेरीसे करता हूँ! और क्यों कर आपका नाकमें दम करता हूँ! तुम कहते हो, मैं बेख़बरीमे आता हूँ। यह भी तुम्हारी बेइन्साफ़ी है। जनाब, मै तो पहले कानमें आकर अलटीमेटम दे देता हूँ कि होशियार हो जाओ, अब हमला होता है। तुम आप ही सोते रहो, तो मेरा क्या क़ुसूर? दुनिया फ़ैसला करेगी कि जीत किसकी होती है, काले भुतने बेडौल लम्बे पाँववालेकी, या गोरे चिट्टे आन-बानवालेकी?

मेरी बड़ाईकी शायद तुमको ख़बर नहीं कि मैंने दुनियामें कैसे बड़े बड़े काम किए हैं? तुम्हारा एक भाई नमरूद हुआ है जो अपने आपको ख़ुदा कहता था, और अपने सामने किसीको कुछ समझता ही न था। किसने उसका ग़रूर तोड़ा? कौन उसे ठीक करनेको आगे बढ़ा? किसके कारण उसकी ख़ुदाई ख़ाकमें मिल गई। अगर आप न जानते हों, तो अपने ही किसी मुसलमान भाईसे पूछ लीजिए। मेरे ही एक मच्छर भाईने उस अभिमानके पुतलेको तोड़ा-मरोड़ा था।

और तुम तो ऐसे ही बिगड़ते हो, और मुझे अपना दुश्मन समझते हो। मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ। अगर तुम्हें यक़ीन न हो तो अपने किसी रातको जागनेवाले भगत भाईसे पूछ लो। देखो, वह मेरे बारेमें क्या कहता है? कल एक भगतजी अपने एक चेलेसे कह रहे थे कि मच्छरकी ज़िन्दगी मुझे तो बहुत पसन्द है। बेचारा दिन-भर अकेला पड़ा रहता है और रातको, जो भगवानके भजनका वक़्त है, बाहर निकलता है, और फिर सारी रात भजन करता है।

आदमी पड़े सोते हैं, तो उसे उनपर ग़ुस्सा आता है। वह चाहता है कि वह भी जागकर अपने मालिकके दिए हुए इस सुहावने चुप-चाप वक्तकी क़द्र करे, और उसकी महिमाके गीत गाए। इसलिए पहले उसके कानमें जाकर कहता है कि भाई उठो, भाई उठो। जागनेका समय है। सोनेका और हमेशा सोनेका समय अभी नहीं आया। जब आएगा, तो बेफ़िक्र होकर सोना, अब तो होशियार रहनेका और कुछ करनेका वक्त है। मगर आदमी इस सुरीली नसीहतकी परवाह नहीं करता और सोता रहता है, तो वह ग़ुस्सेमें आकर उसके मुँह और हाथ-पाँवपर काट खाता है। पर वाहरे भाई आदमी! आँखें बन्द किए हुए हाथ-पाँव मारता है, और फिर सो जाता है। और जब दिनमें जागता है, तो ग़रीब मच्छरको गालियाँ देता है कि रात-भर सोने नहीं दिया। कोई इस झूठेसे पूछे कि जनाब, कितने मिनट जागे थे जो सारी रात जागनेकी शिकायत हो रही है!

भगतजीके मुँहसे यह दानाईकी बातें सुनकर मुझे भी तसल्ली हुई कि चलो इन लोगोंमें भी ऐसे इनसाफ़-पसन्द आदमी मौजूद हैं। बल्कि मैं दिल ही दिलमें शरमाया कि कभी कभी ऐसा भी हो जाता है कि भगतजी बैठे माला फेर रहे हैं और मैं उनके पाँवका ख़ून पी रहा हूँ।—यह तो मेरी तारीफ़ करें, और मैं इन्हें तकलीफ़ दूं! फिर दिलने समझाया कि तू काटता थोड़ा है, पाँव चूमता है, और ऐसे लोगोंके पाँव चूमनेहीके काबिल होते हैं! मगर सच यह है कि इससे मेरी शरमिन्दगी दूर नहीं हुई। अबतक दिलमें इसका अफ़सोस है।

बस, अगर सब आदमी ऐसा ही करें जैसा भगतजीने किया, तो हमारी क़ौम आदमीको सताना अपने आप छोड़ देगी। वर्ना याद रहे कि मेरा नाम मच्छर है, आरामसे जीने न दूँगा, और बता दूँगा कि काले कमीने कमज़ोर भी ऊँचे दरजेवाले गोरे चिट्टे आदमियोंको हैरान और परेशान कर सकते हैं।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**नक़शा**—मानपत्र, Map, Plan.
**भुनगा**—मक्खीकी क़िस्मका जीव, A Flying insect.
**महफ़ूज़**—बचा हुआ, सुरक्षित, Safe.
**कमीनगी**—कमीनापन, छुटपन, Meanness.
**भुतना**—भूत, बदरूह, Ghost
**नसीहत**—उपदेश, अच्छी राय, Good Advice.
**इनसाफ़-पसन्द**—न्याय-प्रिय, Lover of Justice.
**दिलेरी**—बहादुरी, वीरता, Valour.
**ग़ुरूर**—अभिमान, घमण्ड, Pride.
**दानाई**—बुद्धिमानी, अक्लमन्दी, Wisdom.
**शोख़ी**—धृष्टता. ढिठाई, शरारत Boldness, Mischievousness.
**आनबानवाला**—ठसकवाला, Pompous.

# अंधेर-नगरी

लेखक—**स्व० बाबू हरिश्चन्द्र भारतेन्दु**

वि० सं० १९०७–१९४१

भारतेन्दुजी काशीके रहनेवाले थे। इनके पिता सेठ अमीचंद बहुत बड़े अमीर थे, इस लिए इन्हें खाने-पीनेकी परवाह न थी, हमेशा लिखने पढ़नेमें मस्त रहते थे। हिन्दी भाषाको रंगीन बनानेमें इनका बड़ा हाथ है। ३४ सालकी उमरमें शरीरांत हो गया, फिर भी १०० के लगभग पुस्तकें लिख गये। इनके नाटक और उनसे भी बढ़कर इनके गीत अजीब चीजें हैं; पढ़कर मन नाचने लगता है।

## पहला दृश्य

**स्थान—शहरसे बाहर सड़क**

[ महन्तजी और दो चेले बातें कर रहे हैं। ]

महंत—बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूरसे बड़ा सुन्दर दिखलाई पड़ता है। देख, कुछ भिक्षा मिले तो ठाकुरजीको भोग लगे। और क्या!

ना० दा०—गुरुजी महाराज, नगर तो बहुत ही सुन्दर है, पर भिक्षा भी सुन्दर मिले तो बड़ा आनंद हो।

महंत—बच्चा गोवर्धनदास, तू पच्छिमकी ओरसे जा और नारायणदास पूरबकी ओर जायगा।

गो० दा०—गुरुजी, मैं बहुत-सी भिक्षा लाता हूँ। यहाँ लोग तो बड़े मालवर दिखलाई पड़ते हैं। आप कुछ चिन्ता मत कीजिए।

महन्त—पर बच्चा, बहुत लोभ मत करना।

## दूसरा दृश्य

### स्थान—बाज़ार

[ महन्तजीका चेला गोवर्धनदास आता है। ]

गो० दा०—क्यों भाई बनिये, आटा कितने सेर ?

बनिया—टके सेर।

गो० दा०—और चावल ?

बनिया—टके सेर।

गो० दा०—और चीनी ?

बनिया—टके सेर।

गो० दा०—और घी ?

बनिया—टके सेर।

गो० दा०—( कुँजड़िनके पास जाकर ) क्यों माई, भाजी क्या भाव ?

कुँजड़िन—बाबाजी, टके सेर।

गो० दा०—सब भाजी टके सेर ! वाह वाह, बड़ा आनंद है ! यहाँ सभी चीज़ टके सेर। ( हलवाईके पास जाकर ) क्यों भाई हलवाई, मिठाई कितने सेर ?

हलवाई—सब टके सेर।

गो० दा०—वाह वाह, बड़ा आनन्द है ! सचमुच सब टके सेर ?

हलवाई—हाँ बाबाजी, सचमुच सब टके सेर। यहाँ सब चीज़ टके सेर बिकती है।

गो० दा०—क्यों बच्चा, इस नगरीका नाम क्या है ?

हलवाई—अंधेर-नगरी।

गो० दा०—और राजाका क्या नाम है ?

हलवाई—चौपट्ट राजा।

गो० दा०—वाह वाह!

*अँधेर-नगरी चौपट्ट राजा,*

*टके सेर भाजी टके सेर खाजा!*

हलवाई—तो बाबाजी, कुछ लेना हो तो ले लो ना।

गो० दा०—बच्चा, भिक्षा माँगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।

[ हलवाई मिठाई तौलता है और बाबाजी मिठाई लेकर चले जाते हैं। ]

## तीसरा दृश्य

### स्थान—जंगल

[ महंतजी और नारायणदास एक ओरसे आते हैं और दूसरी ओरसे गोवर्धन आता है। ]

महंत—बच्चा गोवर्धनदास, कह क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गो० दा०—गुरुजी महाराज, सात पैसे भीखमें मिले थे, उसीसे साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत—बच्चा, नारायणदासने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज़ टके सेर मिलती है, तो मैंने इसकी बातका विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन-सा राजा है जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा बिकता है?

गो० दा०—*अन्धेर-नगरी चौपट्ट राजा,*

*टके सेर भाजी टके सेर खाजा।*

महंत—तो बच्चा, ऐसी नगरीमें रहना उचित नहीं है जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा बिकता है।

गो० दा०—गुरुजी, ऐसा तो संसार-भरमें कोई देश ही नहीं है। दो पैसा पास रहनेहीसे मजेमें पेट भरता है। मैं तो इस नगरको छोड़कर नहीं जाऊँगा।

महंत—देख बच्चा, पीछे पछतायगा।

गो० दा०—आपकी कृपासे कोई दुःख न होगा, मैं तो कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

महंत०—मैं तो इस नगरमें अब एक क्षण-भर नहीं रहूँगा। देख, मेरी बात मान, नहीं, पीछे पछतायगा। मैं तो जाता हूँ, पर इतना कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना।

[ महंतजी नारायणदासके साथ जाते हैं, गोवर्धनदास बैठकर मिठाई खाता है। ]

## चौथा दृश्य

### स्थान—राजसभा

[ राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं।
परदेके पीछे 'दोहाई है दोहाई है' का शब्द होता है ]

राजा—कौन चिल्लाता है? पकड़ लाओ।

[ दो नौकर एक फ़र्यादीको पकड़ कर लाते हैं। ]

फ़०—दोहाई, महाराज, दोहाई है।

राजा—बोलो क्या हुआ?

फ़०—महाराज, कल्लू बनियेकी दीवार गिर पड़ी सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। दोहाई है महाराज, न्याय हो।

राजा०—अच्छा, कल्लू बनियेको पकड़ लाओ।

[ नौकर लोग दौड़कर बाहरसे बनियेको पकड़ लाते हैं। ]

राजा—क्यों बे बनिये, इसकी बकरी क्यों दबकर मर गई?

कल्लू—महाराज, मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगरने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा—अच्छा, इस कल्लूको छोड़ दो, कारीगरको पकड़ लाओ।

[ कल्लू जाता है, लोग कारीगरको पकड़कर लाते हैं। ]

राजा—क्यों बे कारीगर, इसकी बकरी किस तरह मर गई?

कारीगर—महाराज, मेरा कुछ क़सूर नहीं, चूनेवालेने चूना ऐसा बोदा बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा—अच्छा, उस चूनेवालेको बुलाओ।

[ कारीगर निकाला जाता है, चूनेवाला पकड़कर लाया जाता है। ]

राजा—क्यों बे चूनेवाले, इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूनेवाला—महाराज, मेरा कुछ दोष नहीं; भिश्तीने चूनेमें पानी ज़्यादा डाल दिया, इसीसे चूना कमज़ोर हो गया होगा।

राजा—तो, भिश्तीको पकड़ो।

[ चूनेवाला निकाला जाता है, भिश्ती लाया जाता है। ]

राजा—क्यों बे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि इसकी दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गई?

भिश्ती—महाराज, गुलामका कोई कसूर नहीं, कसाईने मसक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज़्यादा आ गया।

राजा— अच्छा, कसाईको लाओ, भिश्तीको निकालो।

[ लोग भिश्तीको निकालते हैं और कसाईको लाते हैं। ]

राजा—क्यों बे कसाई, मसक ऐसी क्यों बनाई कि दीवार गिराई और बकरी दबाई?

कसाई—महाराज, गड़रियेने टकेपर ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि उसकी मसक बड़ी बन गई।

राजा—अच्छा, कसाईको निकालो, गड़रियेको लाओ ।

[ कसाई निकाला जाता है और गड़रिया लाया जाता है । ]

राजा—क्यों बे गड़रियें, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची कि बकरी मर गई ?

गड़रिया—महाराज, उधरसे कोतवाल साहबकी सवारी आई, सो उसके देखनेमें मैंने छोटी-बड़ी भेड़का ख़याल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं ।

राजा—अच्छा, इसको निकालो, कोतवालको पकड़ लाओ ।

[ गड़रिया निकाला जाता है, कोतवाल पकड़ा आता है । ]

राजा—क्यों बे कोतवाल, तैंने सवारी ऐसी धूमसे क्यों निकाली कि गड़रियेने घबड़ाकर बड़ी भेड़ बेच दी ?

कोतवाल—महाराज, महाराज, मैंने तो कोई कसूर नहीं किया ! मैं तो शहरके इंतज़ामके वास्ते जाता था ।

मन्त्री—( आप ही आप ) यह तो बड़ा ग़ज़ब हुआ, ऐसा न हो कि यह बेवकूफ इस बातपर सारे नगरको फूँक दे या फाँसी दे दे । ( कोतवालसे )—यह नहीं, तुमने ऐसी धूमसे सवारी क्यों निकाली ?

राजा—हाँ हाँ, यह नहीं, तुमने ऐसी धूमसे सवारी क्यों निकाली कि उसकी बकरी दबी ?

कोतवाल—महाराज महाराज—

राजा—कुछ नहीं महाराज महाराज,—ले जाओ, कोतवालको अभी फाँसी दे दो ।

[ लोग एक तरफसे कोतवालको पकड़कर ले जाते हैं, दूसरी ओरसे मंत्रीको पकड़कर राजा जाते हैं । ]

## पाँचवाँ दृश्य

### स्थान—जंगल

[ गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है । ]

गो० दा०—गुरुजीने हमको नाहक यहाँ रहनेको मना किया था । माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या ? अपन किसी राज-काजमें थोड़े ही हैं कि कुछ डर हो ?

[ चार प्यादे चार ओरसे आकर उसको पकड़ लेते हैं । ]

पहला प्यादा—चल बे चल, बहुत मिठाई खाकर मुटाया है । आज पूरी हो गई ।

गो० दा०—( घबड़ाकर ) हैं ! यह आफ़त कहाँसे आई ! अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझको पकड़ते हो ?

प० प्या०—आपने बिगाड़ा है या बनाया है, इससे क्या मतलब, अब चलिए फाँसी चढ़िए ।

गो० दा०—फाँसी ! अरे बाप रे बाप, फाँसी ! मैंने किसके प्राण मारे कि मुझको फाँसी !

दूसरा प्या०—आप बड़े मोटे हैं, इस वास्ते फाँसी होती है ।

गो० दा०—मोटे होनेसे फाँसी ? यह कहाँका न्याय है ? अरे, फकीरोंसे हँसी नहीं करनी होती ।

प० प्या०—जब सूली चढ़ लीजिएगा तब मालूम होगा कि हँसी है कि सच । सीधी तरह चलते हो कि घसीटकर ले चलें ?

गो० दा०—अरे बाबा, क्यों बेक़सूरका प्राण मारते हो ? भगवानके यहाँ क्या जवाब दोगे ?

प० प्या०—भगवानको जवाब राजा देगा । हमको क्या मतलब ?

गो० दा०—तब भी बाबा बात क्या है कि एक फ़कीर आदमीको नाहक फाँसी देते हो ?

प० प्या०—बात यह है कि कल कोतवालको फाँसीका हुक्म हुआ था। जब फाँसी देनेको उसको ले गए, तो फाँसीका फन्दा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगोंने महाराजसे अर्ज़ किया। इसपर हुक्म हुआ कि एक मोटा आदमी पकड़कर फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मारनेके अपराधमें किसी न किसीको सज़ा होनी ज़रूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गो० दा०—दुहाई परमेश्वरकी! अरे, मैं नाहक मारा जाता हूँ! अरे, यहाँ बड़ा ही अंधेर है! अरे, गुरुजी महाराजका कहा मैंने न माना, उसका फल मुझको भोगना पड़ा! गुरुजी, तुम कहाँ हो! आओ, मेरे प्राण बचाओ! अरे मैं बे-अपराध मारा जाता हूँ। गुरुजी! गुरुजी!!

[ गोवर्धनदास चिल्लाता है, प्यादे उसको पकड़कर ले जाते हैं। ]

## छठा दृश्य

### स्थान—श्मशान

[ गोवर्धनदासको पकड़े हुए सिपाहियोंका प्रवेश ]

गो० दा०—हाय बापरे! मुझे बेक़सूर ही फाँसी देते हैं। अरे भाइयो, कुछ तो धरम विचारो! अरे मुझे छोड़ दो। हाय! हाय!! ( रोता है और छूटनेका प्रयत्न करता है। )

प० सिपाही—अबे, चुप रह,—राजाका हुक्म भला कहीं टल सकता है? यह तेरा आख़िरी दम है, रामका नाम ले,—बेफ़ायदा क्यों शोर करता है? चुप रह—

गो० दा०—हाय, मैंने गुरुजीका कहना न माना, उसीका यह फल है। अरे, इस नगरमें ऐसा कोई धर्मात्मा नहीं है जो इस फ़कीरको बचावे! गुरुजी कहाँ हो! बचाओ,—गुरुजी—गुरुजी—

[ गुरुजी और नारायणदास आते हैं । ]

गुरु—अरे बच्चा गोवर्धनदास ! तेरी यह क्या दशा है ?

गो० दा०—( गुरुजीको हाथ जोड़कर ) गुरुजी, दीवारके नीचे बकरी दब गई, सो इसके लिए मुझे फाँसी देते हैं ! गुरुजी, बचाओ ।

गुरु०—अरे बच्चा ! मैंने तो पहले ही कहा था कि ऐसे नगरमें रहना ठीक नहीं, तूने मेरा कहना नहीं सुना ।

गो० दा०—मैंने आपका कहा नहीं माना, उसीका यह फल मिला । आपके सिवा अब ऐसा कोई नहीं है जो रक्षा करे । ( पैर पकड़कर रोता है । )

महन्त—कोई चिन्ता नहीं, नारायण सब समर्थ है । ( भौंह चढ़ाकर सिपाहियोंसे )—सुनो, मुझे शिष्यको अंतिम उपदेश देने दो । तुम लोग ज़रा किनारे हो जाओ । देखो, मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा ।

सिपाही—नहीं महाराज, हम लोग हट जाते हैं । आप बेशक उपदेश कीजिए ।

[ सिपाही हट जाते हैं । गुरुजी चेलेको कानमें कुछ समझाते हैं । ]

गो० दा०—तब तो गुरुजी, हम अभी फाँसी चढ़ेंगे ।

महंत—नहीं बच्चा, मुझको चढ़ने दे ।

गो० दा०—नहीं गुरुजी, हम फाँसी चढ़ेंगे ।

महंत—नहीं बच्चा हम । इतना समझाया, नहीं मानता ? हम बूढ़े हुए, हमको जाने दे ।

गो० दा०—स्वर्ग जानेमें बूढ़ा-जवान क्या ? आप तो सिद्ध हो, आपको गति-अगतिसे क्या ? मैं फाँसी चढ़ूँगा ।

[ इसी प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं । सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं । ]

प० सिपाही—भाई, यह क्या माजरा है, कुछ समझ नहीं पड़ता।

दू० सिपाही—हम भी नहीं समझ सकते कि यह कैसी गड़बड़ है!

[ राजा, मन्त्री, कोतवाल आते हैं। ]

राजा—यह क्या गोलमाल है?

सिपाही—महाराज, चेला कहता है मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है मैं चढ़ूँगा,—कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है?

राजा—( गुरुसे ) बाबाजी, बोलो। काहेको आप फाँसी चढ़ते हैं?

महंत—राजा, इस समय ऐसी साइत है कि जो मरेगा सीधा वैकुंठ जायगा।

मन्त्री—तब तो हमीं फाँसी चढ़ेंगे।

गो० दा०—नहीं, हम,—हम! हमको हुक्म है।

कोतवाल—हम लटकेंगे, हमारे सबब तो दीवार गिरी।

राजा—चुप रहो सब लोग। राजाके जीतेजी और कौन वैकुंठ जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी जल्दी।

( राजाको लोग फाँसीपर लटका देते हैं। )

[ परदा गिरता है ]

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**मालवर**—अमीर, मालदार, दौलतमंद, Wealthy, Rich.

**कुँजड़िन**—सब्ज़ी-भाजी बेचनेवाली.

**खाजा**—एक तरहकी मिठाई, A Sort of confectionery, sweet-meat.

**मसक**—चमड़ेकी थैली, जिसमें भिश्ती पानी भरकर लाते हैं।

**कसाई**—वधक, पशुओंको मारनेवाला; Butcher.

**आफ़त**—मुसीबत, संकट, Disaster.

**माजरा**—मामला, बात; Matter.

**साइत**—मुहूर्त, घड़ी, Auspicious time.

# एक बहादुर बटोही

लेखक—**पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय**

उपाध्यायजीका जन्म सं० १९२२ में निज़ामाबाद ज़िला आज़मगढ़में हुआ। हिन्दीके आप नामी कवि हैं और व्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनोंमें ही बहुत ऊँचे दर्जेकी चीज़ें आपने लिखी हैं। आपका मशहूर महाकाव्य 'प्रिय-प्रवास' है। कविताके सिवाय गद्यमें भी अपने काफ़ी लिखा है। 'रस-कलश' 'चोखे चौपदे,' 'चुभते चौपदे,' 'रुक्मिणी-परिणय' (नाटक) 'अधखिला फूल,' 'ठेठ हिन्दीका ठाठ,' 'बेनिसका बाँका' आदि अनेक ग्रन्थ आपके लिखे हुए हैं।

आधी रातका समय, बड़ी अँधियाली रात, सब ओर सन्नाटा, इसपर बादलोंकी घेरघार, पसारने पर हाथ भी नहीं सूझता। किसी पेड़का एक पत्ता नहीं हिलता। काले काले बादल चुप-चाप पूरबसे पच्छिमको जा रहे थे। बयार दबे पावों उन्हींका पीछा किये बहुत ही धीरे धीरे चलती थी। और कहीं कोई आता-जाता न था, पखेरू पंख तक हिलाते न थे। बस साँस खींचे, चुप्पी साधे डरावनी रातके सन्नाटेको और डरावना बना रहे थे। पर तनक थिर होकर सुननेसे ऐसे सुनसान और सन्नाटेमें भी किसीकी दुखभरी रुलाई सुनाई पड़ती है; और इसी रुलाईको सुनकर ऐसी कठिन बेलामें भी एक मनुष्य कान उठाये लम्बी डगोंसे उसी ओर जा रहा है।

धीरे धीरे काले बादल और काले हुए। अँधियाली और गहरी हुई, बिजली कौंधने लगी, धीमी धीमी गरज होने लगी, सन् सन् बयार चलने लगी। पहले नन्ही बूंदें पड़ीं, पीछे बड़ी बड़ी बूँदोंसे झिप् झिप् पानी बरसने लगा।

बापुरे बटोहीपर बड़ी कड़ी बीती, अब वह किधर जाय ? जिस रुलाईके सहारे वह आगे बढ़ रहा था, वह अब बहुत जी लगानेपर भी सुन नहीं पड़ती थी। बयारकी सन-सनाहट, बादलोंकी गड़-गड़ाहट, पानी पड़नेकी धूममें, उसका सुनना उसके बसकी बात न थी। पानी पड़ते पड़ते जानेवालेके सब कपड़े भींग गये, देह ठंडी पड़ गई, बयारके झोंकोंसे कँपकँपीने भी उसमें घर किया। आँखें फाड़ फाड़ कर देखनेपर भी कहीं सूझता न था। पर इन बातोंकी ओर उसका मन भूलकर भी नहीं जाता है, उसको सुरत लग रही है तो इसकी,—कैसे उस रुलाईको सुनूँ? कैसे उस ठौर तक पहुँचूँ? पर यह बात उसके हाथसे जाती रही, वह जितना जतन करने लगा, उतना पीछे पड़ने लगा। तो भी घबराया नहीं, काठिन अँधियालीमें उसी कठोर बरखामें आगे बढ़ता गया। किधर जाता है, कहाँ जाता है, वह यह समझ तक नहीं सकता है, पर उसका जी उससे यही कह रहा है, अब ले लिया है, थोड़े कड़े और रहो, जहाँ जाना चाहते हो वहीं पहुँचे जाते हो।

महीना असाढ़का था, देखते ही देखते आकाशका काया-पलट हो गया, पानी रुक गया, बयार धीमी हुई, बादल एक एक कर जाते रहे, तारे निकले, पूरब ओर चाँद भी निकलता दिखाई पड़ा, कुछ ही देरमें चाँदनी भी निकली। अब उस जानेवालेके जीमें जी आया, कुछ धीरज भी हुआ। गीले कपड़े उसने देहसे उतारे, उनको भली भाँति निचोड़ा, देहको पोंछा,—पीछे उन्हीं कपड़ोंको पहन लिया। कान लगाकर सुना तो वह दुख-भरी रुलाई भी सुन पड़ी। पर अब यह बहुत पास सुन पड़ती थी। वह फिर आगे बढ़ने लगा, पर

ज्यों ज्यों आगे बढ़ता था, कलेजा उसका टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता था, रुलाई सही नहीं जाती थी। घबरा गया, पर तौ भी पीछे नहीं हटा, थोड़ी देरमें वहाँ जा पहुँचा।

देखा—धरतीपर पड़ी हुई एक सोलह बरसकी तिरिया फूट-फूटकर रो रही है, सब कपड़े उसके भींग गये हैं, कीचड़से देह भर गई है, पर वह उसी भाँति कीचड़में लोट रही है, उसी भाँति बिलख-बिलख कर रो रही हैं, आँखे मुँदी है, मुँहपर बाल बिखर रहे हैं, उनसे मोतीकी भाँति पानीकी बूँदें टपक रही हैं। जानेवाला कुछ घड़ी चुप-चाप खड़ा रहा, उसका हाल देखकर आँसू टपकाता रहा। पीछे उससे न रहा गया, बोला—तुम कौन हो ? क्या तुम्हारा दुख मैं सुन सकता हूँ ? सुननेपर इस दुखके हाथसे तुमको छुड़ानेके लिए जतन करूँगा।

तिरिया कुछ न बोली, उसी भाँति बिलख-बिलखकर आँसू बहाती रही, उसी भाँति अपनी पुकारसे पत्थरके कलेजेको पिघलाती रही और उसी भाँति तड़प तड़प कर कीचड़-पानीमें लोटती रही।

जानेवालेने कुछ और पास जाकर कहा—माँ, तुम्हारा दुख देखा नहीं जाता, कलेजा फट रहा है, धीरज हाथसे जाता रहा, मुझ बापुरेपर दया करो, आँखें खोलो, कौन-सा ऐसा दुख तुमपर पड़ा है, जो तुम इतना बिलख रही हो ? जगमें देहसे बढ़कर कुछ प्यारा नहीं है, पर तुम्हारा दुख छुड़ानेमें मेरी देह भी जाती रहेगी तो मैं सह लूँगा।

अबकी बार इसकी बोली उसके कानोंमें पड़ी, उसने अपनी आँखोंको खोला, बोली—हमारा दुख ऐसा नहीं है जो उसको कोई

छुड़ा सके । राम जिसको दुख देते हैं उसके लिए मानुष क्या कर सकता है ? तुम क्यों हमारे दुखसे दुखिया बनते हो ? जहाँ जाते हो जाओ, हमारे भागमें यही लिखा है,—जबतक जीयेंगी इसी भाँति कलेजा कूटती रहेंगी ।

उसने कहा—कोई दुख ऐसा नहीं है जो छूट न सके, राम किसीको दुख नहीं देते, उन्होंने कठिनसे कठिन दुखके लिए भी जतन बनाया है, जतन करनेसे सब कुछ हो सकता है ।

वह बोली—न सताओ, हमें जी भरकर रोने दो, हमारा दुख इसीसे हलका होता है, दूसरा कोई उपाय हमारे लिए नहीं है, हमारे कलेजेका घाव पूरा नहीं हो सकता ।

उसकी इन बातोंसे जानेवालेकी आँखोंमें पानी आता था, उसने आँसू पोंछकर कहा—मैंने तुमको माँ कहा है, फिर कहता हूँ,—माँ, जैसे होगा तुम्हारा दुख छुड़ाऊँगा, तुम्हारे सामने यह टेक करता हूँ, साँस रहते इस टेकको निबाहूँगा, नहीं तो फूसकी आगमें जल मरूँगा ।

वह तिरिया इसकी बातें सुनकर भौंचक बन गई, बोली—तुम कौन हो बाबा ! बिना समझे बूझे क्यो इतना हठ करते हो ? अपना जी सबको प्यारा होता है । दूसरेके लिए अपने जीपर जोखों क्यों उठाओगे ?

वह बोला—हम कोई होवें, पर विपत्तिमें पड़ेको उबारना ही हमारा धरम है, इस माटीके पुतलेके लिए इससे अच्छा दूसरा काम नहीं हो सकता ।

यह सुनकर वह और अचरजमें आई, बोली—जो ऐसा ही है तो आओ, हमारे पीछे आओ, पर जी कड़ा रखना, देखो, मुझ दुखियाको और दुखिया न बनाना ।

यह कहकर वह उठी और फटे, मैले कपड़ोंमें अपनी देहको छिपाकर एक ओर चली। जानेवाला भी उसीके पीछे उसी ओर चला गया।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**अँधियाली**—अँधेरी, Dark.
**बटोही**—मुसाफ़िर, Traveller.
**बयार**—हवा, वायु, Air Breeze.
**पखेरू**—पंछी, परिन्दे, Birds.
**बेला**—समय, वक्त, Time, Hour.
**बापुरा**—ग़रीब, बेचारा, दीन, Poor.
**ठौर**—स्थान, जगह, मंज़िल, Place, Destination.
**तिरिया**—स्त्री, औरत, महिला, Woman.
**टेक**—प्रतिज्ञा, क़ौल-क़रार, Promise.
**बिजली कौंधना**—बिजलीका बार बार चमकना और छुपना,
**सुरत**—स्मृति, याद, Memory.
**बरखा**—वर्षा, Rain.
**काया-पलट**—बदल जाना, परिवर्तन हो जाना, Transformation.

# ख़ुशी

## लेखक—श्री सुदर्शन

ख़ुशीका नाम हम हररोज़ सुनते हैं मगर आख़िर यह ख़ुशी है क्या ? क्या यह स्वर्गका सुपना और कल्पनाका कमाल है, जिसका हमने ज़िकर हज़ारों बार सुना है, मगर देखा एक बार भी नहीं ? क्या यह मनमानी मिठाई है जो हररोज़ हमारे मुँहमें आनेका इक़रार करती है, मगर मुँहमें कभी नहीं आती, और हम फिर भी उसके इक़रारोंपर विश्वास कर लेते हैं ? क्या यह सब्ज़ बाग़ है जो सामने आता है और मनको लुभाता है और जब हम उसकी ओर पाँव बढ़ाते हैं तो पर लगाकर उड़ जाता है, और अपने पीछे अन्दरकी अटकन और बाहरकी भटकन छोड़ जाता है ? आशा उसके आगे आगे झंडा उठाकर चलती है, मगर निराशा भी उसके साथ साथ रहती है। और यह हर आदमी जानता और मानता है कि आशा ख़्यालकी चीज़ है जिसकी जड़ हवामें है, और दूरकी चीज़ है जो कभी पास आती है कभी पास नहीं आती। मगर निराशा दुनियाकी चीज़ है और हमें क़दम क़दमपर दिखाई देती है और आदमीका दिल और दिमाग़ उसपर विश्वास करता है।

आदमीका साया एक अजीब चीज़ है। अगर इसे आदमी पकड़ना चाहे, और इसका पीछा करे तो भागता है, और कभी हाथ नहीं आता। लेकिन जब उसकी तरफ़से पीठ मोड़ ली जाए और उससे भागा जाए तो हमारी तरफ़ मुड़ता है, और हमारे पीछे दौड़ता है।

ऐ ख़ुशी, क्या तेरा भी यही हाल है कि जब आदमी अकड़ कर खड़ा हो जाए तो तू भी सामने खड़ी हो जाती है, और जब तुझे पकड़ना चाहे, तो ज़मीनके साथ चिपक जाती है ?

पानीका बुलबुला कितना सुन्दर है ! रंग-बिरंगके कपड़े पहनता है और पानीके सीनेपर नाचता फिरता है। लेकिन जब कोई पकड़ना चाहे तो लहरोंमें समा जाता है। मृगतृष्णा कितनी आशा-भरी चीज़ है कि बयाबानोंमें देखकर तबियत हरी हो जाती है। मगर उससे प्यास बुझानेके लिए जितना चलते जाएँ, उतना ही यह जादूका दरिया भी अपने अथाह पानीको साथ लेकर भागता चला जाता है। ऐ ख़ुशी, क्या तू भी इसी तरहका बुलबुला और इसी तरहकी धोका-धड़ी है ?

दूरके ढोल सुहावने होते हैं। दूरके पहाड़ ख़ूबसूरत मालूम होते है। ऐ ख़ुशी, क्या तेरा भी यही रंग-रूप है ?

लोग इसको ढूँढ़ते हैं मगर यह लोगोंको मिलती नहीं है क्योंकि वे इसको ग़लत जगहपर ढूँढ़ते हैं। भर्तृहरिने उसको रूप और यौवनमें ढूँढ़ा, रावणने शान और शोभामें ढूँढ़ा, अशोकने सत्ता और महत्तामें ढूँढ़ा। मगर भर्तृहरिने धोका खाया, रावण बदनाम होकर मरा और अशोक हाथ मलता रह गया। लेकिन जिसने दुनियाको छोड़ दिया और दुनियासे मुँह मोड़ लिया, ख़ुशी उस बुद्धके पास गई और उसके पाँओंमें लोटी।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि यह अपने आप किसीके पास आ जाती है, और उसके ऊपर अपनी मेहरबानियाँ उड़ेल देती है। लेकिन जब वह इसे अपना समझकर बेपरवा हो जाता है, तब आँखें बदल

लेती है। किसी किसीको पहले अपनी शराब पिलाकर बेसुध करती है, इसके बाद धोका देकर अँधेरे और गहराइयोंमें गिरा देती है।

मगर हैरानी इस बातकी है कि दुनिया फिर भी इसको मलिका रानी मानती है, इसके सामने अदब और श्रद्धासे सिर झुकाती है और इसके इशारोंपर चलती है। फिर भी यह कोई नहीं कह सकता कि उसने कभी इसके इशारोंको समझा भी है या नहीं।

इस रानीके आसपास भी अमीरों वज़ीरोंकी इतनी भीड़ रहती है कि जो इसके पास पहुँचना चाहे, उसके लिए बड़ी मुश्किल है। शान, शोभा, लोभ, प्यार, बदला,—ये सब उसके द्वारपर खड़े रहते हैं कि किसी तरह आज्ञा मिले और अन्दर जाकर अपनी हृदय-रानीके दर्शन करें। मगर अफ़सोस! न वे अन्दर जा सकते हैं, न यह रानी बाहर आ सकती है। मगर वह अपने कमीने आदमियोंको उनके पास भेज देती है। शान-शोभाके पास शक्तिको, लोभके पास धन-दौलतको, प्यारके पास जलनको, बदलेकी प्यासके पास पछतावेको। मगर ज़रा ध्यानसे सोचो तो तुम्हें साफ़ मालूम होगा कि यह सब निराशाके अलग अलग रूप और जुदा जुदा नाम हैं।

मगर हो, इसको पानेका एक तरीक़ा है, और वह है इसके दुश्मनोंसे लड़ना और उन्हें जीतना। जो इसके दुश्मनोंको जीत लें उन्हें, इसके पास जानेकी कोई ज़रूरत नहीं। उनके पास यह अपने आप आती है, और नंगे पाँव चलकर आती है।

अगर खुशीकी रानी, किसी और तरीक़ेसे मिल सकती, तो सबसे पहले राजाओं-बादशाहोंको मिलती, क्यों कि वे इसको सबसे ज़्यादा चाहते हैं और उनमें इतनी ताक़त भी है कि सबसे ज़्यादा मोल

देकर इसे खरीद सकें। मगर वह राजाओं-बादशाहोंकी भी उतनी ही परवा करती है, जितनी दूसरे लोगोंकी। इसलिए वह महाराजाओंके पास भी आप नहीं जाती। अपने नौकरोंको—शान, शक्ति, दौलत अभिमानको भेज देती है और उन्हें सदा इसी भुलावेमें रखती है कि मैं आज आऊँगी। मगर आती कभी नहीं।

तो ऐ रानी, मेरी खरी खरी बातें सुन। राजे महाराजे, ऐसी सच्ची और बेलाग बातें कम सुना करते हैं। मगर तू सुन। मैं न तुझसे नफ़रत करता हूँ, न तेरे लिए ठण्डी आहें भरता हूँ। तेरी मेहेरबानियाँ सदा रहनेवाली नहीं और तेरे दान तेरे राजके अन्दर अन्दर समाप्त हो जाते हैं। तुझे दुनिया बहुत कुछ समझती है, मगर सच तो यह है कि दूसरे राजों और महाराजोंकी तरह तुझे भी औरोंके सहारेकी ज़रूरत है। वह सहारा अगर तुझसे छिन जाए तो तू भी अपने आपको नहीं सँभाल सकती। अगर सन्तोष और तन्दुरुस्ती तेरा हाथ छोड़ दे तो तू एक कदम न चल सके और देखते देखते एक कटे हुए पेड़की तरह ज़मीनपर गिर पड़े।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**कल्पना**—ख़याल, सोच, सूझ Imagination.
**इक़रार**—प्रण, प्रतिज्ञा, Promise.
**सब्ज़ बाग़**—हरा, बाग़ीचा (मुहाविरा) झूठी आशा, False hope.
**साया**—छाया, परछाई, Shadow.
**मृगतृष्णा**—सुराब, Mirage.
**रूप-यौवन**—ख़ूबसूरती और जवानी, Beauty and youth.
**सत्ता-महत्ता**—शक्ति और बड़ाई, Power and Greatness.
**नफ़रत**—घृणा, Hatred.
**तन्दुरुस्ती**—अच्छी सेहत, अच्छा स्वास्थ्य, Good Health.

# सुलतान हैदर अली

लेखक—**पंडित सुन्दरलाल**

पंडितजी धनमऊ ज़िला मैनपुरीके रहनेवाले हैं। विद्या आपने लाहौरमें पाई है। लाला लाजपतरायजीके साथ बहुत रहे हैं। सादा इतने हैं कि देखकर शक भी नहीं हो सकता कि ये महात्मा पढ़े-लिखे भी होंगे। मगर बड़े योग्य हैं, और व्याख्यान देते समय तो लोगोंको बुत बना देते हैं। जब चाहते हैं, रुला देते हैं। जब चाहते है, हँसा लेते हैं। 'भारतमें अँगरेज़ी राज्य' आपकी बड़ी मशहूर पुस्तक है। आजकल इलाहाबादमें रहते हैं। उमर ५० सालके लगभग होगी।

हैदरअली सन् १७२२ में मैसूरमें एक ग़रीब घरमें पैदा हुआ और एक मामूली सिपाहीसे बढ़ते बढ़ते केवल अपनी वीरता और योग्यताके बल एक विशाल राज्यका स्वामी बन गया। वह 'सुलतान हैदरअली शाह' कहलाता था। दिल्ली-दरबारके सूबेदारोंमें उसकी गिनती थी।

अपनी वीरता द्वारा उसने मैसूर राज्यको बहुत अधिक बढ़ा लिया था। मरते समय, उस तमाम इलाक़ेको छोड़कर जो उसने हालकी लड़ाईमें अपने शत्रुओंसे जीता था, उसका बाक़ी राज्य अस्सी हज़ार वर्गमील था जिसकी सालाना बचत राज्यका सारा ख़र्च निकालकर तीन करोड़ रुपयेसे ऊपर थी। उसकी कुल सेना तीन लाख चौबीस हज़ार थी जिसमें उन्नीस हज़ार सवार, दस हज़ार तोपख़ानेके सिपाही, एक लाख पन्द्रह हज़ार पैदल और एक लाख

अस्सी हज़ार इस तरहकी सेना थी, जो दूसरे सरदारोंके अधीन हर समय तैयार रहती थी और ज़रूरत पड़नेपर बुला ली जाती थी। उसके ख़ज़ानेके जवाहरात और नक़दीका अन्दाज़ा अस्सी करोड़ रुपयेसे ऊपर था। उसकी पशु-शालाओंमें सात सौ हाथी, छह हज़ार ऊँट, ग्यारह हज़ार घोड़े, चार लाख गाय और बैल, एक लाख भैंसे और साठ हज़ार भेड़ें थीं। उसके शस्त्रागारमें छह लाख बन्दूकें, दो लाख तरवारें और बाईस हज़ार तोपें थीं।

हैदरअली अपने समयका अकेला भारतीय नरेश था जिसने अपने समुद्र-तटकी रक्षाके लिए एक जहाज़ी बेड़ा, जिसके प्रत्येक जहाज़पर तोपें लगी हुई थीं, रक्खा था। उसकी जल-सेना अपने समयकी एक ज़बरदस्त जल-सेना थी। उसके जल-सेनापति अली रज़ाने मालद्वीप नामक लगभग बारह हज़ार छोटे-बड़े टापुओंको विजय करके उन्हें हैदरअलीके राज्यमें मिला लिया था।

धार्मिक पक्षपात या तआस्सुबका उसमें निशानतक न था। अपने राज्यकी ऊँचीसे ऊँची पदवियाँ उसने हिन्दुओंको दे रक्खी थीं। उसके मुख्य मन्त्री हिन्दू थे। मैसूरके जिन विद्रोही सामन्तोंको उसने जीता, उनकी गद्दियाँ या तो उन्हींको वापस कर दीं, या दूसरे राजाओंको उनकी जगह बैठा दिया। अपनी हिन्दू और मुसलमान प्रजाके साथ वह एक-सा उदार व्यवहार रखता था। उसने अनेक हिन्दू मन्दिर बनवाये और कई मन्दिरोंको जागीरें दीं। हालमें उस समयके इतिहासकी खोज द्वारा अंग्रेज़ लेखक मि० गैलेरिक आई० सी० एस० ने दिखाया है कि हैदरअलीने राज्य-भरमें गो-रक्षाका उसी तरह सुन्दर प्रबन्ध कर रक्खा था, जिस तरह बाबर तथा

उसके पीछेके मुग़ल बादशाहोंने किया था, अर्थात् हैदरअलीके राज्यमें गो-वधका कड़ा निषेध था और यदि राज्य-भरमें कभी कोई मनुष्य गो-वधका अपराधी होता था, तो उसके हाथ काट लिये जाते थे।

हैदरअली अपने दरबारके अन्दर हिन्दू त्योहारोंको बड़ी धूमधामके साथ मनाया करता था। विशेष कर दशहरेके अवसरपर उसके दरबारमें दस दिन तक लगातार जश्न होता रहता था। रोज़ शामको आतशबाज़ी छूटती थी; साँड़ों, बारहसिंगों, हाथियों और शेरोंकी लड़ाइयाँ होती थीं; कुश्तियाँ होती थीं, दावतें होती थीं, इनाम और इकराम दिये जाते थे; और ग़रीबोंको भोजन, वस्त्र और धन बाँटा जाता था।

मज़हबके नामपर किसी तरहके भी लड़ाई-झगड़ोंको वह घृणाकी दृष्टिसे देखता था। एक बार उसके राज्यमें कहींपर शिया और सुन्नियोंमें झगड़ा हो गया। ज़बानसे बढ़ते बढ़ते मामला ख़ञ्जर और भालों तक पहुँच गया। हैदरके कानों तक ख़बर पहुँची। उसने दोनों पक्षके लोगोंको अपने सामने बुलवाया और उनसे पूछा—यह क्या बेवकूफ़ीका झगड़ा है? तुम लोग कुत्तोंकी तरह एक दूसरेपर क्यों भोंकते हो?

दोनोंने अपनी अपनी बात कह सुनाई। मालूम हुआ कि झगड़ा केवल इस बातपर है कि हज़रत मोहम्मदके कुछ उत्तराधिकारियोंके विषयमें शियोंकी एक राय है और सुन्नियोंकी दूसरी। हैदर अलीने उनसे पूछा—जिन लोगोंके बारेमें तुम्हारा झगड़ा है, क्या वे ज़िन्दा हैं?

जवाब मिला—नहीं।

इसपर हैदरअलीने उनसे कहा—जो लोग मर चुके, उनकी

बाबत अब झगड़ा करना हिमाक़त ह । ख़बरदार ! अगर तुम लोग फिर कभी अपना और सरकारका समय ऐसे झगड़ोंमें बरबाद करोगे तो यकीन रक्खो, तुम्हारे सर कुचल दिये जावेंगे ।

हैदरअलीका इन्साफ़ उस समय दूर दूर तक विख्यात था। उसके जीवन-चरितका एक फ्रान्सीसी रचयिता लिखता है कि उसकी प्रजामें किसी भी गरीबसे गरीब पुरुष या स्त्रीको अधिकार था कि उसके सामने आकर अपनी फ़रियाद पेश करे । पहरेदारोंको हुक्म था कि किसी फ़रियादीको किसी समय भी हुजूरमें आनेसे न रोका जाये । वह बड़े गौरसे सबकी फ़रियाद सुनता था और सबका इन्साफ़ करता था ।

एक बार सन् १७६७ में, जब कि हैदरअली कोयम्बतूरमें था, एक दिन शामको सैरके लिए जा रहा था। रातमें एक बुढ़िया सड़कके एक ओर आकर लेट गई, और ' इन्साफ़ ! इन्साफ़ ' चिल्लाने लगी । हैदरअलीने फौरन अपनी सवारी रोक दी, बुढ़ियाको पास बुलाया और पूछा—क्या मामला है ?

बुढ़ियाने जवाब दिया—जहाँपनाह, मेरे केवल एक बेटी थी और आग़ा मुहम्मद उसे भगा ले गया ।

सुलतानने जवाब दिया—आग़ा मुहम्मदको यहाँसे गए एक महीनेसे ज़्यादा हो गया, तुमने आज तक शिकायत क्यों नहीं की ?

जवाब मिला—जहाँपनाह, मैंने कई बार अर्ज़ियाँ लिखकर हैदर-शाके हाथोंमें दीं, मगर मुझे कोई जवाब नहीं मिला ।

हैदरशा हैदरअलीका खास जमादार था जो उस समय हैदरअलीके आगे आगे चल रहा था । आग़ा मुहम्मद उससे पहलेका ख़ास

जमादार था, जिसे पचीस साल तक रखकर हैदरअलीने पेन्शन और जागीर देकर एक महीना हुआ बिदा कर दिया था। हैदरशाने अपनी सफ़ाईमें आगे बढ़कर अर्ज़ किया—जहाँपनाह, यह बुढ़िया और इसकी बेटी दोनों बदचलन ह।

हैदरअली फ़ौरन महलकी ओर लौट पड़ा और बुढ़ियाको अपने साथ ले गया। महल पहुँचकर जब लोगोंने हैदरअलीसे यह प्रार्थना की कि इस बार हैदरशाको माफ़ कर दिया जाय, तो हैदरअलीने जवाब दिया—मैं आप लोगोंकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकता। किसी बादशाह और उसकी प्रजाके बीचके पत्र-व्यवहारको रोकनेसे बढ़कर कोई गुनाह हो ही नहीं सकता। बलवानोंका कर्तव्य है कि निर्बलोंका इन्साफ़ करें। ख़ुदाने निर्बलोंकी रक्षाके लिए ही बादशाहको बनाया है और जो बादशाह अपनी प्रजाके ऊपर जुल्म होने देता है और जुल्म करनेवालेको दण्ड नहीं देता, वह इस क़ाबिल है कि उसकी प्रजाका प्रेम और विश्वास उसपरसे हट जाय और प्रजा उसके विरुद्ध विद्रोह करने लगे।

हैदरअलीने सबके सामने अपने जमादार हैदरशाहको दो सौ कोड़े लगवाये। साथ ही उसने एक सवार उस बुढ़ियाके साथ आग़ा मुहम्मदके रहनेकी जगह भेजा और हुक्म दिया कि अगर लड़की आग़ा मुहम्मदके यहाँ मिल जाय तो उसे उसकी माँके हवाले कर दिया जाय और आग़ा मुहम्मदका सिर काटकर मेरे सामने पेश किया जाय। और अगर लड़की न मिले तो आग़ा मुहम्मदको गिरफ़्तार करके मेरे सामने लाया जाय। लड़की आग़ा मुहम्मदके यहाँ मौजूद थी। उसे उसकी माके हवाले कर दिया गया और आग़ा मुहम्मदका सिर काटकर हैदरअलीके सामने पेश किया गया।

मीर हुसेनअली खाँ किरमानी लिखता है कि चोर, उचक्के अथवा डाकूका नामतक हैदरअलीके राज्यमें कहीं सुननेमें न आता था। यदि कभी कहींपर चोरी हो जाती थी तो उस स्थानके पुलिस कर्मचारीको फौरन मौतकी सज़ा दी जाती थी और दूसरा आदमी उसकी जगह नियुक्त कर दिया जाता था। हैदरअलीके हज़ारों जासूस सल्तनत-भरमें घूमते रहते थे और उसे प्रजाके सुख-दुखकी ख़बरें देते रहते थे। हैदरअली वेश बदले, कम्बल ओढ़े, रातको श्रीरंगपट्टन तथा अन्य नगरोंकी गलियोंमें घूमा करता था और ग़रीबों तथा यात्रियोंकी ख़बर रखता था।

हैदरअलीकी सारी प्रजा उससे ख़ुश थी। उसके राज्य-भरमें चारों ओर ख़ुशहाली थी। तिजारत, उद्योग-धन्धे और कृषिको ख़ूब उत्तेजना दी जाती थी। वह स्वयं कारीगरों और सौदागरोंकी ख़ूब मदद करता था। लिखा है कि अकेले कोयम्बतूरके बाज़ारमें बीस हज़ार रेशमके थान हर सप्ताह बिकनेके लिए आते थे। यदि कोई सरकारी कर्मचारी प्रजाके ऊपर किसी तरहका जुल्म करता था, तो हैदरअली सदा उसे कड़ीसे कड़ी सज़ा देता था। उसके राज्य-भरमें इस बातकी सख़्त हिदायत थी कि किसानोंसे उनकी नियत माल-गुज़ारीके अतिरिक्त एक कौड़ी भी किसी बहाने न ली जाय।

हैदरअलीकी बुद्धिकी बारीकी और उसकी स्मरण-शक्ति या याददाश्त अलौकिक थी। नेपोलियनके समान वह एक साथ कई कई काम किया करता था। वह जिस वक़्त कोई मामूली तमाशा देखता रहता था उसी वक़्त कुछ लोगोंसे प्रश्न करता रहता था, जवाब देता रहता था, अख़बार सुनता था, चिट्ठियाँ सुनता था, चिट्ठियाँ लिखाता

था और साथ ही अपने मन्त्रियोंके साथ गहरेसे गहरे मसलोंपर बातचीत करता जाता था और उनका फ़ैसला करता रहता था। ये सब काम एक साथ चलते रहते थे।

रोज़ सुबहको जब वह एक चौकीपर बैठकर हाथ-मुँह धोया करता था, उसी समय उसके अनेक जासूस उसकी चौकीके चारों ओर खड़े हो जाते थे और पिछले चौबीस घण्टोंका अपना अपना हाल सुनाते थे। ये सब जासूस एक साथ बोलते थे। हैदर मुँह धोते धोते सबकी बात सुनता था, केवल आवाज़से उन्हें पहचानता था, और जिससे ज़रूरत समझता था, बीच-बीचमें सवाल कर लेता था। मनुष्योंके चरित्रको वह केवल एक बार शक्ल देख कर पहचान जाता था और रंगरूटोंको केवल चेहरे देखकर ही भरती कर लेता था। घोड़ों और जवाहरातकी भी उसे ग़ज़बकी पहचान थी।

हैदरअली वीर था और वीरताकी बड़ी क़द्र करता था। अपने सिपाहियोंके साथ उसका व्यवहार प्रेम, उदारता और बराबरीका रहता था। जिन्हें वह युद्धमें हरा देता था, उनके साथ भी उसका व्यवहार सदा दया और उदारताका होता था। इतना बड़ा बादशाह होनेपर भी उसमें घमण्ड अथवा अभिमानका निशानतक न था। अपने दरबारोंतकमें वह साधारण सिपाहियोंके साथ बराबरीका व्यवहार किया करता था। वह स्वयं एक साधारण सिपाहीका-सा जीवन व्यतीत करता था। भोजन जो सामने आता, खा लेता था। सफरमें वह प्रायः भुने हुए चने, बदाम और ज्वारकी सूखी रोटी या इनमेंसे जो कुछ सामने आ जाता, खा कर रह जाता था। अपने तख़्तपर वह ज़्यादासे ज़्यादा सालमें एक बार ईदके दिन चन्द घण्टोंके लिए बैठता था और वह भी दूसरोंकी प्रार्थनापर।

हैदरअलीका क़द मँझोला था। उसका रङ्ग साँवला था, किन्तु उसके शरीरकी बनावट सुन्दर थी। वह मज़बूत और निहायत फुर्तीला था। वह घोड़ेका बहुत अच्छा सवार था। पैदल लम्बे सफ़र करनेका भी उसे बेहद शौक़ था और आदत थी।

हैदरअलीके शारीरिक परिश्रम और कष्ट-सहनकी कोई सीमा न थी। वह कई कई रातें जंगलमें वारिश और सरदीके अन्दर घोड़ेकी पीठपर गुज़ार देता था।

शिकारका,—विशेषकर शेरके शिकारका, उसको बड़ा शौक़ था। उसके यहाँ अनेक शेर पले हुए थे जो रोज़ सुबह खुले हुए उसके सामने लाए जाते थे। हैदरअली अपने हाथसे इन शेरोंको लड्डू खिलाया करता था। उनके पंजों और जबड़ोंमें वह लड्डू दे दिया करता था। लिखा है कि उसका निशाना कभी चूकता न था। अपने सामने अखाड़ेमें वह अक्सर शेरके साथ अपने किसी एक वीर सिपाहीकी कुश्ती कराया करता था। अगर सिपाही शेरको पछाड़ पाता तो उसे इनाम दिये जाते थे और अगर शेर जीतने लगता, तो हैदर फ़ौरन दूरसे बैठा हुआ शेरकी कनपटीपर गोली मार देता और इससे पहले कि शेरका पंजा सिपाहीपर पड़ सके, शेर गोली खाकर गिर पड़ता था।

उसके एक प्यारे हाथीका नाम 'पवन गज' था, जिसके मरनेपर हैदर अलीने बड़ा दुःख मनाया था। घोड़े खरीदनेका उसे इतना अधिक शौक़ था कि दूर-दूरके मुल्कोंसे घोड़ोंके सौदागर उसके दरबारमें पहुँचते थे और यदि किसी सौदागरका घोड़ा उसके राज्यके अन्दर मर जाता और सौदागर अपने घोड़ेकी अयाल और दुम काटकर स्थानीय कर्मचारीकी सनदके साथ हैदर

अलीके दरबारमें पेश करता था तो घोड़ेकी आधी कीमत उसे ख़ज़ानेसे दिलवा दी जाती थी।

अचानक ६ दिसम्बर सन् १७८२ की रातको आरकाटके किलेमें हैदरअलीकी मृत्यु हो गई।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**अंदाज़ा**—तख़मीना, अनुमान, Estimate.
**जल-सेना**—बहरी फ़ौज, Navy.
**बेजोड़**—लासानी, बेनज़ीर, Second to none.
**सामन्त**—छोटे छोटे करद राजा, Feudal Chiefs.
**उत्तराधिकारी**—वारिस, Heir.
**बदचलन**—बुरे चालचलनवाला, दुराचारी, Of bad Character.
**जासूस**—सुराग़रसा, Detective, Spy.
**जश्न**—उत्सव, जलसा, Festival.
**आतिशबाज़ी**—आगसे खेलना Fire-works.
**इनाम-इकराम**—पारितोषिक, Reward.
**फुर्तीला**—चपल, चंचल, bragile.
**निहायत**—अतिशय, Too much.

# अब्बू ख़ाँकी बकरी

लेखक०—**डाक्टर ज़ाकिर हुसैन**

डाक्टर ज़ाकिर हुसैन साहिब एम० ए०, पीएच० डी० दिल्लीकी मुसलिम विद्या-संस्था जामये मिल्लीया इसलामियाके प्रधान हैं। अर्थ-शास्त्रका आपने ख़ूब अध्ययन किया है। आपकी भाषा बड़ी सरल और सुन्दर होती है, और उसमें दिलकी तह तक पहुँच जानेकी तासीर और ताकत होती है जिसका प्रमाण यह कहानी है। आपने कुछ किताबें बच्चोंके लिए भी लिखी हैं।

महात्मा गाँधीकी वर्धा-स्कीममें आपका भी बहुत हाथ है।

हिमालय पहाड़का नाम तो तुमने सुना ही होगा। इससे बड़ा पहाड़ दुनियामें कोई नहीं है। हज़ारों मील चला गया है और ऊँचा इतना है कि अभी तक उसकी ऊँची चोटियोंपर कोई आदमी नहीं पहुँच पाया। इस पहाड़के अन्दर बहुत-सी बस्तियाँ भी हैं। ऐसी ही एक बस्ती अलमोड़ा भी है।

अलमोड़ामें एक बड़े मियाँ रहते थे। उनका नाम था अब्बू खाँ। उन्हें बकरी पालनेका बहुत शौक़ था। अकेले आदमी थे, बस एक-दो बकरियाँ रखते, दिन-भर उन्हें चराते फिरते। उनके अजीब नाम रखते, किसीका कल्लू, किसीका मुँगिया, किसीका गुजरी, किसीका हुकमा। इनसे न जाने क्या क्या बातें करते रहते और शामके वक्त बकरियोंको लाकर घरमें बाँध देते। अलमोड़ा पहाड़ी जगह है, इस लिए अब्बू खाँकी बकरियाँ भी पहाड़ी नस्लकी होती थीं।

अब्बू खाँ ग़रीब थे बड़े बदनसीब। उनकी सारी बकरियाँ कभी न कभी रस्सी तुड़ाकर रातको भाग जाती थीं। पहाड़ी बकरी बँधे

बँधे घबड़ा जाती है। ये बकरियाँ भाग कर पहाड़में चली जाती थीं। वहीं एक भेड़िया रहता था, वह उन्हें खा जाता था। मगर, अजीब बात है, न अब्बू खाँका प्यार, न शामके दानेका लालच, उन बकरियोंको भागनेसे रोकता था, न भेड़ियेका डर। इसकी वजह शायद यह हो कि पहाड़ी जानवरोंके मिज़ाजमें आज़ादीकी बहुत प्यास होती है। यह अपनी आज़ादी किसी दाम देनेको राज़ी नहीं होते और दुःख और मुसीबतोंको सहकर भी आज़ाद रहनेको आराम और आनन्दकी क़ैदसे अच्छा जानते हैं।

जहाँ कोई बकरी भाग निकली और अब्बू खाँ बेचारे सिर पकड़कर बैठ गए। उनकी समझमें ही न आता था कि हरी हरी घास मैं उन्हें खिलाता हूँ, छिपा छिपाकर पड़ोसियोंके धानके खेतमें उन्हें छोड़ देता हूँ, शामको दाना देता हूँ, मगर फिर भी यह कम्बख़्त नहीं ठहरतीं और पहाड़में जाकर भेड़ियेको अपना खून पिलाना पसन्द करती हैं।

जब अब्बूखाँकी बहुत-सी बकरियाँ भाग गईं, तो बेचारे बहुत उदास हुए और कहने लगे—अब बकरी न पालूँगा। ज़िन्दगीके थोड़े दिन और हैं, बे-बकरियोंहीके कट जायँगे।

मगर तनहाई बुरी चीज़ है, थोड़े दिनों तो अब्बू खाँ बे-बकरियोंके रहे, फिर न रहा गया। एक दिन कहींसे एक बकरी ख़रीद लाये। यह बकरी अभी बच्चा ही थी, कोई साल-सवा सालकी होगी। अब्बूखाँने सोचा कि कम-उम्र बकरी लूँगा, तो शायद हिल जाय और उसे जब पहलेहीसे अच्छे अच्छे चारे-दानेकी आदत पड़ जायगी तो फिर वह पहाड़का रुख़ न करेगी।

यह बकरी थी बहुत खूबसूरत, रंग उसका बिलकुल सफ़ेद था।

बाल लम्बे लम्बे थे, छोटे छोटे, काले-काले सींग ऐसे माल्म होते थे कि किसीने आबनूसकी काली लकड़ीमें खूब मेहनतसे तराश कर बनाये हैं। लाल लाल आँखें तुम देखते तो कहते कि अरे यह बकरी हमने ली होती! वह बकरी देखने ही में अच्छी न थी, मिज़ाजकी भी बहुत अच्छी थी। प्यारसे अब्बू खाँके हाथ चाटती थी। दूध चाहे तो कोई बच्चा दुह ले; न लात मारती थी, न दूधका बर्तन गिराती। अब्बू खाँ तो बस उसपर आशिक़से हो गये थे। इसका नाम चाँदनी रक्खा था और दिन-भर उससे बातें करते रहते थे। कभी कभी चचा घसीटा खाँका क़िस्सा उसे सुनाते थे, कभी मामू नत्थूका।

अब्बू खाँने यह सोचकर कि बकरियाँ शायद मेरे तंग आँगनमें घबड़ा जाती हैं, अपनी उस चाँदनी बकरीके लिए नया प्रबन्ध किया था। घरके बाहर उनका एक छोटासा-खेत था। उसके चारों तरफ़ उन्होंने न जाने कहाँ कहाँसे काँटे जमा करके डाले थे कि कोई उसमें न आ सके। उसके बीचमें चाँदनीको बाँधते थे और रस्सी खूब लम्बी रक्खी थी कि खूब इधर-उधर घूम सके। इस तरह चाँदनीको अब्बू खाँके यहाँ ख़ासा ज़माना गुज़र गया, और अब्बू खाँको यकीन हो गया कि आख़िरको एक बकरी तो हिल गई, अब यह न भागेगी।

मगर अब्बू खाँ धोखेमें थे। आज़ादीकी ख्वाहिश इतनी आसानीसे दिलसे नहीं मिटती। पहाड़ और जंगलमें रहनेवाले आज़ाद जानवरों-का दम घरकी चार-दीवारीमें घुटता है, तो काँटोंसे घिरे हुए खेतमें भी उन्हें चैन नसीब नहीं होता। क़ैद क़ैद सब एक-सी। थोड़े दिनके लिए चाहे ध्यान बँट जाय, मगर फिर पहाड़ और जंगल

याद आते हैं और क़ैदी अपनी रस्सी तुड़ानेकी फ़िक्र करता है। अब्बू खाँका ख़याल ठीक न था कि चाँदनी पहाड़की हवा भूल गई है।

एक दिन सुबह सुबह जब सूरज अभी पहाड़के पीछे ही था कि चाँदनीने पहाड़की तरफ़ नज़र की। मुँह जो जुगालीकी वजहसे चल रहा था, रुक गया और चाँदनीने दिलमें कहा—वह पहाड़की चोटियाँ कितनी ख़ूबसूरत हैं, वहाँकी हवा और यहाँकी हवाका क्या मुक़ाबिला? फिर वहाँ उछलना, कूदना, ठोकरें खाना, और यहाँ हर वक़्त बँधे रहना। गर्दनमें आठ प्रहर यह रस्सी! ऐसे घरोंमें गधे और खच्चर भले ही चुग लें हम बकरियोंको तो ज़रा बड़ा मैदान चाहिए।

इस ख़्यालका आना था और चाँदनी अब वह पहली चाँदनी ही न थी। न उसे हरी हरी घास अच्छी लगती थी, न पानी मज़ा देता था। रोज़-ब-रोज़ दुबली होने लगी। दूध घटने लगा। हर वक़्त मुँह पहाड़की तरफ़ रहता। रस्सीको खींचती और चिल्लाती। अब्बू खाँ समझ गये, हो न हो कोई बात ज़रूर है; लेकिन यह समझमें नहीं आता था कि क्या? एक दिन चाँदनीने उनकी तरफ़ मुँह फेरा और अपनी बकरियोंवाली ज़बानमें कहा—अब्बू खाँ मियाँ, मैं अब तुम्हारे पास रहूँगी, तो मुझे बड़ी बीमारी हो जायगी। मुझे तो तुम पहाड़ ही में चली जाने दो।

अब्बू खाँ बकरियोंकी ज़बान समझने लगे थे। चिल्लाकर बोले—या अल्लाह! यह भी जानेको कहती है, यह भी! हाथके थर-थरानेसे मिट्टीकी लुटिया, जिसमें दूध दुहा था, हाथसे गिरी और चूर-चूर हो गई।

अब्बू खाँ वहीं घासपर बकरीके पास बैठ गए और ग़मगीन आवाज़से बोले—क्यों बेटी चाँदनी, तू भी मुझे छोड़ना चाहती है?

चाँदनीने जबाब दिया—हाँ अब्बू खाँ मियाँ, चाहती तो हूँ।

अब्बू०—अरे क्या तुझे चारा नहीं मिलता या दाना पसन्द नहीं? बनियेने घुने दाने मिला दिये हैं? मैं आज ही और दाना ले आऊँगा।

चाँदनी—नहीं नहीं मियाँ, दानेकी कोई तक़लीफ़ नहीं।

अब्बू—तो फिर क्या रस्सी छोटी है, मैं और लम्बी कर दूँगा।

चाँदनीने कहा—इससे क्या लाभ?

अब्बू०—तो फिर क्या बात है, तू चाहती क्या है?

चाँदनी—कुछ नहीं, बस मुझे तो पहाड़में जाने दो।

अब्बू खाँने कहा—अरी कम्बख़्त! तुझे यह ख़बर है कि वहाँ भेड़िया रहता है? वह जब आयेगा, तो क्या करेगी?

चाँदनीने जवाब दिया—अल्लाहने दो सींग दिए हैं, उनसे उसे मारूँगी।

अब्बू—हाँ हाँ ज़रूर! भेड़ियेपर तेरे सींगोंहीका तो असर होगा! वह तो मेरी कई बकरियाँ हड़प कर चुका है। उनके सींग तुझसे बहुत बड़े थे। तू तो कल्लूको जानती नहीं थी, वह यहाँ पिछले साल थी। बकरी काहेको थी, हिरन थी हिरन! काला हिरन!! रात-भर सींगोंसे भेड़ियेके साथ लड़ी, मगर फिर सुबह होते होते उसने दबोच ही लिया और खा गया।

चाँदनीने कहा—अरे रे रे! बेचारी कल्लू, मगर ख़ैर, अब्बू खाँ मियाँ, इससे क्या होता है, मुझे तो तुम पहाड़में जाने ही दो।

अब्बू खाँ कुछ झुँझलाए और बोले—या अल्लाह, यह भी जाती है! मेरी एक बकरी और उस कम्बख़्त भेड़ियेके पेटमें जाय; मगर नहीं नहीं, मैं इसे तो ज़रूर बचाऊँगा। कम्बख़्त, अहसान-फ़रामोश,

तेरी मरज़ीके ख़िलाफ़ तुझे बचाऊँगा । अब तो तेरा इरादा मालूम हो गया है । अच्छा, बस, चल तुझे कोठरीमें बाँधा करूँगा, नहीं तो मौक़ा पाकर चल देगी ।

अब्बू ख़ाँने आकर चाँदनीको एक कोनेकी कोठरीमें बन्द कर दिया और ऊपरसे ज़ंजीर चढ़ा दी, मगर गुस्सेमें कोठरीकी खिड़की बन्द करना भूल गए । इधर इन्होंने कुंडी चढ़ाई, उधर चाँदनी खिड़कीमेंसे उचककर बाहर ! यह जा, वह जा ।

चाँदनी पहाड़पर पहुँची, तो उसकी खुशीका क्या पूछना था । पहाड़पर पेड़ उसने पहले भी देखे थे, मगर आज उनका और ही रंग था । उसे ऐसा मालूम होता था कि सबके सब खड़े हुए उसे बधाई दे रहे हैं कि फिर हममें आ मिली ।

इधर उधर सेवतीके फूल मारे खुशीके खिलखिलाकर हँस रहे थे । कहीं ऊँची ऊँची घास उससे गले मिल रही थी । मालूम होता था कि सारा पहाड़ मारे खुशीके मुस्किरा रहा है और अपनी बिछुड़ी हुई बच्चीके वापस आनेपर फूला नहीं समाता । चाँदनीकी खुशीका हाल कोई क्या बताए ? न चारों तरफ़ काँटोंकी बाढ़, न खूँटा, न रस्सी । और चारा,—वे जड़ी-बूटियाँ कि अब्बू ख़ाँ ग़रीब अपनी सारी मुहब्बत और स्नेहके होते हुए भी न ला सकते ।

चाँदनी कभी इधर उछलती, कभी उधर । यहाँसे कूदी, वहाँ फाँदी । कभी चट्टानपर है, कभी खड्डमें । इधर ज़रा फिसली, फिर सँभली । एक चाँदनीके आनेसे सारे पहाड़में रौनक़-सी आ गई थी । ऐसा मालूम होता था कि अब्बू ख़ाँकी दस-बारह बकरियाँ छूटकर यहाँ आ गई हैं ।

एक दफ़ा घासपर मुँह मारकर जो ज़रा सिर उठाया तो चाँदनीकी

नज़र अब्बू खाँके मकान और उस काँटोंवाले घेरेपर पड़ी। उन्हें देखकर वह खूब हँसी और दिलमें कहने लगी—कितना ज़रा-सा मकान है! मैं इतने दिन उसमें कैसे रही! इसमें आख़िर समाती कैसे थी!—पहाड़की चोटी परसे उस नन्हीं-सी जानको नीचे सारी दुनिया हेच नज़र आती थी।

चाँदनीके लिए यह दिन भी अजीब था। दोपहर तक इतनी उछली-कूदी कि शायद सारी उम्रमें इतनी उछली-कूदी न होगी। दोपहर ढले उसे पहाड़ी बकरियोंका एक गल्ला दिखाई दिया। गल्लेकी बकरियोंने उसे खुशी खुशी अपने पास बुलाया और उससे हाल-अहवाल पूछा। गल्लेमें कुछ जवान बकरे भी थे, उन्होंने भी चाँदनीकी बड़ी खातिर-तवाज़ा की, बल्कि उसमें एक बकरा था, जरा काले काले रंगका, जिसपर कुछ सफ़ेद टप्पे थे। वह चाँदनीको भी अच्छा लगा और यह दोनों बहुत देरतक इधर उधर फिरते रहे। उनमें न जाने क्या क्या बातें हुईं!—और कोई तो था नहीं, एक सोता पानीका बह रहा था, उसने सुनी होंगीं। कभी कोई वहाँ जाय और उस सोतेसे पूछे, तो शायद कुछ पता लगे। और फिर भी क्या खबर, वह सोता भी शायद न बताए।

ख़ैर, बकरियोंका गल्ला तो न मालूम किधर चला गया। वह जवान बकरा भी इधर उधर घूमकर अपने साथियोंमें जा मिला।

शामका वक्त हुआ। ठण्ढी हवा चलने लगी। सारा पहाड़ लाल-सा हो गया और चाँदनीने सोचा, ओह हो, अभीसे शाम!

नीचे अब्बूखाँका घर और वह काँटोंवाला घर दोनों कुहरेमें छिप गये। नीचे कोई चरवाहा अपनी बकरियोंको बाड़ेमें बन्द करनेके लिए

जा रहा था, उनकी गर्दनकी घंटियाँ बज रही थीं। चाँदनी उस आवाज़को खूब पहचानती थी। उसे सुनकर उदास-सी हो गई। होते होते अँधेरा होने लगा और पहाड़में एक तरफ़से आवाज़ आई—खूँ-खूँ!

यह आवाज़ सुनकर चाँदनीको भेड़ियेका ख़याल आया। दिन-भर एक दफ़ा भी उसका ध्यान उधर न गया था। पहाड़के नीचेसे एक सीटी और बिगुलकी आवाज़ आई। यह बेचारे अब्बूखाँ थे जो आख़िरी कोशिश कर रहे थे कि उसे सुनकर चाँदनी फिर लौट आए। इधरसे वह कह रहे थे, 'लौट आ, लौट आ'। उधरसे दुश्मन-जान भेड़ियेकी आवाज़ आ रही थी।

चाँदनीके जीमें कुछ तो आई कि लौट चलें; लेकिन उसे खूँटा याद आया, रस्सी याद आई, काँटोंका घर याद आया और उसने सोचा कि उस ज़िन्दगीसे यहाँकी मौत अच्छी। आख़िरको सीटी और बिगुलकी आवाज़ बन्द हो गई। पीछेसे पत्तोंकी खड़खड़ाहट सुनाई दी। चाँदनीने मुड़कर देखा तो दो आँखें अँधेरेमें चमक रही थीं। भेड़िया पहुँच गया था।

भेड़िया ज़मीनपर बैठा था, नज़र बेचारी बकरीपर जमी थी। बकरीने जो उसकी तरफ़ देखा, तो यह मुस्कराए और बोले—ओह-ओ! अब्बूखाँकी बकरी है। खूब खिला-पिलाकर मोटा किया है। यह कहकर उसने अपनी लाल लाल ज़बान, अपने नीले नीले होंठोंपर फेरी। चाँदनीको कल्लूकी कहानी याद आई। उसने सोचा कि मैं क्यों रात-भर लड़कर सुबह जान दूँ? अभी क्यों न अपनेको सुपुर्द कर दूँ? मगर फिर ख़्याल किया कि नहीं। अपना सिर झुकाया, सींग आगेको किये और पैंतरा बदलकर भेड़ियेके सामने आई कि बहादुरोंका यही स्वभाव है!

कुछ देर जब गुज़र गई तो भेड़िया बढ़ा। चाँदनीने भी सींग सँभाले और वह हमले किये कि भेड़िया ही जानता होगा। दसों मरतबा उसने भेड़ियेको पीछे रेल दिया। सारी रात इसीमें गुज़री। कभी कभी चाँदनी ऊपर आसमानकी तरफ़ देख लेती और सितारोंसे आँखों-आँखोंमें कह देती—ऐ! कहीं इसी तरह सुबह हो जाय!

सितारे एक एक करके ग़ायब हो गए। चाँदनीने आख़िरी वक़्तमें अपना ज़ोर दुगुना कर दिया। भेड़िया भी तंग आ गया था कि दूरसे एक रोशनी-सी दिखाई दी। एक मुर्ग़ने कहींसे बाँग दी। चाँदनीने दिलमें कहा कि अल्लाह तेरा शुक्र है। मैंने अपने बस-भर मुक़ाबिला किया, अब तेरी मरज़ी!

चाँदनी बेदम ज़मीनपर गिर पड़ी। उसका सफ़ेद बालोंका लिबास ख़ूनसे बिलकुल सुर्ख़ था। भेड़ियेने उसे दबोच लिया और खा गया।

और दरख़्तपर चिड़ियाँ बैठी देख रही थीं। उनमें इसपर बहस हो रही है कि जीत किसकी हुई? बहुत कहती हैं कि भेड़िया जीता। एक बूढ़ी-सी चिड़िया है, वह कहती है—चाँदनी जीती!

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**मिज़ाज**—स्वभाव, Nature
**तनहाई**—अकेलापन, एकान्त Solitude.
**आबनूस**—एक काले रंगके वृक्षका नाम है, Ebony
**आशिक़**—आसक, प्रेमी, Lover
**आँगन**—सेहन, Court-yard
**गल्ला**—रेवड़, पशुओंका झुंड, Herd
**चरवाहा**—गड़रिया, भेड़-बकरियाँ चरानेवाला, Shepherd

# ख़ुदाईका मास्टरपीस

लेखक—**स्व० ब्रजमोहन वर्मा**

सन् १८९७—१९३७

वर्माजी बचपनमें बीमार हो गए थे। यह बीमारी बड़ी देरके बाद उनके प्राण तो छोड़ गई, साथ ही अपनी निशानी भी छोड़ गई,—वर्माजीकी गरदन ऐंठ गई, और टाँगोंने चलनेसे जवाब दे दिया। इसके बाद वर्माजी लकड़ियाँ लेकर चलते थे। बैठनेमें भी उन्हें कष्ट होता था। इसपर भी जब देखा, हँसते और हँसाते देखा। यों कहनेको 'विशाल-भारत'के सहकारी सम्पादक थे, मगर काम सम्पादकसे भी ज़्यादा करते थे। 'ख़ुदाईका मास्टरपीस' पढ़नेसे मालूम होगा कि उनकी अकाल-मृत्युने हमारे साहित्य-संसारसे किस तरहका हीरा-कलाकार छीन लिया।

जब आदम और हव्वाने अदनके बग़ीचेमें ख़ुदाके मना किये हुए फलको चुराकर खाया, तो ख़ुदाको बड़ा गुस्सा आया, और उसने इन दोनों गुनहगारोंको ज़मीनपर ढकेल दिया। आदम और हव्वाको ज़मीनपर गिरनेका बड़ा रंज हुआ। कहाँ स्वर्गका सुख और सौन्दर्य और कहाँ दुनियाकी सूखी धरती! अपने पुराने दिनोंकी याद करके दोनों ज़ार ज़ार रोते और पछताते थे

उनका रोना और पछताना देखकर ख़ुदाको भी उनपर तरस आया; इसलिए उसने इसी ज़मीनपर उन दोनोंके आरामके सारे सामान बनाये। लेकिन फिर भी आदम और हव्वाके जीवनमें विचित्रता और रंगीनी न थी। उनके जीवनमें विचित्रता और रंगीनी लानेके लिए ख़ुदाने एक एक करके नौ रसोंकी सृष्टि की है।

आदम और हव्वाको अब अपने इसी जीवनपर सन्तोष करना पड़ा। वे दोनों रोज़ नियमसे खुदाकी इबादत करते थे। ज़िन्दगी-भर इबादत करनेपर खुदा उनपर खुश हुआ, और बोला—माँगो, क्या माँगते हो ?

आदमने कुछ कहनेके लिए ज़बान खोली ही थी कि हव्वा बोली—ऐ खुदा, मैं तेरी खुदाईका करिश्मा देखना चाहती हूँ। तू कोई ऐसी चीज़ बना जो तेरी सारी दुनियासे निराली हो, जिसमें नवों रसोंका मेल हो, जिसे देखकर खुशी हो, जिसे देखकर रंज हो, जिसे देखकर हँसी आये, जिसे देखकर रुलाई आये, जिससे मुहब्बत पैदा हो, जिससे नफ़रत पैदा हो, जिसमें वीरता हो, जिसमें कायरता हो। गरज़ यह कि वह दुनियाकी सारी चीज़ोंमें अजीबो-ग़रीब हो।

खुदाने कहा—तुम दोनोंकी उम्र अब बहुत थोड़ी बाकी रह गई है। अगर मैं ऐसी चीज़ बनाऊँ भी, तो उसे बनानेमें इतने दिन लगेंगे कि तुम लोग उसका लुत्फ़ न उठा सकोगे, इसलिए कुछ और माँगो।

आदमने भी हव्वाको समझाया। पर उसने कहा—कुछ परवा नहीं, अगर हम दोनों उसका मज़ा न उठा सकेंगे, तो हमारी औलाद तो उसका मज़ा चख सकेगी।

अब खुदा सोचमें पड़ गया कि वह कौन-सी ऐसी चीज़ बनावे, जिसमें हव्वाकी सारी बातें मिल सकें। वह सोचता रहा, सोचता रहा। दिन बीते, हफ्ते बीते, वर्ष बीते, सदियाँ बीतीं;—लाखों-करोड़ों वर्ष बीत गये। फिर भी खुदाकी समझमें न आया कि वह ऐसी अजीबो-

ग़रीब चीज़ क्या बनाये? यहाँ तक कि जार्ज स्टीफेन्सनने रेलके इंजन-का आविष्कार कर डाला। इस इंजनको देखकर एकाएक खुदाको एक विचार सूझा, और उसने कुछ ही दिनमें हव्वाकी मनचाही चीज़ बनाकर तैयार कर दी, जिसका नाम रखा गया थर्ड क्लास!

२

'थर्ड क्लास'में सचमुच हव्वाकी कही हुई हर चीज़ मौजूद है। उसे देखकर हँसी आती है, उससे खुशी होती है, वह सैकड़ोंको वीर बनाकर मरने-मारनेपर तैयार कर देती है, वह लाखोंको कायर बनाकर हर तरहका अपमान सहनेको मजबूर करती है। उसमें भयानकता है, उसमें शान्ति है। उसमें हरएक रस है, हरएक रूप है, हरएक रंग है। गरज़ यह कि थर्ड क्लास खुदाईका 'मास्टरपीस' है।

भला, यह कैसे सम्भव था कि ऐसी अद्भुत चीज़ बने और वह लोकप्रिय न हो? थर्डक्लास बढ़ा और ख़ूब बढ़ा। आज संसारमें सबसे अधिक प्रचार उसीका है। करोड़ों आदमी उसके भक्त और सेवक हैं। रेलसे बढ़कर वह गाड़ी, इक्का, ताँगा, सिनेमा, वायसकोप, थियेटर,—हर जगह, हर चीज़में फैल गया। किन्तु उसका पूरा विकास स्टीमर या जहाज़पर ही हुआ है।

सबसे पहली बात यह है कि स्टीमरपर पहुँचकर थर्ड क्लासके मुसा-फिरको 'डेक-पैसेंजर'का लक़ब मिल जाता है। 'डेक' शब्दका अर्थ है जहाज़का तल्ला या खंड, और 'पैसेंजर' शब्दके मानी हैं 'यात्री'। फर्स्ट-सेकेण्ड क्लासवालोंका स्थान भी जहाज़के किसी न किसी डेकपर ही होता है; पर उन्हें 'डेक-पैसेंजर' नहीं कहते।

इस थर्ड क्लासकी पूरी शान देखनेके लिए आपको यूरोप या

अमेरिका जानेकी ज़रूरत नहीं है। आप मेरे साथ ब्रिटिश इंडिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनीके स्टीमरपर कलकत्तेसे रंगून तककी यात्रा कर डालिए, आपको सिर्फ चौदह रुपयेमें खुदाके इस सबसे बड़े करिश्मेका मज़ा मिल जायगा।

३

स्टीमर नौ बजे छूटनेवाला है। चूँकि डेक-पैसेंजरके लिए कोई स्थान रिज़र्व नहीं होता इसलिए अच्छी जगह मिलनेकी आशासे छह बजे सबेरे ही आउटरम घाटपर पहुँचता हूँ, तो देखता हूँ कि लोग तीन ही बजे रातसे आकर घाटपर धूनी रमाये बैठे हैं, यद्यपि स्टीमरका कहीं पता भी नहीं।

घाटपर पहुँचकर एक और बड़ी बातका ज्ञान होता है वह यह कि स्टीमरके थर्डक्लासका हरएक यात्री पैदाइशी मुजरिम और 'स्मगलर' होता है,—कमसे कम कस्टम-विभागकी तो यही राय है। डेकका टिकट खरीदते ही इस बातकी सम्भावना पैदा हो जाती है कि आप अफ़ीम, कोकीन आदि वर्जित वस्तुओंको चोरीसे ले जा रहे हैं, इसी लिए कस्टमवाले आपकी एक एक चीज़की तलाशी लेते हैं। फर्स्ट या सेकेण्ड क्लासका टिकट लेनेपर आपके मुजरिम होनेकी सम्भावना अपने आप लोप हो जाती है, फिर कोई नहीं पूछता।

आठ बजे घाटका फाटक खुलता है, और स्टीमरपर दो सीढ़ियाँ लगी हुई दीख पड़ती हैं। एक सीढ़ी बिलकुल ख़ाली नज़र आती है, उसपर इक्के-दुक्के मुसाफिर ही चढ़ते दीख पड़ते हैं; मगर दूसरी सीढ़ीपर ऐसी दौड़ादौड़ होती है मानो नादिरशाहके सिपाही दिल्लीकी लूटके लिए पिल पड़े हों। माल-असबाब लादे कुली, बोरिया-बकुचा

लटकाये यात्री और कच्चे-बच्चोंको घसीटती हुई स्त्रियाँ,—सबके सब जी-जान छोड़कर सीढ़ीपर भाग रहे हैं। पूछनेपर मालूम होता है कि पहली सीढ़ी है फर्स्ट-सेकेण्डवालोंका स्वर्ग-सोपान और दूसरी डेक पैसेंजरोंकी नरक-नसेनी! ऊपर पहुँचते ही लोग एक एक कम्बल, दरी, चटाई या टाट बिछाकर और उसे चारों ओरसे अपने असबाबसे घेरकर जगहपर कब्ज़ा जमा लेते हैं।

जहाज़ नौ बजे छूटता है। मगर इस एक घंटेके बीचमें जो नाटक डेकपर होता है, वह अद्भुत है। किसीका बच्चा खो गया है, किसीका बिस्तर गुम हो गया है, किसीका पैर कुचल गया है, किसीकी सुराही फूट गई है, किसीको बिछोहका दुःख है, किसीको यात्राकी खुशी है,—ग़रज़ यह कि हर आदमीके पास रोने, हँसने, चीख़ने, चिल्लाने और हाय-तोबा मचानेका एक न एक कारण मौजूद है, और वह उस कारणका पूरा पूरा उपयोग कर रहा है।

जहाज़ चलने लगता है। डेक पैसेंजरोंका शोर-गुल भी ठंडा पड़ने लगता है। देखता हूँ कि डेक मुसाफ़िरोंके तीन लोक हैं। उनकी एक दुनिया मेरे सरके ऊपर बसी है, और दूसरी मेरे पैरोंके नीचे आबाद है। मैं मध्य-मार्गका पथिक हूँ, मेरा स्थान बीचके डेकपर है। टाल्सटायने एक कहानी लिखी है जिसका नाम है, 'आदमीको कितनी भूमि चाहिए?' इस कहानीमें उसने सैकड़ों मील धरती नापकर अन्तमें यह बताया है कि हर आदमीको सिर्फ साढ़े पाँच हाथ जगह ( क़ब्र-भरकी ) चाहिए। मगर स्टीमर कम्पनी टाल्सटायसे भी कहीं आगे बढ़ी हुई है, क्योंकि देखता हूँ कि डेक मुसाफ़िरोंमें अनेक अभागोंको मुश्किलसे साढ़े चार फीट जगह मिल सकी है!

मुसाफ़िरोंपर नज़र डालनेसे जान पड़ता है कि डेकपर कोई अखिल एशियाई कानफरेन्स हो रही है जिसमें ईरान, काबुल, कन्धार, पंजाब, युक्त-प्रान्त, बिहार, बंगाल, आसाम, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र, तामिल-नाड्, उड़ीसा, लंका, बर्मा, मलाया, सयाम, चीन, जापान आदि देशों और प्रदेशोंने अपने अपने प्रतिनिधि भेजे हैं। उनमें स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी हैं।

डेककी दुनिया कुछ अजीब चहल-पहलकी दुनिया है। एक ओर सूरती मुसलमानोंके एक दलने ताशका अड्डा जमा रखा है, दूसरी ओर एक भाटिया परिवारके घरेलू जीवनका नक़शा फैला है। लड़के खेल रहे हैं, माताएँ बच्चोंको दूध पिला रही हैं, और उनके भोले पति-देव तरकारीके लिए आलू-परवल छील रहे हैं। एक पढ़े-लिखे सज्जन 'स्टेट्समैन' पढ़ रहे हैं, कुछ गुजराती छोकरे सिनेमाके किसी पत्रमें देख-देखकर एक्ट्रेसोंके सौन्दर्यका मूल्य आँकनेमें व्यस्त हैं, और कुछ लोग गप-शपमें मस्त हैं। जहाज़के कुछ ख़लासी केला, नीबू, ताश और सोडा-लेमोनेड बेचनेकी कोशिशमें हैं। एक पाईका केला एक पैसेमें, धेलेका नीबू दो पैसेमें, छे पैसेके ताश चार आनेमें और दो पैसेका लेमोनेड दो आनेमें बिक रहा है। हर चीज़ थर्ड क्लास है, और हो क्यों नहीं? आख़िर हम भी तो थर्ड क्लासके ही मुसाफ़िर हैं!

सहसा संगीत सुनाई पड़ता है। चारों ओरसे गानेकी आवाज़ आती है। देखता हूँ कि यह अखिल एशियाई कानफरेन्स वास्तवमें अख़िल एशियाई संगीत-सम्मेलन ही है। जान पड़ता है कि हरएक प्रान्त और हरएक देशने अपने अपने तानसेनोंको चुन-चुनकर ही

यहाँ भेजा है। एक काबुली अपने दगदर्रो स्वरमें भैरव राग अलाप रहा है। एक चीनी लड़की अपनी भाषामें कुछ गुनगुना रही है। एक ठिकानेपर दो-तीन बिहारी भाई उँगलियोंसे कान बन्द करके बिरहा गा रहे हैं। एक दूसरी जगह चार-पाँच हिन्दुस्तानियोंका एक दल बड़े जोश-खरोशके साथ आल्हा पढ़ रहा है।

यह जानकर प्रसन्नता होती है कि जहाज़ी कम्पनीको इस बातका पता है कि 'डेक पैसेंजर' नामधारी जीव भी कुछ खाता है। इसीलिए जहाज़पर हलवाईकी एक दूकान भी है। पाखाने और नलके पास एक छोटी कोठरीमें हलवाई देवता विराजते हैं। उसमें उनका चूल्हा है, भंडार है, दूकान है। भंडारके लिए दो बड़े बड़े लोहेके टब हैं जिनपर काला कोलतार पुता है। उन काले काले गन्दे टबोंको देखकर ही कुछ खानेकी इच्छा अपने आप दूर हो जाती है।

बरसातके दिन हैं, आसमानपर बादलखाँकी तबीयत मज़ेमें आती है और वे भड़भड़ाकर बरस पड़ते हैं। डेककी यात्राका लुत्फ़ तो बरसातहीमें है। सबसे ऊपरवाले डेकके यात्रियोंपर छायाके लिए है केवल कैनवासका तिरपाल। किन्तु कहाँ भादोंके दल बादल मेघ और कहाँ बेचारा बी० आई० कम्पनीका तिरपाल! थोड़ी ही देरमें ऊपरके यात्रियोंका साज-सामान ही नहीं, शरीर तक तर-बतर हो जाता है। सोचता हूँ कि फर्स्ट-सेकेण्ड क्लासवालोंको यह सुख कहाँ नसीब?

मेल-स्टीमर होनेके कारण जहाज़ बहुत तेज़ीसे जा रहा है। गंगाका पीला पानी हरा हुआ, फिर नीला हुआ, फिर एकदम काला हो गया। अब चारों तरफ़ पानी ही पानी है। बंगालकी खाड़ी आ गई। समुद्रमें काली काली ऊँची तरंगें उठ रही हैं। चारों ओर समुद्र आसमानसे 'शेकहैण्ड' करता दीख पड़ता है।

अभी तक गाना जारी है एक दर्जनसे अधिक भाषाओंमें। मैं सोचता हूँ, क्या ये सब लोग एक ही भाषा नहीं बोल सकते ? क्या इनके गलोंसे एक ही आवाज़ नहीं निकल सकती ? एक विशाल तरंग स्टीमरसे टकराकर हुंकार मारती है, मानो कह रही है—हाँ, निकल क्यों नहीं सकती; देखो, मैं अभी सभीके गलोंसे एक ही स्वर निकाले देती हूँ। तरंगें बढ़ने लगती हैं, जहाज़ ज़ोरसे हिलने-डुलने लगता है। यह देखिए, अब तो सचमुच ही चीनी-जापानी, हिन्दुस्तानी-बंगाली, उड़िया-गुजराती,—सभीके कंठोंसे एक ही ध्वनि, एक ही आवाज़ निकलने लगती है; वह है क़ै करनेकी आवाज़। अँधेरा हो जाता है, लोग सो जाते हैं।

सबेरा होता है, मगर आजकी डेककी दुनिया, कलकी दुनियासे बिलकुल निराली है। आज चहल-पहल नहीं है, गाना-बजाना नहीं है, गप-शप नहीं है, खान-पान नहीं है। उसके बजाय आज मनहूसियत है, मुर्दनी है, सन्नाटा है। सब चुपचाप मुर्दोंकी भाँति मुँह लपेटे पड़े हैं,—कोई सीधा, कोई उलटा। कल इसी डेकपर बाज़ार या मेलेका शोर था, आज मरघट या क़ब्रस्तानकी खामोशी है। सारा दिन ऐसे ही बीतता है। हाँ, आज लहरोंका ताण्डव-नृत्य और गम्भीर गर्जन खूब ज़ोरपर है।

प्यास लगती है, बटलरसे पूछता हूँ, बर्फ़ मिलेगी ? जवाब मिलता है, बर्फ़ सिर्फ़ फर्स्ट-सेकेण्ड क्लासवालोंको ही मिल सकती है, डेक पैसेंजरोंको नहीं,—दाम देनेपर भी नहीं। सोचता हूँ, डेकवालोंको बर्फ़ क्यों नहीं मिलती ? कोई कारण समझमें नहीं आता, सिवा इसके कि कम्पनी शायद यह समझती है कि डेक यात्रीको ठंडक

पहुँचानेके लिए बरसातका पानी और समुद्रकी लहरोंसे उड़े हुए नमकके छींटे ही काफी हैं। उन्हें बर्फकी क्या ज़रूरत है ?

बीच-बीचमें पानी बरस जाता है जिसकी बौछार बीचके डेकपर मेरे बिस्तर तक पहुँचती है। मगर किया क्या जाय, मेरे पास इधर उधर सरकनेकी जगह नहीं है, और कैनवासके पर्दोंमें पानी रोकनेका सामर्थ्य नहीं है। ख़ैर, दिन कटता है रात आती है। लोग सो जाते हैं, मगर मुझे नींद नहीं आती। अब बादल छट गये हैं, खूब चाँदनी खिली है। चाँदनीमें नाचती हुई तरंगोंका नृत्य, जगह-जगहपर उठता हुआ सफेद झाग, उड़नेवाली मछलियोंका उड़ना और गिरना, —ये सब मिलकर एक अजीब समाँ पैदा कर देते हैं।

सबेरा होता है। पानीके रंगमें कालेपनकी कमी भूमिकी निकटता प्रकट करती है। डेकपर सहसा फिर ज़िन्दगी आती है। कल जितने आदमी निश्चल पड़े थे, आज वे सहसा सजग हो उठे। जान पड़ता है, किसी मसीहाने अपना जादूका डंडा छुआकर इन मुर्दोंको फिर ज़िन्दा कर दिया है। थोड़ी देरके बाद झुंडकी झुंड समुद्री चिड़ियाँ आ-आकर जहाज़के ऊपर मँड़राने लगती हैं, और दूर किसी पगोडाका ऊँचा शिखर दीख पड़ता है। उसे देखकर डेक-दुनियामें फिर वही कोलाहल, फिर वही हंगामा हो जाता है। कोई माल-असबाब बाँधता है, कोई प्रसन्नतासे गाता है, और कोई चौबीस घंटेके व्रतके बाद उदर-देवकी पूजा कर रहा है। फैले हुए बिस्तर सिमटने लगते हैं, खुले हुए बक्सोंमें ताले पड़ते हैं।

दो बजे जहाज़ रंगून पहुँच जाता है। सीढ़ियाँ लगाई जाती हैं, और मुसाफिर उतरते हैं। नीचे उतरकर मैं समझता हूँ कि

चली डेक-यात्रा या डेक-यातना ख़त्म हुई। मगर नहीं, डेक-पैसेंजर इतनेसे ही छुटकारा नहीं पाता। बिदाईकी लात तो अभी बाकी ही है। देखता हूँ कि डेक-संसारके सारे प्राणी अपने माल-असबाबके साथ एक कटहरेमें बन्द हैं। यहाँ पुलिस हर यात्रीसे उसका नाम, बापका नाम, जाति-पेशा आदि इतनी बातें पूछती है, मानो उसे यात्रीसे सगाई-सम्बन्ध करना हो! फर्स्ट-सेकेंड क्लासके यात्री इस झंझटसे बरी होते हैं। पुलिसको उनके बापोंकी ज़रूरत नहीं होती। अब डाक्टर आते हैं, हरएक डेक-यात्रीको टीका लगाते हैं और उसके कपड़ोंमें भाप देते हैं।

अधिकारियोंका ख़याल है कि थर्ड क्लासका यात्री बीमारीके कीड़ोंका आनरेरी प्रचारक है। कहीं वह बर्मामें इन कीटाणुओंका प्रचार न कर दे, इसीलिए यह कारवाई की जाती है। मान लीजिए कि आपके शरीरमें दुनिया-भरके संक्रामक रोगोंके कीटाणु भरे पड़े हैं, पर यदि आप खनखनाते हुए इकसठ रुपये खर्च करके सेकेंड क्लासका टिकट खरीद लें, तो बिना किसी इलाजके ही आपकी रोग-प्रसारिणी शक्ति अपने आप नष्ट हो जायगी। तब रंगूनमें न तो आपके टीका ही लगाया जायगा और न आपके कपड़े ही भपाये जायँगे।

एक बात और भी मजे़की है। रोगोंकी रोक-थामकी यह कार्रवाई केवल बर्मा जानेवाले डेक-यात्रियोंके साथ ही की जाती है। बर्मासे कलकत्ते लौटनेवाले यात्रियोंके न तो टीका दिया जाता है, और न उनके कपड़े ही भपाये जाते हैं। कदाचित् हमारे अधिकारी हम भारतीयोंके लिए रोगोंको आवश्यक समझते हैं, तभी तो उन्होंने संसार-भरके लोगोंको भारतमें तरह-तरहकी बीमारियोंके कीड़े लानेका अधिकार दे रखा है!

दौड़ना-धूपना, चढ़ना-उतरना, हँसना-रोना, गाना, वमन करना, लड़ना-भिड़ना, भूखा रहना, पानीमें भीगना, धूपमें तपना, हवामें सूखना, टीका लगना और अन्तमें गरमागरम भापसे गुजरना इत्यादि रंग-बिरंगी क्रियाओंके बाद डेक-यात्राका पर्व समाप्त होता है।

थर्डक्लासमें कलकत्तेसे रंगून तककी यात्रा करनेके बाद भी यदि कोई व्यक्ति थर्ड क्लासको खुदाईका मास्टरपीस नहीं मानता, तो समझ लीजिए कि वह एकदम थर्ड क्लास आदमी है !

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**आदम और हव्वा**—Adam and Eve.
**गुनहगार**—पापी, Sinner.
**करिश्मः**—चमत्कार Miracle.
**लुत्फ़**—मज़ा, स्वाद,
**यातना**—तकलीफ़, कष्ट,
**आविष्कार**—ईजाद, Invention.
**लोकप्रिय**—हरदिल अज़ीज़, Populai.
**विकास**—बढ़ती, नश्वोनुमा, Evolution
**लक़ब**—ख़िताब, उपाधि, Title.
**ख़लासी**—कुली, Porter.
**तिरपाल**—Canopy.
**पगोड़ा**—बौद्ध, मन्दिर, Pagoda.

# पद्य

# कर-जुग

### स्व० नज़ीर अकबराबादी

जब हिन्दुस्तानी भाषाका इतिहास लिखा जाएगा, तो नज़ीर हिन्दुस्तानीका सबसे पहला और सबसे बड़ा कवि माना जाएगा, और हिन्दुस्तानीके लेखक उनपर श्रद्धाके फूल चढ़ाएँगे। आज हम जिस लोक-भाषाका सुपना देख रहे हैं, वह नज़ीर आजसे बरसों पहले लिख गया है। उसकी भाषामें न मुश्किल उर्दूके लफ़्ज़ हैं, न कठिन हिन्दीके शब्द; और यही हिन्दुस्तानी है।

दुनिया अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स याँकी साथ ले,
नेकीका बदला नेक है, बदसे बदीकी बात ले।
मेवा खिला, मेवा मिले, फल-फूल दे, फल-पात ले,
आराम दे आराम ले, दुख-दर्द दे आफ़ात ले।

कल-जुग नहीं करजुग है यह, याँ दिनको दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे उस हाथ ले।

जो औरको फल देवेगा, वह आप भी फल पाएगा,
गेहूँसे गेहूँ, जौसे जौ, चावलसे चावल पाएगा।
जो आज देवेगा यहाँ, वैसा वह वाँ कल पाएगा,
कल देवेगा, कल पावेगा, कलपेगा गर कलपाएगा।

कलजुग नहीं करजुग है यह, याँ दिनको दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है? इस हाथ दे उस हाथ ले।

जो चाहे ले चल इस घड़ी, सब जिन्स याँ तैयार है,
आरामसे आराम है, आज़ारसे आज़ार है।
दुनिया न तू इसको समझ, दरियाकी यह मँझधार है,
औरोंका बेड़ा पार कर, तेरा भी बेड़ा पार है।
कलजुग नहीं कर-जुग है यह, याँ दिनको दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे उस हाथ ले।

अपने नफ़ेके वास्ते मत औरका नुक़सान कर,
तेरा भी नुक़साँ होएगा, इस बातका भी ध्यान कर।
खाना जो तू खा, देखकर, पानी पिए तो छानकर,
याँ पाँवको रख फूँककर, और ख़ौफ़से गुज़रानकर।
कलजुग नहीं कर-जुग है यह, याँ दिनको दे और रात ले।
क्या ख़ूब सौदा नक़्द है, इस हाथ दे उस हाथ ले।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**कर-जुग**—कर्मयुग, काम करनेका युग, The Era of Action.
**याँ**—यहाँकी जगह कभी कभी याँ भी लिख दिया जाता है।
**आफ़ात**—आफ़तका बहुवचन, संकट, Catastrophe, Disaster.
**कल**—आनेवाला दिन, Tomorrow; गुज़रा हुआ दिन Yesterday.
**कलपाना**—दुःख देना, तकलीफ़ देना, To cause pain.
**आज़ार**—दुःख, रंज, Trouble.
**नफ़ा**—लाभ, फ़ायदा, Gain.
**नुकसाँ**—नुक़सान, हानि, Loss.
**गुज़रान कर**-गुज़ारा कर, To pull on, To make a living.
**जिन्स**—वस्तु, चीज़, Product.
**नेक और बद**—भला और बुरा, Good and Bad.

# उसकी महिमा

## स्व० मौलाना अलताफ़ हुसैन हाली

पानीपत ( पंजाब ) के रहनेवाले थे, सन् १८३५ में पैदा हुए। फ़ारसी, अरबी ख़ूब पढ़े थे। उस ज़मानेमें कवि लोग प्रेम और यौवनके सिवाय और कुछ लिखते ही न थे, न किसीको ख़याल था कि कविताका पौधा किसी दूसरे बाग़में भी फल-फूल सकता है। हाली साहबने क़ौमी और क़ुदरती कविताएँ लिखनी शुरू कीं, तो लोगोंने वाह वाह कहकर सिरपर उठा लिया। देखते देखते कविताका रंग-रूप बदल गया, और बीसियों कवि हालीके रंगमें लिखने लगे। सरकारने इन्हें ' शम्सुल उलमा ' का ख़िताब दिया। ' मुक़द्दमा शेर-शायिरी,' 'मुसद्दिस-हाली' और 'दीवान हाली' आपकी बड़ी मशहूर पुस्तकें हैं।

सबसे अनोखे, सबसे निराले,<br>
आँखसे ओझल, दिलके उजाले !

ऐ अँधोंकी आँखके तारे,<br>
ऐ लँगड़े लूलोंके सहारे !

नाव जहाँकी खेनेवाले,<br>
दुखमें तसल्ली देनेवाले !

जब, अब, तब तुझ-सा नहिं कोई,<br>
तुझसे हैं सब तुझ-सा नहिं कोई।

जोत है तेरी जल और थलमें,<br>
बास है तेरी फूल और फलमें।

हर दिलमें है तेरा बसेरा,
तू पास और घर दूर है तेरा।

राह तेरी दुश्वार और सकड़ी,
नाम तेरा राहगीरकी लकड़ी।

तू है अकेलोंका रखवाला,
तू है अँधेरे घरका उजाला।

सोचमें दिल बहलानेवाला,
बिपदामें याद आनेवाला।

बे-आँखोंको आस तुही है,
जागते-सोते पास तुही है।

तू ही दिलोंको आग लगावे,
तू ही दिलोंकी लगी बुझावे।

हरदम तेरी आन नई है,
जब देखो तब शान नई है।

फूल कहीं कुम्हलाए हुए हैं,
और कहीं फल आए हुए हैं।

खेती एककी है लहराती,
एकका हरदम ख़ून सुखाती।

एक पड़े हैं धनको डुबोए,
एक हैं घोड़े बेचके सोए।

एकने जबसे होश सँभाला,
रंजसे उसको पड़ा न पाला।

एकने इस दुनियामें आकर,
चैन न देखा आँख उठाकर।

मेह कहीं दौलतका बरसता,
है कोई पानी तकको तरसता।

एकको मरनेतक नाहिं देते,
एक उकता गया जीते जीते।

हाल ग़रज़ दुनियाका यही है,
पहले ग़म और बाद .खुशी है।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**ओझल**—अदृश्य, परे, Out of Sight.
**तसल्ली देना**—ढाढस, धीरज To hearten.
**जोत**—ज्योति, रोशनी, प्रकाश, Light.
**बास**—बू, गंध, Scent.
**दुश्वार**—कठिन, मुश्किल, Difficult.
**सकड़ी**—संकीर्ण, सकरी, तंग, Narrow.
**राहगीर**—राह पकड़नेवाला, बटोही, मुसाफ़िर, Traveller.
**घोड़े बेचके सोना**—बेफ़िक्रीकी नींद सोना.
**मेह**—बादल, Cloud.
**उकता गया**—तंग आ गया Tired, Fed up.
**ग़म**—दुःख, शोक, Sorrow.

# तक़दीर और तदबीर

**स्व० पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी**

## तक़दीर

यह तदबीरसे बोली तक़दीर हँसकर—
नहीं कोई दुनियामें मेरे बराबर ।

मैं दम-भरमें जो चाहूँ करके दिखा दूँ,
भिखारीको राजोंका राजा बना दूँ ।

करम-रेख कहते हैं मुझको जहाँमें,
ज़रा सोच जीमें, कहाँ तू कहाँ मैं ?

मुझे अपने सिरपर जगह सबने दी है,
मेरे हाथमें सबकी नेकी-बदी है ।

मैं बनती हूँ तो काम बनते हैं सारे,
मैं बिगड़ूँ तो है कौन जो कुछ सँवारे ?

चमकते हैं जो आसमाँपर सितारे,
फिरूँ मैं तो दम-भरमें फिर जाँय सारे ।

मैं मारूँ तो है कौन जो आ बचाए ?
बचाऊँ तो ताक़त किसे जो सताए ?

जो बदलूँ बदल जाय सारा ज़माना,
करे बैरकी बात अपना बिगाना ।

न करती जो मैं राज दुनियामें आकर,
तो हो जाते छोटे-बड़े सब बराबर।

जहाँमें मेरी बात सबसे बड़ी है,
मेरी चाह हर एकको हर घड़ी है।

न है कोई ऐसा मुझे जो न माने,
मेरे भेदको आदमी कैसे जाने?

मेरे सामने तेरी है क्या हक़ीक़त?
बता गर तू रखती है कोई करामत।

## तदबीर

यह सुन बात तदबीर भी हँसके बोली,
झड़े फूल मुँहसे ज़बाँ जब कि खोली—

बहन, जो कहा तुमने सब वह सही है,
बड़ाई मगर तुमको मुझसे मिली है।

करम-रेख हो तुम यह मैं जानती हूँ,
तुम्हारे गुणोंको मैं पहचानती हूँ।

मगर मैं मददगार हूँ और सहारा
न मुझ बिन चले काम कोई तुम्हारा।

मेरी चाल होती है सबसे निराली,
नहीं है मेरी बात मतलबसे ख़ाली।

जहाँमें जो रौनक़ नज़र आ रही है,
मेरी ही करामात दिखला रही है।

ज़मीं मैंने जोती, फ़सल मैंने बोई,
न होता अगर नाज जीता न कोई ।

ये सब बाग़ मेवोंके मैंने लगाए,
मज़ेदार मीठे सभी फल चखाए ।

यह फूलोंकी क्यारी जो लहरा रही है,
मेरी रंगतें सबको दिखला रही है ।

जो कपड़े हैं याँ रेशमी और ज़रीके,
नमूने हैं सब मेरी कारीगरीके ।

हकीमोंको मैं ही बताती हूँ हिकमत,
भरी है कलोंमें मेरी ही करामत ।

मैं लोहेको देती हूँ सोनेकी क़ीमत,
मेरा हाथ लगनेसे खुलती हैं क़िस्मत ।

जहाँमें जो है आदमीने बनाया,
वह सब मेरी हिकमतने जलवा दिखाया

जो इक तख़्त ताऊस तुमने सुना है,
वह मेरी ही कारीगरीसे बना है ।

जो है ताज-बीबीका रौज़ा अनोखा,
बनाया है मैंने, नहीं इसमें धोखा ।

जो चाहूँ अभी आगको ख़ाक कर दूँ,
लगा हाथ नापाकको पाक कर दूँ ।

सिखाऊँ वह कारीगरी आदमीको,
अचंभा जिसे देख हो हर किसीको ।

ज़रा देख तू रेलको तारहीको,
मिले इनसे आराम कितना सभीको ।

बनाया 'एयरशिप' है वह चीज़ भरकर,
कि उड़ने लगे आदमी उसमें बेपर ।

तेरी बातको भी मगर मानती हूँ,
मैं अच्छी तरह तुझको पहचानती हूँ ।

मेरे काम सब हैं तेरे आसरेपर,
बिना मेरे हैं तेरे सब काम अबतर ।

जो मैं और तू साथ हों तो मज़ा हो,
मिलें जिसको दोनों वह सबसे बड़ा हो ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**करम-रेख**—कर्म-रेखा, The lines of Fortune.
**हक़ीक़त**—हस्ती, अस्तित्व, Existence.
**करामत**—करामात, Miracle.
**ज़मीं जोतना**—हल चलाना, To till the land, To Plough.
**नाज**—अनाज, Corn.
**ज़रीके**—सोनेके, Of Gold.
**जलवा**—शोभा, तड़क-भड़क, Light
**तख़्त-ताऊस**—मोरकी शक्लका सिंहासन, Peacock-Throne.
**रौज़ा**—क़ब्र, मकबरा, समाधि, Tomb.
**पाक**—पवित्र, साफ़, Pure.
**अबतर**—बुरे, ख़राब, बिगड़े हुए, Spoiled.

# बीता हुआ समय

### श्री मैथिलीशरण गुप्त

बड़े ज़बरदस्त और मशहूर कवि हैं। हिन्दीमें आज इनका बड़ा नाम है। अपनी कविता जब पढ़कर सुनाते हैं, तो रंग बाँध देते हैं। चिरगाँव ज़िला झाँसीमें रहते हैं और अपनी किताबें आप छापते हैं। जन्म वि० सं० वि० १.९४२ का है।

जब कुछ होश सँभाला मैंने अपनेको वनमें पाया,
हरी भूमिपर कहीं धूप थी और कहीं गहरी छाया।
एक भैंस दो गायें लेकर दिनभर उन्हें चराता था,
घर आकर ब्यालूमें माँसे दूध पाव-भर पाता था।

देख किसीका ठाठ न हमको ईर्ष्या कभी सताती थी,
और न अपनी दीन दशापर लज्जा ही कुछ आती थी।
मानो उन्हें वही थोड़ा है और हमें है बहुत यही,
जो कुछ जो लिखवा लाया है पाएगा वह सदा वही।

जो हो मैं निश्चिन्त भावसे था मनमें सुख ही पाता,
किसी तरह खेती-पातीसे था संसार चला जाता।
खुली हवा मेरे अंगोंका वनमें स्वेद सुखाती थी,
घनी घनी छाया पेड़ोंकी गोदीमें बिठलाती थी।

मुझ-से ही मेरे साथी थे सब मिलकर खेला करते,
हरी घासपर कभी लेटते कभी दंड पेला करते।

मन निर्मल था, तनपर जो कुछ आ पड़ता झेला करते,
गुंजारित करते जंगलको दुःख दूर ठेला करते ।

ऊपर नील वितान तना था, नीचे था मैदान हरा,
जंगलमेंसे विमल वायुका आना था उल्लास-भरा ।
कभी दौड़ने लग जाते हम, रह जाते फिर मुग्ध खड़े,
उड़नेकी इच्छा होती थी, उड़ते देख विहंग बड़े ।

बन्दरसम पेड़ोंपर चढ़ते, डालें कभी हिलाते थे,
पके पके फल तोड़ तोड़कर खाते और खिलाते थे ।
टिटकारी दे दे पशुओंको चलते समय बुलाते थे,
कान उठाकर घर चलनेको वे भी दौड़े आते थे ।

मोर नाचते थे उमंगसे मेघ मृदंग बजाते थे,
काली कोयलके साथी बन चंचल चातक गाते थे ।
रस बरसाती हुई घटा भी नीचे उतरी आती थी,
प्रकृति-नटी निज पट पल पलमें प्रकट पलटती जाती थी ।

हाय पुरानी याद, अभी तक किस आशासे बची रही,
क्यों आगे आ गई अचानक जब कि शून्य हो चुकी मही ?
लौटा दो लौटा दो, कोई मेरा बीता समय वही,
मैं न मरूँ पाऊँ यदि उसको है जीवनका यत्न यही ॥

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**ब्यालू**—रातका भोजन, Supper, Last meal of the day.
**छाँछ**—मट्ठा, तक्र, लस्सी, Butter-milk
**स्वेद**—पसीना, Sweat.
**वितान**—चँदोया, ख़ेमा, Tent.
**यत्न**—कोशिश.

# पिंजरेका पंछी

## डा० सर मुहम्मद इक़बाल एम० ए०

१८८० ई—१९३७

वर्तमानयुगके हिन्दुस्तानका सबसे बड़ा फिलासफ़र कवि जिसकी किताबें हिन्दुस्तानसे बाहरके विश्वविद्यालयोंमें भी पढ़ाई जाती हैं।

आप पंजाबके मशहूर शहर स्यालकोटमें पैदा हुए, लाहौरके गवर्नमेंट कालिजसे एम०ए० पास किया, और फिर बैरिस्टरी करनेके लिए विलायत चले गए। कविताका शौक़ पहले ही था, वहाँ जाकर इस शौक़को पर लग गए। वापस लौटे, तो कविताके आकाशमें इतना ऊँचा उड़ रहे थे कि देखकर हैरानी होती थी। 'बाँगेदरा,' 'बाल जिबराईल,' 'मुसाफ़िर,' आपकी ख़ास किताबें हैं। आप फ़ारसीमें भी कहते थे, और उर्दूसे कहीं बढ़कर कहते थे।

आता है याद मुझको गुज़रा हुआ ज़माना,
वह झाड़ियाँ चमनकी, वह मेरा आशियाना।
वह साथ सबके उड़ना, वह सैर आसमाँकी,
वह बाग़की बहारें, वह सबका मिलके गाना।

पत्तोंका टहनियोंपर वह झूमना ख़ुशीमें,
ठंडी हवाके पीछे वह तालियाँ बजाना।
आज़ादियाँ कहाँ वह अब अपने घोंसलेकी?
अपनी ख़ुशीसे जाना, अपनी ख़ुशीसे आना।

लगती है चोट दिलपर, आता है याद जिस दम,
शबनमका सुबह आकर फूलोंका मुँह धुलाना।

वह प्यारी प्यारी सूरत, वह कामनी-सी मूरत,
आबाद जिसके दमसे था मेरा आशियाना।

तड़पा रही है मुझको रह रहके याद उसकी
तक़दीरमें लिखा था पिंजरेका आब-दाना।
इस क़ैदका इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊँ ?
डर है यही, क़फ़समें मैं ग़मसे मर न जाऊँ।

क्या बदनसीब हूँ मैं, घरको तरस रहा हूँ,
साथी तो हैं वतनमें, मैं क़ैदमें पड़ा हूँ।
आई बहार, कलियाँ फूलोंकी हँस रही हैं,
मैं इस अँधेरे घरमें क़िस्मतको रो रहा हूँ।

बाग़ोंमें कुन्बेवाले ख़ुशियाँ मना रहे हैं,
मैं दिल-जला अकेला, दुखमें कराहता हूँ।
आती नहीं सदाएँ उनकी मेरे क़फ़समें
होती मेरी रिहाई ऐ काश मेरे बसमें।

अरमान है यह जीमें उड़कर चमनको जाऊँ,
टहनीपै गुलकी बैठूँ, आज़ाद होके गाऊँ।
बेरीकी शाख़पर हो वैसा ही फिर बसेरा,
उस उजड़े घोंसलेको फिर जाके मैं बसाऊँ।

चुगता फिरूँ चमनमें दाने ज़रा ज़रासे,
साथी जो हैं पुराने, उनसे मिलूँ-मिलाऊँ।
फिर दिन फिरें हमारे, फिर सैर हो वतनकी,
उड़ते फिरें ख़ुशीसे, खाएँ हवा चमनकी।

जबसे चमन छुटा है, यह हाल हो गया है,
दिल ग़मको खा रहा है, ग़म दिलको खा रहा है।
गाना इसे समझकर ख़ुश हों न सुननेवाले,
दुक्खे हुए दिलोंकी फ़रियाद यह सदा है।

आज़ाद जिसने रहकर दिन अपने हों गुज़ारे,
उसको भला ख़बर क्या, यह क़ैद क्या बला है?
आज़ाद मुझको कर दे, ओ क़ैद करनेवाले!
मैं बेज़बाँ हूँ क़ैदी, तू छोड़कर दुआ ले।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**आशियाना**—पंछियोंका घर, घोंसला, Nest.
**शबनम**—ओस, Dew.
**कामिनी**—सुन्दर, ख़ूबसूरत, Charming.
**आब-दाना**—पानी-दाना,
**क़फ़स**—पिंजरा, Cage.
**सदाएँ**—आवाज़ें, Voices.
**रिहाई**—छुटकारा, मुक्ति, आज़ादी, Freedom.
**अरमान**—अभिलाषा, Desire
**गुल**—फ़ूल, पुष्प, कुसुम, Flower.
**चमन**—बाग़, उद्यान, Garden.

# जुगनू

पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

हैं कभी दिपते चमकते हैं कभी,
झोंकते किस आँखमें ये धूल हैं;
रातमें जुगनू रहे हैं जगमगा;
या निराली बेलियोंके फूल हैं।
स्याह चादरपर अँधेरी रातकी,
यह सुनहला काम किसने है किया।
जगमगाते जुगनुओंकी जोत हैं,
या जिनोंका जुगजुगाता है दिया।
हम चमकते जुगनुओंको क्या कहें,
डालियोंके ये फबीले माल हैं।
हैं अँधेरेके लिये हीरे बड़े,
रातके गोदी-भरे ये लाल हैं।
मोल होते भी बड़े अनमोल हैं,
जगमगाते रातमें दोनों रहे।
लाल दमड़ीका दिया है, क्यों न तो;
जुगनुओंको लाल गुदड़ीका कहें।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**जुगनू**—खद्योत, एक चमकनेवाला कीड़ा, Fire-fly.
**जिन**—भूत-प्रेत, Spirit.
**फबीले**—फबनेवाले, शोभा देनेवाले, Beautiful.

..............................

# हमारा वतन

**स्व० पं० व्रजनारायण चकबस्त** बी० ए०

सन् १८८२—१९२६

पूर्वजोंका वतन काश्मीर था, मगर वह लखनऊ चले आए थे। पंडितजी वहीं पैदा हुए, और वहीं बी० ए० और एलएल० बी०की डिग्री ली। कविताका शौक़ ९ वर्षकी उमरसे था, बड़े हुए तो और भी चमक उठा। इनकी कवितामें आग और दर्द और सहानुभूति बहुत है। इस लिहाज़से हमारे बहुत कम उस्ताद-कवि ऐसे हैं जो इनका मुक़ाबिला कर सकते हों। अफ़सोस इस बातका है कि ऐसे उच्च कोटिके उस्ताद-कविको भी अपने गुज़ारेके लिए वकालत करनी पड़ती थी। 'सुबह-वतन' इनकी कविताओंका संग्रह है।

यह हिन्दोस्ताँ है हमारा वतन,
मुहब्बतकी आँखोंका तारा वतन,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन।

वह इसके दरख़्तोंकी तैयारियाँ,
वह फल, फूल पौधे वह फुलवारियाँ,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन।

हवामें दरख़्तोंका वह झूमना,
वह पत्तोंका फूलोंका मुँह चूमना,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन।

वह सावनमें काली घटाकी बहार,
वह बरसातमें हल्की हल्की फुहार,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन ।

वह बाग़ोंमें कोयल वह जंगलमें मोर,
वह गंगाकी लहरें वह जमनाका शोर,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन ।

इसीसे है इस ज़िन्दगीकी बहार,
वतनकी मुहब्बत हो या माँका प्यार,
हमारा वतन, दिलसे प्यारा वतन ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**वतन**—जन्म-भूमि, Mother-land.
**आँखोंका तारा**—बहुत प्यारा, Very dear.
**दरख़्त**—वृक्ष, झाड़, Tree.
**बहार**—वसंत, Spring season.
**ज़िन्दगी**—जीवन, Life.

# घड़ा

## श्री सियारामशरण गुप्त

जन्मकाल वि० सं० १९५२। आप सुप्रसिद्ध कविवर मैथिलीशरण गुप्तके छोटे भाई हैं। जैसे वह मशहूर हैं वैसे ही यह भी मशहूर हो रहे हैं। और भाषा और भाव दोनोंके बादशाह हैं। आपके अनेक काव्य-ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

कुटिल कंकड़ोंकी कर्कश रज
मल मलकर सारे तनमें,
किस निर्मम निर्दयने मुझको
बाँधा है इस बन्धनमें ?

फाँसी-सी है पड़ी गलेमें
नीचे गिरता जाता हूँ,
बार बार इस अंध कूपमें
इधर उधर टकराता हूँ।

ऊपर-नीचे अन्धकार है,
बन्धन है अवलम्ब यहाँ,
यह भी नहीं समझमें आता,
गिरकर मैं जा रहा कहाँ ?

काँप रहा हूँ डरके मारे
हुआ जा रहा हूँ म्रियमाण।
ऐसे दुखमय जीवनसे हा,
किस प्रकार पाऊँ मैं त्राण ?

सभी तरह हूँ विवश करूँ क्या
नहीं दीखता कोइ उपाय;
यह क्या ?—यह तो अगम नीर है
डूबा ! अब डूबा मैं हाय ! !

भगवन् हाय ! बचा लो अब तो,
तुम्हें पुकारूँ मैं जब तक,
हुआ तुरन्त निमग्न नीरमें
आर्तनाद करके तब तक ।

अरे, कहाँ वह गई रिक्तता
डरका भी अब पता नहीं;
गौरववान हुआ हूँ सहसा,
बना रहूँ तो क्यों न यहीं ?

पर मैं ऊपर चढ़ा जा रहा
उज्ज्वलतर जीवन लेकर;
तुमसे उऋण नहीं हो सकता
यह नवजीवन भी देकर ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**कुटिल**—टेढ़े, चुभनेवाले, Pointed.
**कर्कश**—खुरदरे, कड़े, Rough.
**निर्मम**—ममताहीन, Heartless.
**अवलम्ब**—सहारा, Support.
**त्राण**—रक्षा, हिफ़ाज़त, Protection.
**अगम नीर**—गहरा पानी, Deep Water.
**रिक्तता**—खालीपन, Hollowness.
**गौरववान**—गौरववाला, Proud.
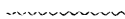
# कुछ काम कर

**मियाँ बशीर अहमद बी० ए०**

मियाँ बशीर अहमद बी० ए० लाहौरके रहनेवाले हैं, और पंजाबके सबसे अच्छे उर्दू मासिक पत्र 'हुमायूँ'के सम्पादक हैं। आप गद्य-पद्य दोनों लिखते हैं और जीवन और कला दोनोंमें सत्यं शिवं सुन्दरम्के सिद्धांतको माननेवाले हैं। आपकी आयु चालीस सालके लगभग है।

उलफ़तसे जगको राम कर, ख़ुशियोंको सबमें आम कर,
दुनियामें कुछ दिन काम कर, फिर क़ब्रमें आराम कर,
कुछ काम कर, कुछ काम कर।

कर काम सुबह-शाम कुछ, है कामहीमें नाम कुछ,
लेकर यहाँ आराम कुछ, करता ही रह तू काम कुछ,
कुछ काम कर, कुछ काम कर।

कुछ कर जो करना है तुझे, जगसे गुज़रना है तुझे,
इस घाट उतरना है तुझे, दो दिनमें मरना है तुझे,
कुछ काम कर, कुछ काम कर।

गुज़रे जो साइत उम्रकी, इसपर न नादिम हो कभी,
नेकी है यह सबसे बड़ी, नेकीमें ख़ुश रह हर घड़ी,
कुछ काम कर, कुछ काम कर।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**उलफ़त**—प्यार, प्रेम, मुहब्बत Love.
**राम कर**—क़ाबूकर, बसमें कर, अपना बना।
**नादिम**—शरमिंदा, लज्जित, Ashamed.

---

# फूलोंकी बहार

लेखक—**श्री वंशीधर विद्यालंकार**

पंजाबके रहनवाले गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ीके स्नातक हैं। उम्र लगभग ३५ वर्ष। उस्मानिया यूनीवर्सिटी हैदराबादमें अध्यापक हैं। हिन्दीमें लिखते हैं, मगर उर्दू लफ्ज़ोंको अछूत नहीं समझते। जो शब्द प्यारा मालूम होता है उसे उठा लेते हैं, और अपनी कविताकी बगिया सजा लेते हैं। आपकी कवितामें रंग, रस, रूप और प्रवाह है। 'मेरे फूल' आपकी कविताओंका एक संग्रह छप चुका है, दूसरेकी हम राह देख रहे हैं।

मैं हूँ बटोही दूरसे आया, किसी जगह आराम न पाया।
मुहँ जो इधर आ मैंने उठाया, प्रभुने कैसा दृश्य दिखाया।
तेरे बग़ीचेमें बैठूँगा और बहारोंको देखूँगा।
　　दरवाज़ेको खोल दे माली!
　　मुझे बुलाती डाली डाली।

फूल वसंती फूल रहे हैं, धीमे धीमे झूल रहे हैं।
बाग़की आँखें बाग़के तारे, हर्षके फूटे हुए फ़वारे।
रंगत इनकी मैं देखूँगा, तेरे बग़ीचेमें बैठूँगा।
　　दरवाज़ेको खोल दे माली!
　　मुझे बुलाती डाली डाली।

क्या हरियाली छाई हुई है, एकसे रंगत एक नई है।
क्या सुषमासे सजी मही है, स्वर्ग यही है,—स्वर्ग यही है।
मस्त हुआ यह मैं गाऊँगा, तेरे बग़ीचेमें बैठूँगा।
　　दरवाज़ेको खोल दे माली!
　　मुझे बुलाती डाली डाली।

पाससे इनके लोग हैं जाते, इधर नहीं पर आँख उठाते।
काममें अपने भूले हुए हैं, इन्हें पता क्या फूल खिले हैं।
इनसे निठल्ला मैं खेलूँगा, तेरे बग़ीचेमें बैठूँगा।
दरवाज़ेको खोल दे माली!
मुझे बुलाती डाली डाली।

देख इन्हें दिल भर आता है, जाने क्या क्या कह जाता है!
किस प्यारेकी याद दिला कर, मुझे बुलाते हैं अपने घर।
इनमें दुख अपना भूलूँगा, तेरे बग़ीचेमें बैठूँगा।
दरवाज़ेको खोल दे माली!
मुझे बुलाती डाली डाली।

हँस हँस कर ये मर जायेंगे, खिल खिल कर ये झड़ जायेंगे।
कैसा जीना कैसा मरना, जब तक रहना हँसते रहना।
हँसना इनसे मैं सीखूँगा, तेरे बग़ीचेमें बैठूँगा।
दरवाज़ेको खोल दे माली!
मुझे बुलाती डाली डाली।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**बसन्ती**—पीले रंगके, Yellow.
**फ़वारे**—फुहारे, Fountain.
**रंगत**—रंग, वर्ण, Colour.
**सुषमा**—सुन्दरता, ख़ूबसूरती, Beauty, Charm.
**मही**—ज़मीन, भूमि, Earth.
**निठल्ला**—बेकार, जिसके पास कोई काम न हो, One who has no work to do.

# नन्हीं पुजारिन

**जनाब मजाज़ बी० ए०**

मजाज़ साहब उम्रके नौजवान है, शाइरीके नौजवान नहीं हैं। आपकी कवितामें राग भी है, आग भी है; आह भी है, वाह भी है। दुबली पतली देह, लम्बे लम्बे बाल, हर समय नाचती हुई आँखें। दूरहीसे मालूम हो जाता है, कि यह कोई कवि हैं।

इक नन्हीं मुन्नीसी पुजारिन,
पतली बाहें पतली गरदन।
भोर भये मन्दिर आई है,
आई नहीं है, माँ लाई है।

सबसे पहले जाग उठी है,
नींद अभी आँखोंमें भरी है।
ठोड़ी तक लट आई हुई है,
यों ही सी लहराई हुई है।

आँखोंमें तारोंकी चमक है,
मुखड़ेपर चाँदीकी झलक है।
कैसी सुन्दर है क्या कहिए?
छोटी-सी इक सीता कहिए।

धूप चढ़े, तारा चमका है,
पत्थरपर इक फूल खिला है।

चाँदका टुकड़ा फूलकी डाली,
कमसिन, सीधी, भोली-भाली।

हाथमें पीतलकी थाली है,
कानमें चाँदीकी बाली है।
दिलमें लेकिन ध्यान नहीं है,
पूजाका कुछ ज्ञान नहीं है।

कैसी भोली और सीधी है,
मन्दिरकी छत देख रही है।
हँसना-रोना इसका मज़हब,
इसको पूजासे क्या मतलब?
ख़ुद तो आई है मन्दिरमें,
मन है उसका गुड़िया-घरमें।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**लट**—बालोंका गुच्छा, A Bunch of Hair.
**कमसिन**—छोटी, कम उम्र, Small.
**मज़हब**—धर्म, Religion.
**गुड़िया-घर**—गुड़ियोंका घर, Doll-House.

# खोज

## पं० रामनरेश त्रिपाठी

आप कोइरीपुर ज़िला जौनपुरके रहनेवाले हैं। जन्म सं० १९४६ का है। हिन्दीके नामी कवि और लेखक हैं। भावके साथ साथ आप भाषाके सौन्दर्यका भी पूरा पूरा ख़याल रखते हैं। शब्द शब्दमें संगीत गूँजता है। 'पथिक', 'मिलन', 'स्वप्न' आदि अनेक कविता-पुस्तकें अपने लिखी हैं। आप एक अच्छे प्रकाशक भी हैं।

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और बनमें,
तू खोजता मुझे था तब दीनके वतनमें।
तू आह बन किसीकी मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीतमें, भजनमें।
मेरे लिए खड़ा था दुखियोंके द्वारपर तू,
मैं राह देखता था तेरी किसी चमनमें।
बनकर किसीके आँसू मेरे लिए बहा तू,
मैं देखता तुझे था माशूकके बदनमें।
दुखमें रुला-रुलाकर तूने मुझे चिताया,
मैं मस्त हो रहा था तब, हाय अंजुमनमें।
बाजे बजा-बजाकर मैं था तुझे रिझाता,
तब तू लगा हुआ था पतितोंके संगठनमें।
तूने दिये अनेकों अवसर न मिल सका मैं,
तू कर्ममें मगन था, मैं व्यस्त था कथनमें।
हरिचन्द और ध्रुवने कुछ और ही बताया,
मैं तो समझ रहा था तेरा प्रताप धनमें।

मैं खोजता तुझे था रावणकी लालसामें,
पर था दधीचके तू परमार्थ-रूप तनमें ।
तेरा पता सिकन्दरको मैं समझ रहा था,
पर तू बसा हुआ था फ़रहाद-कोहकनमें ।
कैसे तुझे मिलूँगा जब भेद इस क़दर है ?
हैरान होके भगवन् आया हूँ मैं सरनमें ।
तू रूप है किरनमें, सौन्दर्य है सुमनमें,
तू प्राण है पवनमें, विस्तार है गगनमें ।
तू ज्ञान हिन्दुओंमें, ईमान मुसलिमोंमें,
विश्वास क्रिश्चियनमें, तू सत्य है सुजनमें ।
हे दीन-बन्धु ऐसी प्रतिभा प्रदान कर तू,
देखूँ तुझे दृगोंमें, मनमें तथा वचनमें ।
कठिनाइयों-दुखोंका इतिहास ही सुधन है,
मुझको समर्थ कर दे बस कष्टके सहनमें ।
दुखमें न हार मानूँ, सुखमें तुझे न भूलूँ,
ऐसा प्रभाव भर दे मेरे अधीर मनमें ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**आह**—दुःखसूचक शब्द, Ah! **चमन**—बग़ीचा, Garden.
**माशूक**—प्रेमपात्र, प्रेमिका, Beloved.
**अंजुमन**—सभा, मजलिस, Meeting.
**फ़रहाद**—एक प्रेमीका नाम.
**कोहकन**—पहाड़ काटनेवाला, One who can cut out mountains.

# भीलनीके बेर

**श्री सुदर्शन**

प्रभू राम बनवासको जब गए,
तो जंगलमें इक भीलनीसे मिले ।
यह औरत भली थी बड़ी नेक थी,
दया-धर्ममें लाखमें एक थी ।

किसीसे न कुछ भी सरोकार था,
बसा मनमें हर वक्त करतार था ।
पर अन्याय दुनियाका देखो ज़रा,
उसे कोई नर-नार छूता न था ।

कि यह भीलनी है जनमसे अछूत,
बिदकते थे जैसे वह हो कोई भूत ।
मिली सूचना उसको जब रामकी,
तो उनके लिए बेर चुनने लगी ।

कि आएँगे तो मैं खिलाऊँगी क्या ?
यूँही उनपै बलिहार जाऊँगी क्या ?
ख़बर जिस घड़ी यह सुनी रामने,
उधर सबसे पहले रवाना हुए ।

उसे देखकर मुस्कराने लगे,
बड़े चावसे बेर वे खाने लगे ।
अमलसे यह दुनियाको दिखला दिया,
कि जो जीव है साफ़ सुथरा खरा ।

अछूत उसको कहना बड़ा पाप है
जो कहता है वह तो अछूत आप है ।
'सुदर्शन' ख़याल इसका रखियो सदा,
बुरा है वह, हो काम जिसका बुरा ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**प्रभु**—भगवान, Lord.
**सरोकार**—वास्ता, तअल्लुक, Business.
**करतार**—परमात्मा, God.
**अमलसे**—कर्मसे, Practically.
**अछूत**—जिसको छूना बुरा समझा जाए। Untouchable.

## नया बचपन

### श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

हिन्दीकी वर्तमान स्त्री-कवियोंमें आप बहुत प्रसिद्ध हैं। बहुत ही सुन्दर लिखती हैं और नारी हृदयका तो ऐसा सुंदर और हूबहू बयान करती हैं कि पुरुष-हृदय देखता रह जाए। आपको सेकसरिया पुरस्कार मिल चुका है। इस समय सी० पी० की कौन्सिलकी मेम्बर भी हैं। जन्म सं० १९६१।

बार बार आती है मुझको, मधुर याद बचपन तेरी,
गया, ले गया तू जीवनकी सबसे मस्त ख़ुशी मेरी।
चिन्ता-रहित खेलना-खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द,
कैसे भूला जा सकता है, बचपनका अतुलित आनन्द?

ऊँच-नीचका ज्ञान नहीं था, छुआछूत किसने जानी?
बनी हुई थी अहा! झोंपड़ी और चीथड़ोंमें रानी।
किये दूधके कुरले मैंने चूस अँगूठा सुधा पिया,
किलकारी कल्लोल मचाकर, सूना घर आबाद किया।

रोना और मचल जाना भी क्या आनन्द दिखाते थे,
बड़े बड़े मोती-से आँसू जयमाला पहनाते थे।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया,
झाड़-पोंछ कर चूम चूम गीले गालोंको सुखा दिया।

दादीने चन्दा दिखलाया, नेत्र-नीर द्रुत दमक उठे,
धुली हुई मुसकान देख कर सबके चेहरे चमक उठे।
वह सुखका साम्राज्य छोड़कर, मैं मतवाली बड़ी हुई,
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई-सी दौड़ द्वारपर खड़ी हुई।

लाज-भरी आँखें थीं मेरी मनमें उमँग रंगीली थी,
तान रसीली थी कानोंमें चंचल छैल-छबीली थी।
दिलमें एक चुभन-सी थी यह दुनिया सब अलबेली थी,
मनमें एक पहेली थी मैं सबके बीच अकेली थी।

माना मैंने युवा-कालका जीवन ख़ूब निराला है,
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञानका उदय मोहनेवाला है।
किन्तु यहाँ झंझट है भारी युद्ध-क्षेत्र संसार बना,
चिन्ताके चक्करमें पड़कर जीवन भी है भार बना।

आजा बचपन! एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शान्ति,
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति।
वह भोली-सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप,
क्या फिर आकर मिटा सकेगा तू मेरे मनका सन्ताप?

मैं बचपनको बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी,
नन्दनवन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी।
'माँ ओ' कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी,
कुछ मुँहमें कुछ लिये हाथमें मुझे खिलाने लाई थी।

पुलक रहे थे अंग, दृगोंमें कौतूहल था छलक रहा,
मुँहपर थी आह्लाद-लालिमा, विजय-गर्व था झलक रहा।
मैंने पूछा 'यह क्या लाई?' बोल उठी वह 'माँ, काओ।'
हुआ प्रफुल्लित हृदय ख़ुशीसे मैंने कहा—'तुम्हीं खाओ।'

पाया मैंने बचपन फिरसे बचपन बेटी बन आया,
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर मुझमें नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती खाती हूँ, तुतलाती हूँ,
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।

जिसे खोजती थी बरसोंसे अब जाकर उसको पाया,
भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिरसे आया।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**चीथड़ा**—फटे पुराने कपड़े, Rags.
**सुधा**—अमृत, आबेहयात, Nectar, Elixir.
**द्रुत**—जल्दी, Soon.
**प्राकृत**—स्वाभाविक, Natural.
**विश्रान्ति**—आराम, चैन, Rest.
**मंजुल**—मनोहर, सुन्दर, Fascinating, Enchanting.

# जब नन्हाँ-सा मैं बच्चा था

**डा० मोहनसिंह 'दीवाना' एम० ए०**

रावलपिंडी ( पंजाब ) के रहनेवाले हैं और लाहौरमें प्रोफ़ेसर हैं। गद्य-पद्य दोनों लिखते हैं और जो कुछ लिखते हैं उसमें जान डाल देते हैं। आपके लेखोंमें रंगीनी और गहराई बहुत रहती है। जैसे बाँके आप हैं, वैसा ही बाँका लिखते हैं, और सामने तसवीर खैंच देते हैं। उर्दू, हिन्दी, फ़ारसी, अँगरेजी सभीमें लिखते हैं। आपकी आयु ४१-४२ सालकी है।

तब सूरज मुझे जगाता था,
तब क़िस्से चाँद सुनाता था,
तब पानी मेघ पिलाता था,
तब झूले मरुत झुलाता था।
जब नन्हाँ-सा मैं बच्चा था।

फूलोंसे मेरी बातें थीं,
सुख-स्वप्न-भरी तब रातें थीं,
मनमोहक तब बरसातें थीं,
अद्भुत छवि अनुपम घातें थीं।
जब नन्हाँ-सा मैं बच्चा था।

शुभचिंतक मेरे तारे थे,
वन-देव मुझे तब प्यारे थे,
क्या झूले झूले सावनमें
क्या निडर फिरा वन-उपवनमें।
जब नन्हाँ-सा मैं बच्चा था।

**कठिन शब्दोंके अर्थ**

**मरुत**—हवा, वायु, Air, Breeze.
**घातें**—अवसर, मौक़े, Chances.

# प्रेमका राज्य

## पं० गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

कानपुरके रहनेवाले हैं। 'सुकवि' नामक पत्रके सम्पादक हैं। यह सिर्फ़ कवि ही नहीं हैं, कवि-गर भी हैं, अर्थात् कविता भी बनाते हैं और कवि भी बनाते हैं। कई कवि-सम्मेलनोंके सभापति हो चुके हैं। जन्म संवत् १९३५ के लगभग।

ले चल मुझको दूर सनेही।
जहाँ प्रेमका राज्य, जहाँपर रहता एक सुरूर सनेही।
जहाँ द्वेषके आघातोंने,
पत्थर-सी कठोर बातोंने,
कभी न कोमल हृदय किये हों,
बेरहमीसे चूर सनेही! ले०
रहे न दुई एक हो जायें,
अपनेको पाकर खो जायें,
मिटे चाहका गर्व हुस्नका—
भी हो दूर ग़ुरूर सनेही! ले०
सुखमय यह संसार नहीं है,
इसमें दुखका पार नहीं है,
यहाँ ज़ख्मपर ज़ख्म फूटते
भर भरके अंगूर सनेही!
मेरा तो तू है चिर संगी,

मैं हूँ अंग और तू अंगी,
तेरे दर्शनसे बरसेगा,
वहाँ नूर ही नूर सनेही ! ले०

### कठिन शब्दोंके अर्थ

**बेरहमी**—निर्दयता, Cruelty.
**दुई**—द्वित्व, दो-पना, Duality, Separation.
**हुस्न**—खूबसूरती, सुन्दरता Beauty.
**गुरूर**—घमंड, अभिमान, Pride.
**नूर**—प्रकाश, ज्योति Divine light.
**अंगूर**—घावके भरनेपर जो लाल दानेसे निकलते हैं उन्हें अंगूर आना कहते हैं । Granulation.

## उठ बाँध कमर

**जनाब 'दीवाना'**

जो अपनी खिदमत करता है, अहसान वह किसपर धरता है ?
क्यों गैरोंका दम भरता है ? क्यों खौफ़के मारे मरता है ?
इस हाटका यह ही परता है, कुछ गाँठसे दे तब तरता है,

उठ बाँध कमर क्यों डरता है !
फिर देख ख़ुदा क्या करता है !

जो उमरें मुफ्त गँवाएगा, वह आखिरको पछताएगा,
कुछ बैठे हाथ न आएगा, जो ढूँढेगा वह पाएगा,
तू कब तक देर लगाएगा ? यह वक्त भी आखिर जाएगा,

उठ बाँध कमर क्यों डरता है !
फिर देख .खुदा क्या करता है !

जो मौक़ा पाकर खोएगा, वह अश्कोंसे मुँह धोएगा,
जो सोएगा वह रोएगा, और काटेगा जो बोएगा,
तू ग़ाफ़िल कब तक सोएगा ? जो होना होगा होएगा,

उठ बाँध कमर क्यों डरता है !
फिर देख .खुदा क्या करता है !

यह दुनिया आख़िर फ़ानी है, और जान भी इक दिन जानी है,
फिर तुझको क्यों हैरानी है ? कर डाल जो दिलमें ठानी है,
जब हिम्मतकी जौलानी है, तो पत्थर भी फिर पानी है,

उठ बाँध कमर क्यों डरता है !
फिर देख .खुदा क्या करता है !

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**ख़िदमत**—सेवा, Service.
**हाट**—बाज़ार, Market place.
**परता**—पड़ता, लागत, Cost Price.
**अश्क**—आँसू, Tear.
**फ़ानी**—फ़ना होनेवाली चीज़, Mortal.
**जौलानी**—बहाव, Flow.

---

# तारोंसे

**स्व० पं० बदरीनाथ भट्ट**

आप आगरेके रहनेवाले थे, बड़े हँसमुख और रंगीले। जन्म-काल वि० सं० १८४८ । लखनऊ-यूनीवर्सिटीमें हिन्दीके लेक्चरर थे। आपने कवितायें लिखी तो थोड़ी हैं पर जो लिखी है वे बड़ी ही सुन्दर और भावमय हैं। आप जल्दी ही मर गए, मगर आपकी चीज़ें जल्दी मरनेवाली नहीं।

चिढ़ाते हो क्यों हमको यार ?
धीरे धीरे टूट रहा है सभी तुम्हारा तार।

हँस हँसकर इनको निहारते,
आँखें मटकाते न हारते।
मिट जाओगे पलक मारते,
रहे मिनट दो-चार।

निजको सुखी समझते हो तुम।
सबसे तभी उलझते हो तुम,
अपनी बान न तजते हो तुम,
करो न आत्म-सुधार।

वृथा घृणा सबसे करते हो,
औरोंका क्यों सुख हरते हो,

ध्यान न कुछ मनमें धरते हो,
किसका है संसार ?

आसमानपर खड़े हुए हो,
सबसे ऊँचे चढ़े हुए हो,
सब बातोंमें बढ़े हुए हो,
हुए न तनिक उदार ।

जिस प्रभुने है तुम्हें बनाया,
उसने ही सब जग प्रगटाया,
हमको भी उसने जन्माया,
तुम कैसे सरदार ?

पीछेसे पछताओगे तुम,
रविकी ठोकर खाओगे तुम,
यमके घर उड़ जाओगे तुम,
ले कर्मोंका भार ।

चिढ़ाते हो क्यों हमको यार ?

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**चिढ़ाना**—मुँह बनाना, To make faces.
**उलझना**—दख़ल देना, To interfere.
**उदार**—खुले दिलवाला, Liberal-minded.

# तीन गीत

आरज़ू साहब उर्दूके उस्ताद कवि हैं, मुश्किल शब्दोंके प्रयोगसे सदा परे भागते हैं। उम्र सत्तर सालके लगभग है। सुदर्शन आजतक कहानियाँ और नाटक लिखते थे, अब गीत भी लिखने लगे हैं। हाफ़ीज़ जालन्धरी ४०-४२ सालके नौजवान हैं। गीत ऐसे प्यारे लिखते हैं कि कलम चूम लेनेको जी चाहता है।

## १

### आरज़ू लखनवी

जवानी सबको धोखा दे।
आप सँवारे, आप उजाड़े, हँसकर रुलवा दे। ज०
मद्‌माती रुत बनकर आए,
रंग निखारे, रूप बढ़ाए,
मस्त बनाके मति पलटाए,
सुखके भेसमें दुख पहुँचाए,
बना महल ढा दे। जवानी सबको धोखा दे।
रूपके अंगारे दहकाए,
अंगारोंको फूल बनाए,
फूलका जोबन मन ललचाए,
ललचाकर जब चाहमें आए,
छूते ही चरका दे। जवानी सबको धोखा दे।
सीधी चाबी उलटा ताला,
अँधियारेका रूप उजाला,
मदकी दारू मानका प्याला,

हाथसे छलकाए मतवाला,
पाँवसे ढलका दे। जवानी सबको धोखा दे।

२

**श्री सुदर्शन**

बाबा, मनकी आँखें खोल !
दुनिया क्या है खेल-तमाशा,
चार दिनोंकी झूठी आशा,
पलमें तोला, पलमें माशा,
ज्ञान-तराज़ू लेके हाथमें—
तोल सके तो तोल। बाबा०
झूठे हैं सब दुनियावाले,
तनके उजले मनके काले,
इनसे अपना आप बचा ले,
रीत कहाँकी प्रीत कहाँकी—
कैसा प्रेम-किलोल। बाबा०
नींदमें माल गँवा बैठेगा,
मनकी जोत बुझा बैठेगा,
अपना आप लुटा बैठेगा,
दो दिनकी दुनियामें प्यारे—
पल पल है अनमोल। बाबा०
मतलबकी सब दुनियादारी,
मतलबके सारे संसारी,
तेरा जगमें को हितकारी ?
तन-मनका सब ज़ोर लगाकर—
नाम हरीका बोल। बाबा०

३

## हफ़ीज़ जालंधरी

बसा ले अपने मनमें प्रीत ।
मन-मन्दिरमें प्रीत बसा ले,
ओ मूरख ओ भोले भाले,
दिलकी दुनिया कर ले रोशन,
अपने घरमें जोत जगा ले,
प्रीत है तेरी रीत पुरानी,
भूल गया ओ भारतवाले !

भूल गया ओ भारतवाले,
प्रीत है तेरी रीत ।
बसा ले अपने मनमें प्रीत ।

क्रोध-कपटका उतरा डेरा,
छाया चारों खूँट अँधेरा,
शेख़-बरहमन दोनों डाकू,
एकसे बढ़कर एक लुटेरा ।
ज़ाहिरदारोंकी संगतमें,
कोई नहीं है संगी तेरा,

कोई नहीं है संगी तेरा,
मन है तेरा मीत,
बसा ले अपने मनमें प्रीत ।

भारत-माता है दुखियारी,
दुखियारे हैं सब नरनारी,
तुही उठा ले सुन्दर मुरली,

तू ही बनजा श्याम-मुरारी ।
तू जागे तो दुनिया जागे,
जाग उठें सब प्रेम-पुजारी,
जाग उठें सब प्रेम-पुजारी,
गाएँ तेरे गीत,
बसा ले अपने मनमें प्रीत ।
नफ़रत इक आज़ार है प्यारे,
इसकी दारू प्यार है प्यारे,
आ जा असली रूपमें आ जा,
तू ही प्रेम-अवतार है प्यारे ।
यह हारा, तो सब कुछ हारा,
मनके हारे हार है प्यारे,
मनके हारे हार है प्यारे,
मनके जीते जीत,
बसा ले अपने मनमें प्रीत ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**रुत**—ऋतु, मौसम, Season.
**निखारे**—स्वच्छ करे To cleanse, To brighten.
**ढा दे**—गिरा दे, To Demolish.
**चरका देना**—धोका देना, मूर्ख बनाना, To fool.
**तराज़ू**—तुला, Balance.
**अनमोल**—जिसका कोई मोल न हो, Price-less, Beyond price.
**को**—कौन, Who.
**खूँट**—कोने, Corner.
**दारू**—इलाज, दवा, Remedy.

# देहात

**श्री गोपालसिंह 'नेपाली'**

यहीं है जगका प्यारा देश, देशका यही प्रान्त वीरान,
यहीं है दलितोंका संसार, यहींपर रहते हैं भगवान।

फूसका यहीं बसा घर बार, प्रकृतिका यहीं सदन अभिराम,
यहीं है सब तीर्थोंका तीर्थ, यहींपर नर-देवोंका धाम।

'बुद्ध' के यहीं विचरते प्राण, यहीं करती मनुष्यता वास,
यहीं वह दिव्य प्रेमका लोक, रहा है जहाँ सत्य विश्वास।

नाचता है चरखेका चक्र, यहीं काते जाते हैं तार,
बचाते जो जननीकी लाज, बँधा जाता जिनसे संसार।

टपकता है तारोंसे धैर्य, छतोंपर छलनी-सी हर रात,
मरेको देने जीवन-दान, यहींपर आती है बरसात।

फाड़ कर छप्पर जो भगवान, यहींपर देते हैं वरदान,
यहीं रहता है ख़ुश अरमान, यहीं बसता सच्चा अभिमान।

यहीं बहती है अविरल धार, शान्तिकी घर घरमें दिन-रात,
चाँदनी मृदु आशाकी यहीं, सजाती है रजनीका गात।

सुनाने आती घर घर उषा, अमर-जीवनका शुभ सन्देश,
बोल कर यहीं पवनका बोल, कुशल पूछा करते सर्वेश।

प्रकृतिकी गोदीमें नित यहीं, भरा करता बचपन किलकार,
किया करता जिनपर संसार, निछावर अपनेको सौ बार।

जवानी रहती है मद-मस्त, छेड़ती है बिरहाकी तान
दिखाता यौवन अपना रंग, बुढ़ापा करता है अभिमान ।
घूमते फिरते हैं निशि-प्रात, यहींपर 'तुलसी' और 'कबीर,'
यहीं सुन 'सूरदास' की तान, लुढ़क जाता आँखोंसे नीर ।
जवानीके हाथोंसे नित्य, यहीं पड़ती ढोलकपर ताल,
बजा कर यहीं बाँसुरी मधुर, नाचते फिरते हैं गोपाल ।
खँडहर हैं अतीतके यहीं, पुरातनताकी जीवित याद,
आजका भारत यह बरबाद, यहीं है किसी तरह आबाद ।
धूनियोंपर पुवालपर बैठ, यहींपर लगता है दरबार,
सरलता विहँस दिखाती खेल, सरसता विहँस पिलाती सार ।
जगतमें 'गाँधी' केवल एक, और वह 'ईसा' का अवतार,
यहाँ बसते हैं किन्तु अनेक, और यह सब मानव अवतार ।
यहींके खेतोंमें उत्पन्न, हुआ करता है मधुर सनेह,
धूलमें लोट लोट कर यहीं, हुआ करती सोनेकी देह ।
यहीं बसता था भारतवर्ष, यहीं रहता है हिन्दुस्तान,
प्रकृतिसे मिलते हैं चुपचाप, यहीं हिन्दु-मुस्लिम-क्रिस्तान,
धूल बिकती सोनेके मोल, यहीं आबाद, फूस, खर, पात,
यहीं दुनिया भोली-सी सरल, इसीको कहते हैं 'देहात' ।

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**सदन**—घर, House.
**धाम**—रहनेका स्थान, Abode.
**अमर जीवन**—न नाश होनेवाला जीवन, Eternal Life.
**सर्वेश**—सबका स्वामी, परमात्मा, God.
**अतीतके**—पुराने समयके, Of old ages.

# पथिक

**श्री मोहनलाल महतो 'वियोगी'**

गयाके रहनेवाले हैं। उम्र ४०–४२ सालकी होगी। लिखनेका शौक़ पुराना है। मगर कभी कभी बड़ी देर तक ग़ायब रहते हैं। हाँ, जब लोगोंके सामने आते हैं, तो ऐसी चीज़ लेकर आते हैं कि लोग देखें, और वाह वाह करें।

पथिक हूँ,—बस, पथ है घर मेरा।
बीत गए कितने युग चलते किया न अब तक डेरा।
नित्य नया बनकर मिलता है, वही पुराना साथी,
निश्चित सीमाके भीतर ही लगा रहा हूँ फेरा।
हैं गतिमान् सभी जड़-चेतन, थिर है कौन बता दे?
क्षण, दिन, मास, वर्ष, ऋतु, यौवन, जीवन, विभा अँधेर
दर्शन-पात्र एक ही जन है, क्षण क्षण रूप बदलता,
इस नाटकमें बस दो पट हैं, संध्या और सवेरा।
"इसके बाद और भी कुछ है" यही बताकर आशा,
लेने देती नहीं तनिक भी, मनको कहीं बसेरा।
ममते! देख दिवस ढलता है, घन घनघोर उठे हैं,
बतला दूर यहाँसे क्या है अभी नगर वह तेरा?
पथिक हूँ—बस, पथ है घर मेरा—

## कठिन शब्दोंके अर्थ

**पथ**—रास्ता, मार्ग, Path.
**सीमा**—हद, Limit.
**गतिमान**—चलनेवाला, Moving.
**थिर**—स्थिर, क़ायम, साकिन, Stationary, one, who d( not move.